शिक्षा का अधिकार

समग्र शिक्षा

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

सामाजिक विज्ञान

(सेतु पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तक)

स्तर-III

कक्षा 6-7

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद

वरूण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली–110024

सामाजिक विज्ञान

(सेतु पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्यपुस्तक)

स्तर-III

कक्षा-6 व 7

2022

शिक्षा का अधिकार

समग्र शिक्षा

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

डिफेन्स कॉलोनी, वरूण मार्ग, नई दिल्ली–110024

आई.एस.बी.एन. : 978-93-85943-34-8

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

मार्च 2022

15000 (प्रतियाँ)

प्रकाशितः राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

मुद्रितः चंदू प्रेस, नई दिल्ली–110092

Rajanish Singh
Director

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024
Tel.: +91-11-24331356, Fax : +91-11-24332426
E-mail : dir12scert@gmail.com

Date : 22/3/22

D.O. No. : F.10(12)/DS/DIR/SCERT/421

सन्देश

शिक्षा सभी बच्चों का मौलिक अधिकार है। अच्छी शिक्षा सदैव बच्चों के उज्जवल भविष्य का निर्माण करती है। यह बच्चों को ज्ञानात्मक सूचनाएं प्रदान करने के साथ बच्चे के मानसिक, शारीरिक और आत्मिक स्तर को सुधारने में भी मदद करती है। शिक्षा प्राप्ति में पुस्तकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

इसी को ध्यान में रखकर राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली ने विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के विद्यार्थियों के लिए 18 पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण किया है। इन पाठ्य-पुस्तकों का मुख्य उद्देश्य यह है कि 'बच्चे विद्यालय में एवं विद्यालय के बाहर सीखने के लिए प्रोत्साहित हों और उनमें आत्मविश्वास की भावना जागृत हो।' बच्चों की आवश्यकतानुसार इन पुस्तकों में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव किये गए है जिससे बच्चों को सरलता एवं रोचकता का अनुभव होगा।

आशा है यह पठन सामग्री बच्चों का मार्गदर्शन कर उनके समग्र विकास में मदद करेगी।

(रजनीश सिंह)

Dr. Nahar Singh
Joint Director (Academic)

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Tel. : +91-11-24336818, 24331355, Fax : +91-11-24332426
Tel.: +91-11-24331355, Fax : +91-11-24332426
E-mail : jdscertdelhi@gmail.com

Date : 22/03/2022

D.O. No. : F.1(2)JDS/Acad/Misc./SCERT/2021-22/2187

सन्देश

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अंतर्गत 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है। इसी कानून की धारा 4 के अनुसार विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों को विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में शिक्षा लेने का अवसर प्रदान कर उन्हें आयु अनुसार कक्षा के उपयुक्त बनाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० के अनुसार प्रत्येक 3 से 18 आयु वर्ग के बच्चे को गुणवत्तापूर्ण व समतामूलक शिक्षा प्रदान करने का पूर्ण दायित्व राज्य सरकार का है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति बच्चों में साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ-साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या-समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करने पर बल देने के साथ-साथ शिक्षार्थियों के सभी जीवन पक्षों और क्षमताओं के संतुलित विकास पर भी ज़ोर देती है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विशेष प्रशिक्षण केंद्र (एस. टी.सी.) के विद्यार्थियों हेतु जिस शिक्षण-अधिगम सामग्री को विकसित किया गया था, उनमें नई शिक्षा नीति के आधार पर छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सुधार किये गए हैं। इससे बच्चों का सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास होगा जिसके द्वारा बच्चों के ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर उन्हें परिष्कृत नागरिक बनाया जा सकेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निहित लक्ष्यों के संदर्भ में पाठ्य-पुस्तक को आदर्श बनाने के लिए सभी शिक्षकों का धन्यवाद।

मुझे पूर्ण आशा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निमित उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कक्षा स्तरीय, पाठ्य पुस्तकें विशेष प्रशिक्षण केंद्रों पर अध्ययनरत बच्चों के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होंगी।

सभी बच्चों के लिए मेरी शुभकामनायें।

(डॉ नाहर सिंह)

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यापक उद्देश्यों के संदर्भ में नैतिकता, तर्कसंगतता, सहानुभूति और संवेदनशीलता के साथ 21वीं सदी के लिए अनिवार्य कौशलों में महारत हासिल करना वास्तव में महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं सतत विकास एजेंडा 2030 सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता-युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढावा दिये जाने के व्यापक लक्ष्य के साथ आज हमारे सामने है। इस नीति के जरिये स्कूल स्तर पर शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार किये गए है। विद्यालय की वर्तमान रूपरेखा 5+3+3+4 के आधार पर तैयार की गयी है जिसमें 12 साल की स्कूली शिक्षा और 3 वर्ष की आंगनवाड़ी/प्री-स्कूलिंग को शामिल किया गया है। नीति में यह परिकल्पना की गई है कि विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों को जल्द से जल्द शैक्षिक क्षेत्र में वापस लाना और छात्रों को स्कूल छोड़ने से रोकने के लिए 2030 तक, पूर्वस्कूली शिक्षा से माध्यमिक स्तर तक 100% सकल नामांकन अनुपात प्राप्त करना सर्वोच्च प्राथमिकता होगी।

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 की धारा 4 के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों को विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में शिक्षा ग्रहण करने का प्रावधान है। इसका उद्देश्य उन्हें आयु-अनुसार कक्षा के अनुरूप शैक्षिक एवं बौद्धिक स्तर पर तैयार करना है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति की ओर कदम बढ़ाते हुए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली ने विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में ज्ञानार्जन करने वाले विद्यार्थियों के लिए विकसित पाठ्यपुस्तकों में आवश्यक सुधार किए हैं जिससे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, द्वारा विकसित पाठ्यक्रम पर आधारित इन पुस्तकों का निर्माण अति सरल भाषा का प्रयोग करते हुए किया गया है। इन पाठ्य पुस्तकों को पाठ्यक्रम के अनुसार मूल रूप में ही रखा गया है जिसमें चार स्तर हैं। प्राथमिक कक्षाओं के लिए स्तर एक एवं स्तर दो तथा उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए स्तर तीन एवं स्तर चार हैं। प्राथमिक स्तर पर चार विषय (हिंदी, अंग्रेजी, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन) की पुस्तकें एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर पाँच विषय (हिंदी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान) की पुस्तकों का निर्माण किया गया है।

मैं इन पुस्तकों के निर्माण एवं पुनरीक्षण में योगदान देने वाले समस्त शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि ये पाठ्यपुस्तकें विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। ये पुस्तकें केंद्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का समग्र विकास करने में सक्रिय भूमिका निभा सकेंगी।

पुस्तकों में सुधार हेतु आपके अनमोल सुझाव सदैव वांछनीय हैं।

डॉ बिंदु सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
विज्ञान विभाग
पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र संभाग
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

पुस्तक के बारे में.....

शिक्षा बच्चे का मौलिक अधिकार है । इस संदर्भ में देश में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 1 अप्रैल 2010 को लागू हुआ । हमारे देश में सभी बच्चों के लिए इस अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई है । इस अधिनियम के अनुसार 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चे को प्रारंभिक शिक्षा की समाप्ति तक उसके आस–पास के विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है । यह अधिनियम प्रत्येक राज्य में यह भी सुनिश्चित करता है कि कोई भी ऐसा बच्चा जो किसी कमजोर वर्ग या वंचित समूह से संबंध रखता हो, उसके साथ किसी भी तरह का भेदभाव न रखते हुए प्राथमिक शिक्षा पूरी करने का अवसर देगा । अतएवः समानता तथा भेदभाव रहित सिद्धांत पर आधारित यह अधिनियम प्रत्येक बच्चे को समान गुणवत्ता वाली शिक्षा का अधिकार प्रदान करता है ।

शिक्षा के अधिकार अधिनियम (भाग–4) के अनुसार यह प्रावधान है कि जो बच्चे कभी स्कूल नहीं गए या जो अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड चुके हैं, उन्हें स्कूल में उनकी उम्र के अनुसार प्रवेश दिया जाएगा । इसके अन्तर्गत उन बच्चों को अवसर दिया जाता है जो पढ़े–लिखे न होने के बावजूद भी जीवन के अनुभवों से भरपूर होते हैं, जिसे विद्यालयों द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए । इस अधिनियम में यह भी प्रावधान है कि विद्यालय बच्चों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन करेगा ।

इस संदर्भ में दिल्ली निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल अधिकार नियम 2011 के भाग II में कहा गया है कि सरकार उपरोक्त कार्य को पूरा करने के लिए एक शैक्षणिक प्राधिकरण अधिसूचित करेगी। शैक्षणिक प्राधिकरण पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया का निर्धारण करेगा । सुसंगत व आयु संगत पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करेगा। दिल्ली में राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् को शैक्षिक प्राधिकरण घोषित किया गया है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.) द्वारा प्रस्तुत यह पाठ्य सामग्री उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तैयार की गई है । यह पाठ्य–सामग्री सामाजिक विज्ञान के उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए तैयार की गई जो अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ चुके हैं या उन्होंने इस स्तर पर विद्यालय में प्रवेश ही नहीं लिया । इस पाठ्य सामग्री को दो स्तरों में बाँटा गया है, जिसमें स्तर एक में कक्षा 6 व 7 और स्तर दो में कक्षा 8 के सामाजिक विज्ञान के उच्च प्राथमिक स्तर की न्यूनतम विषय सामग्री को सम्मिलित किया गया है ताकि वे बच्चे भी शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ सकें ।

प्रस्तुत पाठ्यसामग्री सेतु पाठ्यक्रम पर आधारित है । यह रचनात्मक ज्ञान पर बल देती है। इसमें कुल 30 अध्याय है, जिसे बच्चों को अधिकतम 2 वर्षों में पूरा करना है । इसके अन्तर्गत स्तर 3 में 16 और स्तर 4 में 14 अध्यायों को शामिल किया गया है । इसकी भाषा अत्यंत सरल है । पाठ्यसामग्री को रोचक और आंनददायी बनाने के लिए मानचित्र, चित्र व आरेख एवं कार्यपत्रक यथा स्थान उचित रूप से दिए गए हैं । इसके उपयोग से विषयवस्तु को आसानी से समझा जा सकता है । साथ में इन पर आधारित पाठ के बीच में कुछ क्रियाकलाप सुझाए गए हैं, इससे बच्चे का अवधारणात्मक एवं रचनात्मक विकास होगा । पाठ के बीच में पाठगत प्रश्न भी दिए गए है, जिससे बच्चे स्वयं पाठ को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकें और विषय के प्रति रूचि विकसित कर सकेगें । इन क्रियाकलापों एवं प्रश्नों के माध्यम से सामूहिक रूप से सीखने का वातावरण तैयार होगा। इस पाठ्यसामग्री में यह कोशिश की गई है कि सीखने और सिखाने की प्रक्रिया रोचक एवं आसान हो। सोचने, प्रश्न पूछने, मानचित्र कौशल विकसित करने, क्रियाकलाप संपादित करने के जरिए बच्चे की सीखने की क्षमता बढ़ेगी। हम आशा करते हैं कि उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की प्रस्तुत पाठ्य–सामग्री को बच्चे पढ़कर लाभान्वित होंगे और अपने लक्ष्य को पुनः प्राप्त कर सकेंगे। यह पाठ्य सामग्री संशोधित रूप में पुनः आपके सामने प्रस्तुत है।

अंत में प्रस्तुत पाठ्य–सामग्री के निर्माण के समय जिन संस्थाओं पुस्तकों, संदर्भ ग्रंथों, इन्टरनेट, सहायक सामग्री, एवं विषय से जुड़े विद्वानों एवं लेखकों के विचार, चित्रों एवं मानचित्रों को सम्मिलित किया गया है, उन सभी का आभार प्रकट करता हूँ ।

डॉ राजकुमार श्रीवास्तव
नोडल अधिकारी

पुस्तक विकास समिति

संरक्षक

श्री एच राजेश प्रसाद, प्रधान सचिव (शिक्षा) दिल्ली
श्री रजनीश सिंह, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

शैक्षिक सलाहकार

डॉ. नाहर सिंह, संयुक्त निदेशक (शैक्षिक), एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

पुस्तक निर्माण समिति

नोडल अधिकारी

डॉ. सीमा यादव, वरिष्ठ प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

विषय	समन्वयक
भूगोल	डॉ. राजकुमार श्रीवास्तव, प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
इतिहास	डॉ. राजेन्द्र कुमार, प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
राजनीति शास्त्र	डॉ. नीलम, व. प्रवक्ता, डाइट, राजेन्द्र नगर, दिल्ली
अर्थ शास्त्र	डॉ. सतनाम सिंह, व. प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन, नई दिल्ली

लेखक समूह

इतिहास

एन. पी. सिंह, प्रधानाचार्य (से.नि.), शिक्षा निदेशालय, दिल्ली
रामदेव, प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय विद्यालय, शंकराचार्य मार्ग, दिल्ली
विनीता रिरवी, प्रवक्ता, ए. एस. एन. स्कूल, मयूर विहार, दिल्ली
कन्हैया लाल झा, प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय विद्यालय, कोंडली
राहुल मिश्रा, प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
धीरज राय, प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

भूगोल

डॉ. राजकुमार श्रीवास्तव, प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन
अबरार अहमद, प्रवक्ता, राजकीय बाल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, शास्त्री पार्क, दिल्ली
नरेश चन्द शर्मा, प्रवक्ता, सर्वोदय बाल विद्यालय, पूर्वी विनोद नगर, दिल्ली
राजपाल सिंह, प्रवक्ता, राजकीय बाल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
हरीश कुमार, प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, पश्चिमी विनोद नगर, दिल्ली
दीपा कपूर, टी.जी.टी., माडर्न स्कूल, बाराखम्बा रोड़, नई दिल्ली

राजनीति शास्त्र

रमाशंकर सिंह, उपप्रधानाचार्य, राजकीय बाल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, पुरानी सीमापुरी, दिल्ली
श्याम किशोर गुप्ता, प्रवक्ता, राजकीय प्रतिभा स्कूल, गाँधी नगर, दिल्ली
डॉ. भगवती प्रसाद ध्यानी, प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, मयूर विहार 2, दिल्ली
तपराज दत्त, प्रवक्ता, राजकीय बाल सीनियर सेकेन्डरी स्कूल, कोंडली, दिल्ली

अर्थशास्त्र

वीरेन्द्र कुमार चौधरी, प्रवक्ता, राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, कान्ती नगर, दिल्ली
प्रकाश वीर, टी.जी.टी., राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, शाहदरा, दिल्ली
डॉ. जगवीर सिंह, वरिष्ठ प्रवक्ता, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
डॉ. देवेन्द्र, प्रधानाचार्य, राजकीय सह–शिक्षा सीनियर सैकेन्डरी स्कूल, मयूर विहार फेज.1

विषय सलाहकार

डॉ. रामाश्रय प्रसाद, एशोसिएट प्रोफेसर (भूगोल), डॉ. भीम राव अंबेडकर कॉलेज,
(दिल्ली विश्वविद्यालय) यमुना विहार, दिल्ली
श्री एन. पी. सिंह, प्रधानाचार्य (से. नि.), शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

पुस्तक पुनरीक्षण समिति 2021-22

पुनरीक्षण नोडल अधिकारी

डॉ. बिंदु सक्सेना, असिस्टेंट प्रोफेसर, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

विषय समन्वयक

डॉ. राजकुमार श्रीवास्तव, असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

समीक्षक समूह

डॉ. सतनाम सिंह,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
डॉ. सुनील कुमार,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, कड़कड़डूमा, दिल्ली
डॉ. सुनीता रानी,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, मोतीबाग, दिल्ली
डॉ. धर्मेन्द्र डागर,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, घूमनहेड़ा, दिल्ली
डॉ. नीलम,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, मोतीबाग, दिल्ली
प्रभा उन्याल,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, राजेन्द्र नगर, दिल्ली
जोगिन्द्र कुमार,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, मोतीबाग, नई दिल्ली
डॉ. राहुल मिश्रा,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
नसरूद्दीन,	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, कड़कड़डूमा, दिल्ली
डॉ. राजकुमार श्रीवास्तव	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

प्रकाशन अधिकारी

डॉ. मुकेश यादव, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

प्रकाशन समूह

नवीन कुमार, राधा, जय भगवान, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

विषय–सूची

क्रमांक	पाठ	पृष्ठ संख्या

कक्षा–6 भाग–1

1	मानवः भोजन संग्रह से उत्पादन की ओर	1
2	प्रारम्भिक नगर	7
3	प्राचीन ग्रंथ एवं गणराज्य	18
4	सौर परिवार और हमारी पृथ्वी	23
5	ग्लोब एवं मानचित्र	32
6	पृथ्वी की गतियाँ	39
7	विविधता की समझ	46
8	लोकतांत्रिक सरकार	52

कक्षा–7 भाग–2

9	नये विचार एवं सम्राट अशोक	59
10	विकास के आर्थिक पहलू	73
11	नये प्रमुख साम्राज्य	80
12	हमारा देश भारत	87
13	भारत की जलवायु	98
14	वनस्पति एवं वन्य जीव	106
15	स्थानीय शासन एवं प्रशासन	116
16	आजीविकाएँ	129

कक्षा–6

भाग–1

1 मानवः भोजन संग्रह से उत्पादन की ओर

प्रस्तावना

यदि आपसे यह पूछा जाए कि हम अखबार क्यों पढ़ते हैं? तब हम कहेंगे कि क्या कुछ नया घटित हुआ है, को जानने के लिए हम अखबार पढ़ते हैं। अखबार हमें आज के बारे में ज्ञान देता है, पर जब हमें यह जानना हो कि पिछले सप्ताह क्या हुआ? पिछले वर्ष, या दस वर्ष पहले, सौ वर्ष पहले, हजार वर्ष पहले या लाख वर्ष पहले तो हम क्या करेंगे, निश्चय ही हमें पुस्तकों या कहीं और से यह जानकारी प्राप्त होगी। हम कैसे जानते हैं अपने अतीत के बारे में? इस पाठ से हमें अपने अतीत को जानने में मदद मिलेगी।

अधिगम उद्देश्य

- अतीत के बारे में जानकारियाँ प्राप्त करने के माध्यमों को जानना।
- तिथियों का निर्धारण करने का प्रयास करना।
- आरम्भिक मानव के रहन सहन के तरीके–भोजन संग्राहक के रूप में ज्ञान अर्जित करना।
- अनुभव से मानव ने भोजन उत्पादन सीखा अर्थात् खेती एवं पशुपालन की शुरूआत के अनुभव को समझना।
- खेतीबाड़ी के शुरू होने से स्थाई जीवन का प्रारम्भ तथा सामूहिक रहन–सहन में हुए परिवर्तनों के महत्व को समझना।

अतीत को कैसे जानें

वैसे तो अतीत को जानने के कई तरीके हैं। एक है पुस्तकों द्वारा जो कि प्राचीन समय में लिखी गईं। इन्हें दस्तावेज कहते हैं (दस्त–हाथ) हाथ द्वारा लिखी गई।

''सबसे पुराना लेखन''

इस चित्र को देखिए। अगर आप इसके ऊपरी भाग को देखेंगे तो आपको कुछ चिह्न दिखाई देंगे। ये लिपि के प्राचीनतम् उदाहरण हैं जिनका प्रयोग आज से लगभग 5000 साल पहले किया गया था।

सबसे प्राचीन लेखन

हड़प्पा से मिलीं मोहरों की लिखावट, लिपि का प्राचीनतम उदाहरण हैं, जो लगभग 5000 वर्ष पुरानी है। इस तरह की मोहरें पत्थरों से बनाई जाती थी। गीली मिट्टी पर मोहर को दबाया जाता था, जिससे उस पर मोहर का चिह्न उभर आता था।

प्राचीन भारतीय समाज की जानकारी के स्रोत वेद, उपनिषद्, स्मृति, रामायण, महाभारत, संगम साहित्य, त्रिपिट्क आदि हैं।

पुरातत्व विज्ञान द्वारा हम अतीत का अध्ययन करते हैं। प्राचीन समय में मानव द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली वस्तुएँ जैसे बर्तन, हार–श्रृंगार के आभूषण, बच्चों के खिलौने, घर जिसमें रहते थे तथा सिक्के और औज़ार जिनसे काम करते थे। समय बीतने के साथ यह वस्तुएँ मिट्टी के अंदर दब गई। इतिहासकार जासूस की तरह इन वस्तुओं की जासूसी करके अतीत की जानकारी एकत्रित करते हैं। सम्राट अशोक द्वारा पत्थरों की सतह पर खुदवाए अभिलेख, निर्मित स्तंभ तथा स्मारक जो आज भी मौजूद हैं। यह सभी सम्राट अशोक के प्रशासन, युद्ध और लोक कल्याण हेतु उठाये कदमों की बहुमूल्य जानकारी देते हैं।

बच्चों के खिलौने

1.1 पाठगत प्रश्न

1. दस्तावेज तथा अभिलेख में अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. पुरातत्वविद् किन वस्तुओं का अध्ययन करते हैं ? उनकी सूची बनाइए।
3. मिलान करें–

(क)	(ख)
स्मृति	सम्राट अशोक
मोहरों पर लिपि का नमूना	दस्तावेज
स्मारक	प्राचीन भारतीय समाज की जानकारी
हाथ द्वारा लिखी पुस्तकें	हड़प्पा

क्रियाकलाप –

अपने माता–पिता की सहायता से पिछले कुछ सालों के सिक्के इकट्ठा कीजिए।

तिथियों का निर्धारण

यदि कोई आप से आपका जन्मदिन पूछे तो आप के उत्तर में दिन, महीना और वर्ष शामिल होंगे– उदाहरण के लिए 07 जुलाई सन् 2010। वर्ष की गिनती गिन ली जाती है। ईसा मसीह के जन्म से 2010 वर्ष बाद। ईसा मसीह के जन्म से पहले की तिथि को उल्टा गिना जाता है तथा उसके आगे ई.पू. (ईसा से पूर्व) लगाया जाता है।

भोजन संग्राहक

आज से 20,00,000 से 10,000 वर्ष पूर्व लोग छोटे छोटे समूहों में रहते थे। इन समूहों में 20 से 30 सदस्य होते थे। अपना भोजन ये लोग पौधों से प्राप्त करते थे– जैसे पत्ते, कंद, फल–फूल, बीज इत्यादि। कौनसी वस्तु खाने योग्य है, इसमें बहुत सावधानी रखनी पड़ती थी। ये लोग पशुओं का शिकार भी करते, पक्षियों को पकड़ते, अंडे इकट्ठे करते और मछली पकड़ते थे। इसलिए इन लोगों को भोजन एकत्र करने वाला यानी भोजन संग्राहक कहा जाता है।

ये लोग घूमते क्यों रहते थे?

एक ही स्थान पर लम्बे समय तक रहने के कारण भोजन की समस्या पैदा हो जाती थी इसलिए ये लोग एक स्थान पर लंबे समय तक नहीं रहते थे और भोजन, पानी, घास और शिकार की तलाश में घूमते रहते थे।

निवास स्थान का चुनाव

आदि मानव अपने निवास स्थान को बदलते रहते थे। अक्सर प्राकृतिक आश्रयों– गुफा आदि में रहते थे। जो जल स्रोतों, नदी, झील इत्यादि के नजदीक होते थे।

भीमबेट्का में स्थित गुफाएँ

पत्थर के औज़ार इनके लिए महत्वपूर्ण थे। ऐसे स्थान का चुनाव करना लाभप्रद रहता जहाँ अच्छी किस्म के पत्थर उपलब्ध हों। निवास स्थल में लोग रहते थे। औद्योगिक स्थल पर औजारों को बनाया जाता था। हालाँकि इन्हें उद्योग कहा गया है लेकिन ये आधुनिक उद्योगों से भिन्न थे। यहाँ मशीनों का प्रयोग नहीं किया जाता था। **आज हम कैसे जानते हैं कि इनकी फैक्ट्रियाँ कहाँ थी?** आमतौर पर हम जानते हैं कि जब पत्थरों से औजार बनाए जाते थे तो कुछ पत्थर के हिस्से बेकार हो जाते थे। इन स्थलों पर बचे हुए इन टुकड़ों से यह अनुमान लगाया गया।

औजार बनाने की तकनीक

पाषाण युग औजार बनाने की प्रक्रिया

1.2 पाठगत प्रश्न

उचित विकल्प का चयन करें–

1. भोजन संग्राहक घूमते क्यों रहते थे?
   (क) मनोरंजन के लिए
   (ख) पानी के स्रोत ढूंढने के लिए
   (ग) पत्थर के औज़ार बनाने के लिए
   (घ) एक ही स्थान की घास/भोजन समाप्त न हो जाए

2. भोजन संग्राहक पत्थर के औज़ार प्राप्त करते थे?
   (क) मशीनों द्वारा बनवा कर
   (ख) नदियों के किनारों से ढूंढकर
   (ग) गुफाओं के पास हाथ से बना कर
   (घ) दुकान से खरीद कर

3. हम प्राचीन मानव की फैक्ट्रियों के बारे में कैसे जानते हैं?
   (क फैक्ट्रियों से निकलते धुएँ को देखकर
   (ख) फैक्ट्रियों से आते जाते वाहनों को देखकर
   (ग) फैक्ट्रियों में काम करते मजदूरों को देखकर
   (घ) बेकार पड़े पत्थरों के टुकड़ों की जासूसी करके

भोजन उत्पादन

भोजन उत्पादन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य पेड़–पौधों और जानवरों की ऐसी नई किस्में विकसित करते हैं जो जंगली किस्मों से अलग होती है। गेहूँ और जौ की खेती तथा भेड़ों और बकरियों को पालतू बनाने का सबसे पहला प्रमाण पश्चिम एशिया के देश– तुर्की, सीरिया, इराक, ईरान आदि से मिलता है। इस प्रक्रिया की शुरूआत आज से 10 से 8 हजार वर्ष पहले हुई।

भोजन संग्राहक से भोजन उत्पादन की यात्रा मानव ने कैसे तय की? लगता है कि जंगली पौधों के बीज इक्ट्ठा करने के लिए मानव घूमता रहा होगा। और गुफा के पास उन बीजों को साफ किया होगा, कुछ बीज बिखर गये होंगे, वह समय के साथ उग गए होंगे। इन्हीं खाने योग्य बीजों को पुनः उगाने के लिए मानव उत्साहित हुआ होगा, जिससे कृषि प्रारम्भ हुई।

इसी तरह पशुओं को पालतू बनाने के लिए नए तरीके इस्तेमाल करने लगे, जैसे किसी स्थान पर खाने की वस्तु रखकर उन्हें आकर्षित करना और फिर पकड़कर उनकी देखभाल करना। सभी पशुओं को पालतू नहीं बनाया जा सकता था। उन पशुओं को बेहतर माना जाता था जो मूल रूप से हिंसक न हों और झुंड में रहते हों। मांसाहारी न होकर शाकाहारी हों और पहले से ही मानव के भोजन का हिस्सा रहे हों। कुत्ता सबसे पहला पशु है जिसे पालतू बनाया गया, जो कि शिकार में सहायता करता था। भेड़–बकरी, गाय, मवेशी और सूअर भी आरम्भ में पालतू बनाए गए पशुओं में शामिल हैं।

1.3 पाठगत प्रश्न

उचित विकल्प का चयन कीजिए–

1. पशुओं को पालतू बनाने के लिए प्रथम प्रयास मिलते हैं–
   (क) अमेरिका में (ख) इंगलैंड में
   (ग) ईरान में (घ) भारत में
2. प्रारंभिक खेती के प्रमाण मिलते हैं–
   (क) नदियों के किनारे (ख) कुएँ के किनारे
   (ग) तालाब के किनारे (घ) गुफाओं के बाहर
3. चर्चा कीजिए कि सबसे पहले कुत्तों को ही क्यों पालतू बनाया गया?
   जानवरों से प्राप्त वस्तुओं की सूची बनाइए।

दूध		
माँस		
ऊन		

स्थायी जीवन की ओर

पुरातत्वविदों ने कुछ स्थलों पर झोपड़ी या घरों के अंश प्राप्त किए हैं। आज के कश्मीर में लोगों ने जमीन खोदकर तहखाने जैसे घर बनाए जिसमें नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ भी बनाई गई। ठंड से बचने के लिए यह घर बहुत उपयुक्त रहे होंगे। घरों के अंदर व बाहर पुरातत्वविदों ने चूल्हा भी पहचाना है जिससे यह ज्ञात होता है कि वह खाना भी पकाया करते थे।

रीति रिवाज़ एवं प्रथाएँ

पुरातत्व से हमें सीधे तौर पर इनके बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती है। विद्वानों ने उन किसानों के विषय में अध्ययन किया है जो हल या सिंचाई के बिना खेती करते हैं। उन्होंने पशुपालकों के जीवन का भी अध्ययन किया है। उनके विश्लेषण से यह पता चलता है कि साधारणतः परिवारों के दो या तीन पीढ़ियाँ एक साथ छोटी बस्तियों या गाँवों में रहती थीं। ज्यादातर परिवारों का आपस में संबंध होता था और ऐसे ही परिवारों के समूह मिलकर एक कबीले का निर्माण करते थे।

भूमि पर किसी का व्यक्तिगत हक नहीं होता बल्कि भूमि, जंगल, चारागाह और जलाशय पूरे कबीले की संपत्ति माने जाते थे। सभी लोग इनका उपयोग आपस में मिलबांट कर करते थे।

आमतौर पर महिलाएं खेती से संबंधित अधिकांश कार्य करती थी, जैसे खेतों की बुआई के लिए तैयार करना, बीजों को बोना, फसलों की देखभाल करना, फसल की कटाई करना। बच्चे भी पौधों की देखभाल करते थे। वे उन पशु–पक्षियों को भगाने का कार्य करते थे जो पौधों को खाकर फसल को नुकसान पहुँचाते थे।

पुरूष आमतौर पर पशुओं के समूह को चराने के लिए चारागाहों में ले जाते थे। पुरूष व स्त्री मिलकर बर्तन, टोकरियाँ, औज़ारों और झोपड़ियों का निर्माण करते थे। नाचने, गाने और झोपड़ियों को सजाने के कार्यक्रमों में हिस्सा लेते थे। लगता है इन रीति रिवाजों और प्रथाओं का प्रचलन प्राचीन समय में भी रहा होगा।

अभ्यास

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
   (क) तहखाने जैसे घर भारत में ..... के स्थान पर मिले हैं।
   (ख) कबीले का निर्माण ..... के समूह मिल कर करते हैं।
   (ग) आमतौर ..... खेती से संबंधित कार्य करते हैं तथा ..... आमतौर पर पशुओं को चराने का कार्य करते हैं।
2. भारत के मानचित्र में भीमबेट्का किस राज्य में स्थित है, उसे दर्शाइए।
3. भोजन संग्रहक क्यों यात्राएँ करते थे? वह यात्राएँ आज की यात्राओं से किस प्रकार भिन्न थी?
4. सब्जी काटने के लिए आप किस औज़ार को प्रयोग में लाते हैं? सब्जी काटने के लिए प्राचीन मानव क्या प्रयोग में लाते थे?
5. प्राचीन इतिहास के विभिन्न स्रोतों के नाम लिखिए।

2 प्रारंभिक नगर

प्रस्तावना

आज से करीब 5,000 साल पहले का भारत सिंधु घाटी की सभ्यता के नाम से मशहूर है। सिंधु और उसकी सहायक नदियों के आस–पास इस सभ्यता का उदय हुआ। इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है। यह विश्व की पुरानी सभ्यताओं में से एक थी। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कालीबंगा, लोथल, धौलावीरा, राखीगढ़ी इसके प्रमुख केन्द्र थे। यह सबसे ज्यादा विकसित सभ्यता थी। लगभग 150 साल पहले सिंधु नदी क्षेत्र (वर्तमान पाकिस्तान) में रेलवे लाइन बनाने वालों को हड़प्पा पुरास्थल मिला, पर इसके बारे में न जानने के कारण लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। 1924 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (ए.एस.आई.) के डायरेक्टर जॉन मार्शल ने पूरे विश्व के समक्ष सिंधु घाटी में नई सभ्यता की खोज को प्रस्तुत किया। यहाँ से मिली पुरावस्तुएँ जैसे उनके आवासों, बर्तनों, आभूषणों, औज़ारों तथा मुहरों से उनकी संस्कृति और रहन–सहन की जानकारी मिलती है। इस संस्कृति से पुरानी संस्कृतियों को आरंभिक हड़प्पा और इसे विकसित हड़प्पा सभ्यता के नाम से जाना जाता है। आज इस सभ्यता के अवशेष भारत तथा पाकिस्तान में मिलते हैं। इस सभ्यता में कांस्य धातु का प्रयोग किया जाता था जिसकी वज़ह से इसे कांस्य सभ्यता भी कहा जाता है।

अधिगम उद्देश्य

- हड़प्पा संस्कृति के केन्द्रों से संबंधित साक्ष्यों को पहचान पाएँगे।
- हड़प्पा संस्कृति की मुख्य विशेषताओं को समझ पाएँगे।
- हड़प्पा कालीन नगर, वहाँ के स्थायी जीवन, भोजन, कृषि और उत्पादन की व्याख्या कर पाएँगे।
- हड़प्पा संस्कृति के पतन के कारणों को जान पाएँगे।
- हड़प्पा संस्कृति और वर्तमान शहरी जीवन की तुलना कर पाएँगे।

हड़प्पा संस्कृति की कहानी

ब्रिटिश काल में हुई खुदाइयों से मिली चीजों के आधार पर अथवा रेलवे इंजीनियरों को मिले पुरास्थलों, जिनको खंडहर समझा गया। यहाँ से मिली वस्तुओं और साक्ष्यों को जोड़ कर हड़प्पा सभ्यता की बात कही गई। इतिहासकारों का अनुमान है कि यह केन्द्र जैसे मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, लोथल, धौलावीरा और हड़प्पा बहुत विकसित नगर थे। यह नगर सिंधु और उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र में थे।

"परिभाषिक शब्द
हड़प्पा – सिंधुघाटी का एक केन्द्र
संस्कृति – रहन सहन का तरीका"

प्राचीनकाल में पूरे विश्व में कोई भी सभ्यता हड़प्पा संस्कृति से व्यापक नहीं थी। अब तक करीब 1000 स्थलों का पता चल चुका है। इनमें से दो नगर बहुत महत्वपूर्ण है– पंजाब का हड़प्पा और सिंधु का मोहनजोदड़ो। मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ– मृतकों का टीला। यह दोनों ही आज के पाकिस्तान में है। यहाँ से मिले कई साक्ष्य आज भी हमारी जानकारी से दूर है। विकसित हड़प्पा क्षेत्र से मिले साक्ष्य हमें उनके कृषि जीवन, भोजन और उत्पादन के बारे में भी बताते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न काल

समय ईसा पूर्व	काल
3300 – 2600	प्रारंभिक हड़प्पा
2600 – 1900	विकसित हड़प्पा
1900 – 1300	उत्तरवर्ती हड़प्पा / अनुवर्ती हड़प्पा

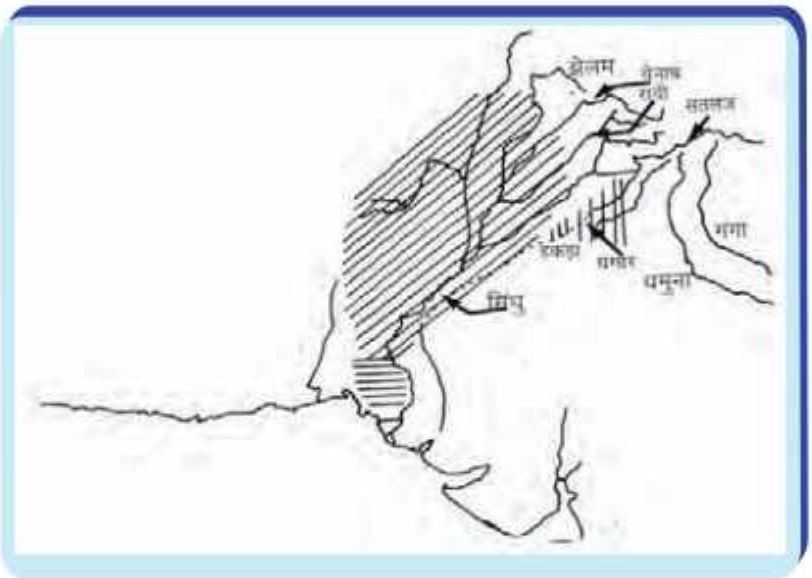

विकसित हड़प्पा सभ्यता के पहले की पुरातात्त्विक संस्कृतियों का क्षेत्र

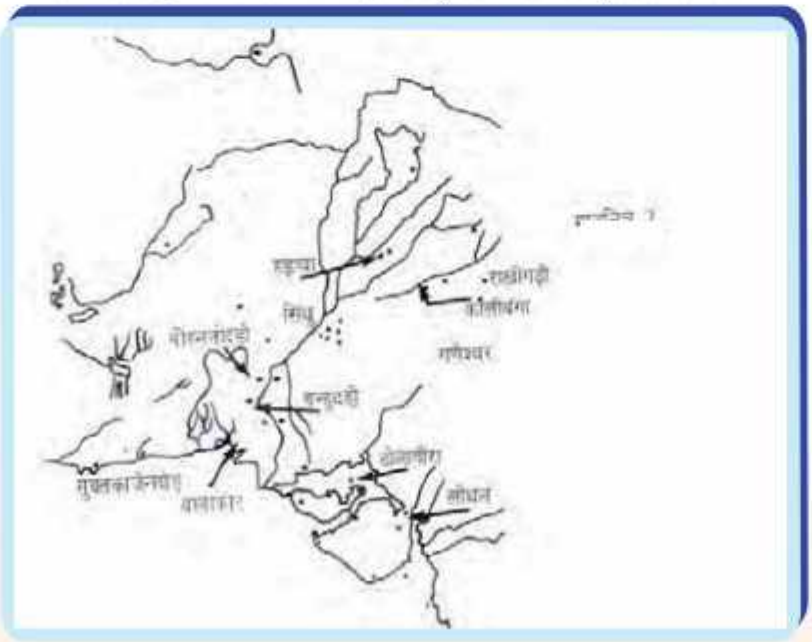

विकसित हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख क्षेत्र

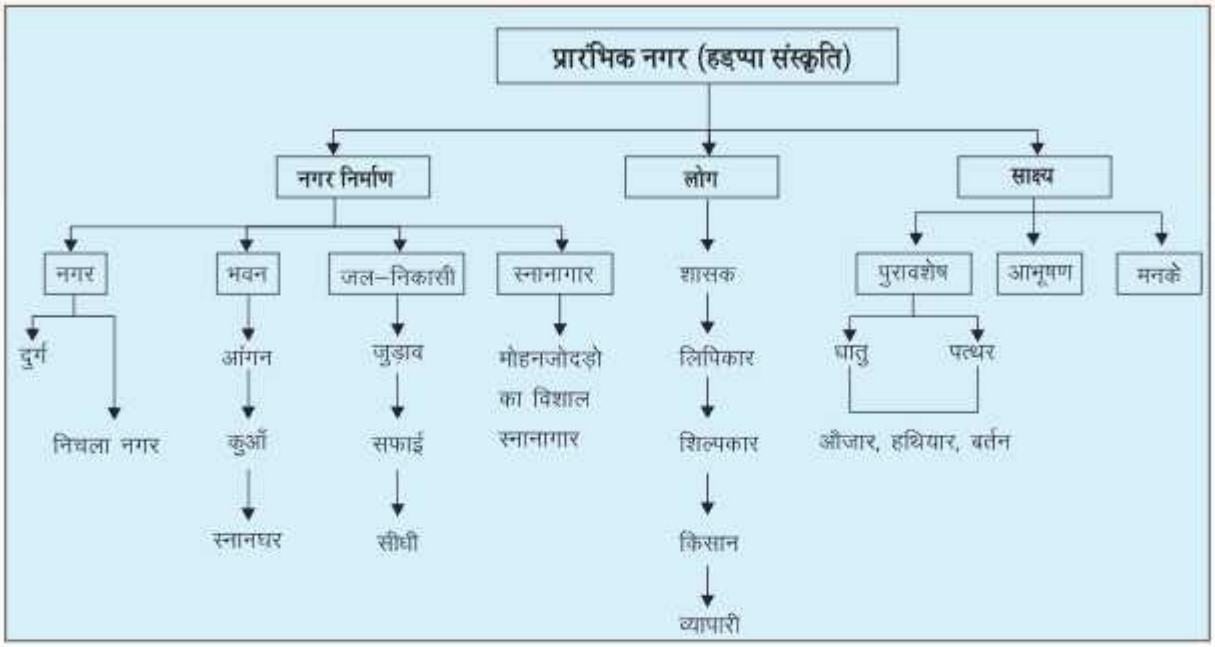

हड़प्पा कालीन मुख्य विशेषताएं–

(क) लोथल भारत में हड़प्पा कालीन मुख्य बन्दरगाह था।

(ख) कृषि हड़प्पा सभ्यता की अर्थव्यवस्था का मूलाधार थी।

(ग) हड़प्पा सभ्यता की मुहरों पर सबसे अधिक एक श्रृंगी पशु का अंकन मिलता है।

(घ) जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इसे सिन्धु सभ्यता का नाम दिया।

हड़प्पा कालीन नगर

इस सभ्यता की सबसे अनोखी बात यहाँ की विकसित नगर योजना थी। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो दोनों ही नगर नियोजित ढ़ंग से बनाए गए थे। नगरों को दो हिस्सो में बांटा गया था – एक पश्चिमी भाग था जो ऊँचाई पर बना था और पूर्वी भाग निचले इलाके में था जो पश्चिमी भाग से काफी बड़ा था। ऊँचाई वाले भाग को 'नगर–दुर्ग' कहते थे और निचले हिस्से को 'निचला नगर' कहा जाता था।

नगर दुर्ग	→ ऊँचाई वाला इलाका	→	विशेषताएँ →	महान् स्नानागार – मोहनजोदड़ो
			→	भंडार–गृह – हड़प्पा, मोहनजोदड़ो
			→	अग्निकुंड – काली बंगा, लोथल
			→	ऊँचे चबूतरे
निचला नगर	→ नीचे वाला इलाका	→	विशेषताएँ →	दीवार से घिरा हुआ
			→	पहले नियोजन फिर कार्यान्वयन

मोहनजोदड़ो में खास तालाब बनाया गया, जो एक आयताकार जलाशय है। इसे महान् स्नानागार कहा गया है। इस तालाब को बनाने में ईंट और प्लास्टर का इस्तेमाल किया गया था। इस तालाब में दो तरफ से उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गई थी। इसके चारों ओर कमरे बनाए गए थे। इसमें भरने के लिए पानी कुएँ से निकाला जाता था। उपयोग के बाद इसे खाली कर दिया जाता था। शायद यहाँ खास अवसरों पर स्नान किया जाता था। कालीबंगा और लोथल जैसे अन्य नगरों में अग्निकुंड मिले हैं जहाँ शायद यज्ञ किए जाते थे। हड़प्पा, मोहनजोदाड़ो और लोथल जैसे नगरों में बड़े–बड़े अनाज भंडार गृह मिले हैं।

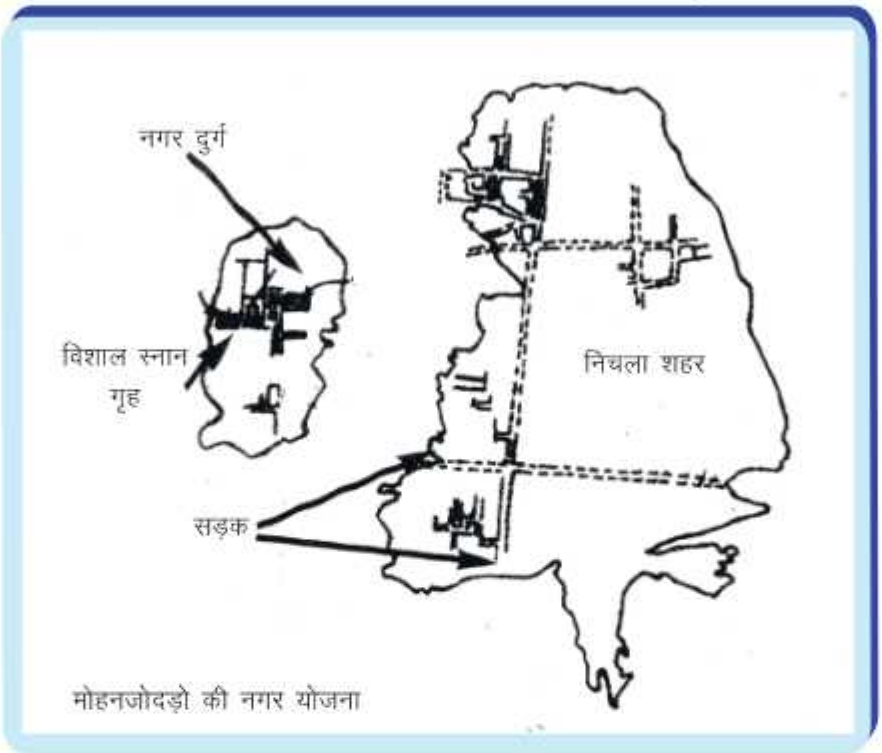

मोहनजोदड़ो की नगर योजना

मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार

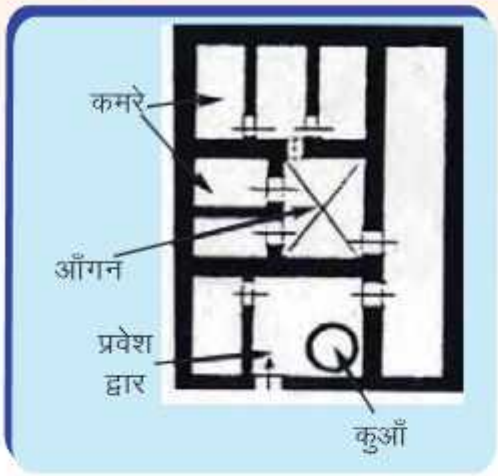

हड़प्पा काल के भवन की संरचना

भवन

भवन

1. इन नगर के घर एक या दो मंजिले होते थे।
2. घर के आँगन के चारों ओर कमरे बनाए जाते थे।
3. अधिकांश घरों में एक अलग स्नानघर होता था।
4. हर घर में खाना बनाने की जगह होती थी।
5. नीचे वाले तल की दीवारों में खिड़कियाँ नहीं थी।
6. नीचे से ऊपर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गई थी।

नालियाँ व सड़कें

हड़प्पा नगरों की जल निकास प्रणाली बहुत अनोखी थी। जैसे–

1. सड़कों और गलियों को ग्रिड प्रणाली में बनाया गया था।
2. नालियों के साथ गलियों को बनाया गया था।
3. कई नगरों में ढके हुए नाले थे।
4. नाली में हल्की ढ़लान होती थी ताकि पानी आसानी से बह सके।
5. घरों की नालियों को सड़कों की नालियों से जोड़ दिया जाता था।
6. नालियों की सफाई की जाती थी।

सड़कें

"आज के घरों की नाली प्रणाली व हड़प्पा की नाली प्रणाली में तुम्हें क्या अंतर देखने को मिलता है?"

अनाज गृह

नालियाँ

स्थायी जीवन

हड़प्पा के नगरों में बड़ी हलचल रहा करती होगी।

1. **शासक** – हड़प्पा से मिली पत्थर की मूर्ति को पुरोहित या राजा कहा गया है। शायद यह नगर की खास इमारतें बनवाते होंगे। यह लोगों को भेजकर दूर इलाकों से धातु, बहुमूल्य पत्थर और अन्य चीजें मंगवाते थे।
2. **लिपिक** – इन नगरों में लिपिक भी होते थे, जो मुहरों तथा अन्य चीजों पर भी लिखते थे।
3. **शिल्पकार** – इन नगरों में स्त्री–पुरुष अन्य जगहों से सोना–चाँदी, उपयोगी वस्तुएँ, मिट्टी के खिलौने, मनकें, धातु ले कर आते और उसमें शिल्पकारी करते थे।

पुरोहित राजा

आभूषण

खिलौने

हड़प्पा की मुहरें एवं लिपि

1. **रहस्यमयी लिपि** – हड़प्पा के लेखन को इतिहासकारों ने रहस्यमयी लिपि कहा गया है क्योंकि इसे आज तक पढ़ा नहीं जा सका है।

हड़प्पा लिपि

2. **मुहरें** – मुहरों पर चित्र के साथ–साथ लिखा भी होता था। इन मुहरों को व्यापार के साथ धार्मिक कामों में भी इस्तेमाल किया जाता था।

मुहरें

हड़प्पा के नगरों से प्राप्त हुई चीजें

पुरातत्वविदों को हड़प्पा के नगरों से निम्नलिखित चीजें मिली है–

1. ताँबें और काँसे के औजार
2. सोने, चाँदी, पत्थर के गहने व बर्तन
3. मनके, बाट और फलक
4. पत्थर की मुहरें
5. काले रंग से डिजाइन किए हुए लाल मिट्टी के बर्तन
6. चाँदी के फूलदान
7. पक्की मिट्टी और फ़ेयॉन्स से बनी हुई तकलियाँ
8. मिट्टी की मूर्तियाँ व खिलौने

इनमें से बहुत सारी वस्तुओं का निर्माण विशेषज्ञों ने किया था और उसके लिए उन्होंने वह काम सीखा था जैसे पत्थर को तराशना, मनके चमकाना आदि।

गहने

बर्तन

2.1 पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थान भरो–
   (क) हड़प्पा के ऊँचाई वाले इलाके को ..... कहते थे।
   (ख) महान् स्नानागार ..... में था।
   (ग) हड़प्पा की जल निकासी प्रणाली ..... थी।
2. आज के भवनों और हड़प्पा के भवनों में क्या अंतर दिखाई देता है? चर्चा कीजिए।

नगरों में रहने वाले लोगों का भोजन, कृषि और उत्पादन

हड़प्पा के लोग नगरों के साथ–साथ गाँवों में भी रहते थे। किसान और चरवाहे लोगों को खाने का सामान देते थे।

1. **फसलें**– हड़प्पा के लोग गेहूँ, जौ, दालें, मटर, धान, तिल और सरसों उगाते थे।
2. **हल**– जमीन के जुताई के लिए हल का प्रयोग करते थे जो लकड़ी से बनाए जाते थे। अवशेषों में हल के आकार के खिलौने मिले हैं।
3. **सिंचाई**– इन क्षेत्रों में कम बारिश होने की वजह से सिंचाई के तरीके अपनाए जाते थे। पानी का संचय किया जाता था जिससे फसलों की सिंचाई की जाती थी।
4. **पशु–पालन**– हड़प्पा के लोग गाय, भैंस, भेड़ और बकरियाँ पालते थे। रहने वाली जगह के आस–पास तालाब और चारागाह होते थे। पर सूखे के दिनों में उन्हें दूर जाना पड़ता था।
5. **शिकार एवं मछलियाँ पकड़ना**– ये लोग मछलियाँ पकड़ते थे। हिरण, सूअर व पक्षियों का शिकार भी करते थे।

हल

हड़प्पाई औजार

उत्पादन

प्रकृति से मिले कच्चे माल से कई तरह की चीजें बनाई जाती थी।

1. **कपड़ा**– किसानों द्वारा पैदा की गई कपास को कताई–बुनाई कर कपड़े को तैयार किया जाता था।
2. **आयात**– हड़प्पा के लोग ताँबा, सोना, चाँदी, बहुमूल्य पत्थरों को दूर जगहों से आयात करते थे।
3. **उपमहाद्वीपों से व्यापार**– ताँबे का आयात राजस्थान और एशियाई देश ओमान से, टिन का आयात आधुनिक ईरान और अफगानिस्तान से व मनकों का गुजरात, ईरान और अफगानिस्तान से किया जाता था।

हड़प्पाई मर्तबान ओमान से

तांबे व कांसे के बर्तन

हड़प्पा उत्पादन व आयात के केन्द्र: –

सामान	केन्द्र	प्रयोग
शंख	नागेश्वर, बालाकोट	आभूषण
नीला पत्थर	अफगानिस्तान	आभूषण
कार्नीलियन	गुजरात	बर्तन, आभूषण
धातु	राजस्थान	हथियार, औजार
ताँबा	ओमान	आभूषण, बर्तन
सोना	दिलमुन	आभूषण, बर्तन

2.2 पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थान भरिए–

   (क) हड़प्पा के लोग ....., ... और ..... भोजन खाते थे।

   (ख) ताँबे का ..... से व्यापार होता था।

   (ग) हड़प्पाई मर्तवान ..... में मंगवाया जाता था।

हड़प्पा संस्कृति का अंत

करीब 3900 साल पहले लोगों ने विकसित हड़प्पा स्थलों को छोड़ दिया। कुछ बदलाव देखने को मिले–

1. लेखन, मुहर और बाँटों का प्रयोग बंद हो गया।
2. कच्चे माल का आयात काफी कम हो गया।
3. सड़कों पर कचरे के ढेर बनने लगे।
4. जल निकास प्रणाली खत्म हो गई।
5. सड़कों पर झुग्गीनुमा घर बनाए गए।

ये बदलाव क्यों और कैसे हुआ? इस पर कई विद्वानों ने बहुत सारी बातें कहीं है। जैसे: हड़प्पा सभ्यता के पतन के संदर्भ में इतिहासकारों के विभिन्न मत–

क्रमांक	इतिहासकार	मत
1.	एम. आर. साहनी	जलवायु बदलाव के कारण, नदियों के सूखने के कारण
2.	जॉन मार्शल	बाढ़ के कारण
3.	डी. कोसाम्बी	मोहनजोदड़ो के लोगों को मार दिया गया।
4.	जॉन मार्शल	शासकों के अंत के कारण
5.	आर.एल. स्टाइन	जंगलों का विनाश, चारागाह और घास वाले मैदान खत्म हो गए
6.	ह्वीलर	विदेशी (आर्यों) के आक्रमण के कारण

तिथियाँ

1. नगरों का आरम्भ – लगभग 4700 साल पहले
2. हड़प्पा के नगरों का अंत की शुरूआत – लगभग 3900 साल पहले
3. अन्य नगरों का विकास – लगभग 2500 साल पहले

क्रियाकलाप –

दिए गए चित्र के आधार पर स्नानागार एवं जल निकासी व्यवस्था की तीन विशेषताएँ लिखिए।

मुख्य बिन्दु

1. हड़प्पा कालीन चार विशालतम् नगर थे– मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, गनेड़ीवाल तथा धौलावीरा।
2. हड़प्पा सभ्यता का नामकरण– हड़प्पा नामक जगह जहाँ यह संस्कृति पहली बार खोजी गई।
3. इस काल में मातृ देवी की उपासना सर्वाधिक प्रचलित थी।
4. हड़प्पा के प्रमुख भोजन– गेहूँ, जौ, दाल, तिल, चना।
5. हड़प्पा के मुख्य जानवर– बकरी, भैंस, भेड़, वृषभ।
6. हड़प्पा दो नगरों में विभाजित थी– दुर्ग और निचला शहर
7. मोहनजोदड़ो में एक विशाल स्नानागार मिला है।
8. हड़प्पा की लिपि है, जिसे आज तक पढ़ा नहीं गया है।
9. आभूषण, मनकों, बाट, मुहरों का प्रचलन था।
10. हड़प्पा सभ्यता का विनाश– जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, बाढ़, नदियों का सूखना मुख्य कारक थे।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–
   1. हड़प्पा सभ्यता के शहरों में लोगों को मिलने वाले भोजन की सूची बनाइये।
   2. हड़प्पा की शिल्पकला की पाँच विशेषताएँ लिखिए।
   3. नगर दुर्ग और निचले नगर में क्या अंतर था?
   4. हड़प्पा भवन निर्माण की चार विशेषताएँ लिखिए।
   5. इतिहासकारों ने हड़प्पा संस्कृति के अंत के क्या कारण दिए हैं?

2. नीचे दिए गए चित्र में हड़प्पा की लिपि है। इसे रहस्यमयी लिपि क्यों कहा गया है?

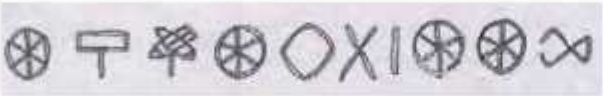

3. निम्नलिखित को सुमेल कीजिए–

1.	विशाल स्नानागार	ओमान
2.	ताँबा	मोहनजोदड़ो
3.	भोजन	जल निकासी प्रणाली
4.	शिल्पकला	धान
5.	नाली व्यवस्था	मनके व आभूषण

4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए–
   1. हड़प्पा सभ्यता को ..... व ..... भी कहा जाता है।
   2. ....., ... हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख केन्द्र थे।

3. मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ ..... है।
4. हड़प्पा और मोहनजोदड़ो दोनों नगरों के अपने ..... थे।

5. भारत के रेखा मानचित्र में हड़प्पा सभ्यता के मुख्य 5 केन्द्रों को दर्शाइए–

6. बहुविकल्पीय प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए–

1. हड़प्पा सभ्यता इनमें से कौनसी नदी के पास स्थित थी?

(क) दामोदर (ख) गंगा

(ग) सिंधु (घ) यमुना

2. विशाल स्नानागार इनमें से कौनसे केन्द्र में था?

(क) मोहनजोदड़ो (ख) कालीबंगा

(ग) लोथल (घ) राखीगढ़ी

3. हड़प्पा लोगों का भोजन इनमें से कौनसा था?

(क) गेहूँ, जौ, दाल, सफेद चना (ख) सोयाबीन, चावल, मछली

(ग) ज्वार, तिल, काले चने (घ) टमाटर, आलू, बाजरा

4. हड़प्पा की जल निकासी (नालियाँ) किस प्रकार की थी?

(क) सीधी व ग्रिड पद्धति (ख) टेढ़ी

(ग) गोल व घुमावदार (घ) बिल्कुल अलग–अलग

3 प्राचीन ग्रंथ एवं गणराज्य

प्रस्तावना

पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी साथी हैं। आज का जीवन पुस्तक के बिना नीरस सा लगता है। पुस्तकालय हमारे ज्ञानवर्धन में सहायक है। जिस विषय में हम ज्ञान लेना चाहें हमें हमारी रूचि के अनुसार पुस्तकालय सहायक होता है। धार्मिक पुस्तकों की बात करें तो सबसे प्रमुख हैं वेद। वेद प्राचीनतम् ग्रंथ हैं। आइये मालूम करें कि वेद क्या हैं?

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ से हम–

- वेदों के बारे में प्रारम्भिक ज्ञान अर्जित कर पाएँगे।
- ऋग्वेद काल की जीवनचर्या को समझ पाऐंगे।
- वैदिक संस्कृति का संज्ञान कर पाऐंगे।
- जनपदों का उल्लेख करने में सक्षम हो पाऐंगे।
- मगध जनपद की अर्थव्यवस्था की व्याख्या कर पाऐंगे।

वेद

ऋग्वेद आज से लगभग 3500 वर्ष पूर्व रचा गया। अपनी रचना के कई सौ साल बाद यह लिखा गया। लगभग 200 साल पहले ही यह छापा गया है। इसमें एक हजार से कुछ अधिक रचनाएँ हैं, इन रचनाओं को सूक्त कहते हैं। सूक्त का अर्थ है– अच्छी तरह से बोला गया। इन सूक्तों में देवियों तथा देवताओं की प्रशंसा की गई है। अग्नि, इंद्र और सोम महत्वपूर्ण देवता हैं। इन सूक्तों की रचना ऋषियों ने की। इसकी भाषा प्राचीन या वैदिक संस्कृत है, जो आज की संस्कृत से भिन्न है।

"ऋग्वेद की एक पाण्डुलिपि कश्मीर से प्राप्त हुई है, जिसे भूर्ज वृक्ष की छाल पर लिखा गया है। ऋग्वेद छापने के लिए इस दस्तावेज की सहायता ली गई। इन जैसे दस्तावेजों से ही अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। इसे पुणे, महाराष्ट्र की एक लाइब्रेरी में सुरक्षित रखा गया है।"

ऋग्वेद लिपि

ऋग्वेद में मवेशियों, बच्चों, घोड़ों, रथों तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए बहुत सी प्रार्थनाएँ हैं। घोड़ों को रथों में जोता जाता था। रथों का लड़ाई में खास उपयोग था। लड़ाइयाँ पानी, मवेशियों व ज़मीन के लिए लड़ी जाती थी। ऋग्वेद में अनेक कबीलों के नाम है जैसे– पुरू, भरत, यदु, अनु। ये कबीले कभी आपस में एक हो जाते थे और कभी आपस में ही लड़ते थे।

देवताओं से मदद मांगने के लिए तथा उन्हें धन्यवाद देने के लिए यज्ञ किए जाते थे। इसमें घी, लकड़ी या जानवरों की आहुति दी जाती थी।

वेदों के प्रकार

ऋग्वेद के बाद सामवेद, यर्जुवेद तथा अथर्ववेद की रचना हुई। ऋग्वेद में देवताओं की स्तुतियाँ दी गई हैं। यर्जुवेद में यज्ञ संबंधी संस्कारों की विवेचना है। सामवेद ऋग्वेद के भाग की पुनरावृत्ति है। विशेष रूप से यह संगीत से संबंधित है जिसका यज्ञ के संस्कारों में उपयुक्त अवसरों पर गान किया जाता है। अथर्ववेद वह समस्त ज्ञान है जो समय बीतने पर विज्ञान के रूप में जाना गया। इसमें वह ज्ञान भी है जो आदर्श और नैतिक नियमों के रूप में मान्य है।

3.1 पाठगत प्रश्न

सही विकल्प चुनिए–

1. ऋग्वेद की प्रार्थनाओं का विषय है–
   (क) देवताओं की प्रसन्नता (ख) शत्रुओं पर विजय
   (ग) घोड़ों की प्राप्ति (घ) उपरोक्त सभी
2. ऋग्वेद काल में यज्ञ किया जाता था–
   (क) जानवरों की आहुति हेतु (ख) वातावरण की शुद्धि हेतु
   (ग) शत्रुओं को भयभीत करने हेतु (घ) ज्ञान प्राप्ति हेतु

वैदिक संस्कृति

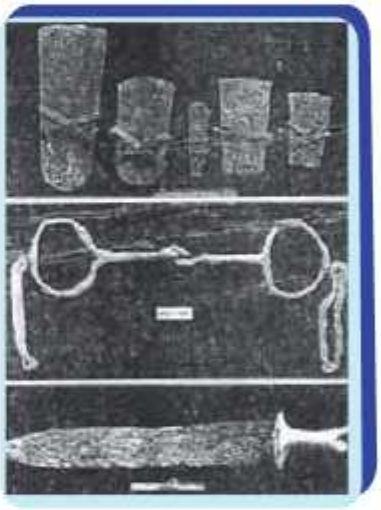

वैदिक संस्कृति को दो हिस्सों में बाँटा गया– प्रथम ऋग्वैदिक काल (1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक), दूसरा उत्तरवैदिक काल (1000 ई. पू. से 600 ई. पू. तक)। इस काल में लोग सभाओं में मिलते जुलते थे। युद्ध और शांति के बारे में सलाह–मशविरा करते थे। वहाँ वे बहादुर व युद्ध कुशल लोगों को नेता के रूप में चुनते थे। युद्ध जीतने पर हारे हुए लोगों की धन सम्पदा आपस में बांट ली जाती थी। इसमें युद्ध के नेताओं व पुजारियों का बड़ा हिस्सा होता था।

ग्राम, विष और जन ये उच्चतर इकाई थे। ग्राम सम्भवतः कई परिवारों के समूह को कहते थे। ग्रामणी ग्राम का प्रधान होता था। विष कई गाँवों का समूह था इसका प्रधान 'विषपति' कहलाता था। अनेक विषों का समूह 'जन' होता था। जन के अधिपति को जनपति या राजन कहा जाता था। ऋग्वैदिक काल में राजा का पद आनुवांशिक हो चुका था। कबीले की आम सभा जो समिति कहलाती थी, अपने राजा को चुनती थी। इस काल में महिलाएँ भी सभा में भाग लेती थी।

खुदाई में काले और लाल बर्तन, लोहे और ताँबे की वस्तुएँ और गहनें मिले हैं। कभी–कभी घोड़ों के पूरे कंकाल और सोने एवं सीपी की बनी वस्तुएँ मिली हैं।

जनपद

आज के नेता या शासक चुनाव प्रणाली से चुने जाते हैं। अतीत में यह कैसे होता होगा? वैदिक संस्कृति में हमने जाना कि कुछ राजा को 'जन' अथवा लोग चुनते थे। इन राजाओं को जन का राजा न कह कर जनपद का राजा कहने लगे। जनपद का अर्थ है– वह भूमि जिस पर जन ने पाँव (पद) रखे। जनपद का विस्तृत रूप महाजनपद कहलाया।

हमें जनपद के कई प्रमाण मिले हैं। वह लोग मिट्टी के बर्तन बनाते जो कुछ धूसर रंग के व कुछ लाल रंग के होते। इन में एक खास तरह के मिट्टी के बर्तन भी मिले हैं जिन्हें पेंटेड ग्रे वेयर के नाम से जाना जाता है। यह भूरे रंग के बर्तन जिन पर साधारण रेखाओं और ज्यामितीय पैटर्न के रंग किए हुए डिज़ाइन होते थे।

पेंटेड ग्रे वेयर दिल्ली के भोरगढ़, मंडोली, तिलपत तथा पुराना किला में खुदाई के दौरान पाए गए हैं। दिल्ली के पास मेरठ के नजदीक हस्तिनापुर, अतरंजीखेड़ा (एटा) के पास भी खुदाई में ऐसे बर्तन मिले हैं। मानचित्र में आप अन्य स्थलों के नाम भी पहचान सकते हैं।

महाजनपद

लगभग 2500 साल पहले कुछ जनपद अन्य जनपदों से अधिक महत्वपूर्ण हो गए थे उन्हें महाजनपद के नाम से जाना गया। लगभग सभी महाजनपदों की एक राजधानी होती थी। इन में कई की किलेबंदी होती थी। किले का निर्माण मुख्य रूप से सुरक्षा की दृष्टि से किया जाता था। महाजनपदों के शासक विशाल दुर्ग बना रहे थे, उन्हें नियमित रूप से धन की आवश्यकता पड़ती थी। करों को इक्ट्ठा करना महत्वपूर्ण हो गया। अनाज, मवेशियों, दस्तकारों द्वारा बनाई गई वस्तुओं के रूप में तथा नकद कर इक्ट्ठा किया जाता था। महाजनपदों की कुल संख्या 16 थी। जिनमें मगध सबसे अधिक शक्तिशाली था।

महाजनपदों के नाम–

	महाजनपद	राजधानी		महाजनपद	राजधानी
1.	काशी	वाराणसी	9.	कुरू	इन्द्रप्रस्थ
2.	कोशल	श्रावस्ती	10.	पांचाल	अहिच्छत्र
3.	अंग	चम्पा	11.	मत्स्य	विराट नगर
4.	मगध	राजगृह	12.	सूरसेन	मथुरा
5.	वज्जि	विदेह	13.	अस्मक	पोटन
6.	मल्ल	कुशीनगर	14.	अवन्ति	उज्जयिनि
7.	चेदि	शक्तिमती	15.	गांधार	तक्षशिला
8.	वत्स	कौशाम्बी	16.	कम्बोज	हाटक

मगध

दो सौ साल के भीतर मगध सबसे महत्वपूर्ण महाजनपद बन गया। मगध के कुछ हिस्सों पर जंगल थे जहाँ से हाथियों को पकड़ा जा सकता था। हाथी सेना का महत्वपूर्ण अंग थे। मगध चारों ओर से गंगा और सोन जैसी नदियों से घिरा हुआ था। इन नदियों से जल यातायात, जल आपूर्ति तथा भूमि के उपजाऊपन का कार्य होता था। मगध में लौह खनिज के भंडार थे, जिससे लोहा निकाला जाता था। लोहे से मजबूत औजारों और हथियारों का निर्माण किया जा सकता था।

कौशांबी में सुरक्षा के लिए बनाई गई यह दीवार। ईंट से बनी यह दीवार इलाहाबाद (उ.प्र.) के पास स्थित है। यह कम से कम लगभग 2500 साल पुरानी है।

3.2 पाठगत प्रश्न

1. वैदिक संस्कृति में नेता का चुनाव किस प्रकार होता था?
   (क) बहादुर लोगों को
   (ख) अधिक वोट मिलने वाले को
   (ग) जिसे मुखिया मनोनीत कर देता था
   (घ) सबसे अधिक धन कमाने वाले को
2. मगध का शक्तिशाली महाजनपद बनने के क्या कारण थे?

अभ्यास

1. वेद कितने हैं? उनके नाम बताइए।
2. वेद कब लिखे गए? प्रारंभिक रूप में इन्हें किस माध्यम में सुरक्षित रखा गया।
3. किन्हीं छः महा जनपदों के नाम लिखिए।
4. सोचिए क्या आपको इनमें कुछ नाम जाने पहचाने लगे।
5. भारत के मानचित्र में मगध आज के भारत में किस राज्य में है, उसे दर्शाएं।

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	_____			
2	_____			
3	_____			
4	_____			
5	_____			
6	_____			
7	_____			
8	_____			
9	_____			
10	_____			

4 सौर परिवार और हमारी पृथ्वी

सूर्य

चन्द्रमा

प्रस्तावना

दिन के प्रकाश में पृथ्वी का आकाश गहरे नीले रंग के सतह जैसा प्रतीत होता है। जबकि रात्रि में हमें यही आकाश तारों से भरा हुआ काले रंग की सतह जैसा जान पड़ता है। रात के समय आकाश में तारों के कई समूह देखने को मिलते हैं। इन समूहों को तारामंडल कहते हैं।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ से हम इनके बारे में सीखेंगे–

- सौर परिवार के सदस्य
- पृथ्वी की उत्पत्ति
- पृथ्वी एक अनोखा ग्रह
- ग्रह और उपग्रहों में अन्तर
- पृथ्वी पर प्रमुख महाद्वीप और महासागर

आओ हम अपने सौर परिवार/सौरमंडल के बारे में अध्ययन करें।

जिस प्रकार हमारे परिवार में अनेक सदस्य होते हैं जैसे– हमारे माता–पिता, भाई–बहन आदि वैसे ही सौर परिवार के सदस्य होते हैं– सूर्य, ग्रह, उपग्रह आदि।

क्या आप जानते हैं कि पौराणिक रोमन कहानियों में 'सोल' सूर्य देवता को कहा जाता है। सौर शब्द का अर्थ है सूर्य से संबंधित। इसलिए सूर्य के परिवार को सौर परिवार या सौरमंडल कहते हैं। सौर परिवार में सूर्य और उसके चारों ओर के ग्रह, उपग्रह आदि वे खगोलिय पिंड सम्मलित हैं जो अपने गुरूत्वाकर्षण बल के कारण अपने स्थान पर संतुलित हैं।

खगोलीय पिण्ड– खगोलीय पिण्ड ब्रह्माण्ड में पायी जाने वाली प्राकृतिक वस्तुओं को कहते हैं। इसमें गैलेक्सी (आकाशगंगा), तारे, ग्रह, उपग्रह आदि शामिल हैं।

सौर परिवार के सदस्य

सौर परिवार का मुखिया है सूर्य। सूर्य परिवार के सदस्य वे सभी हैं– जो सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। इनकी संख्या आठ है– बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, शनि, युरेनस और नैप्चून। इन सदस्यों के अतिरिक्त उपग्रह, बौने ग्रह, क्षुद्र ग्रह, उल्काएँ और धूमकेतु भी शामिल किए जाते हैं।

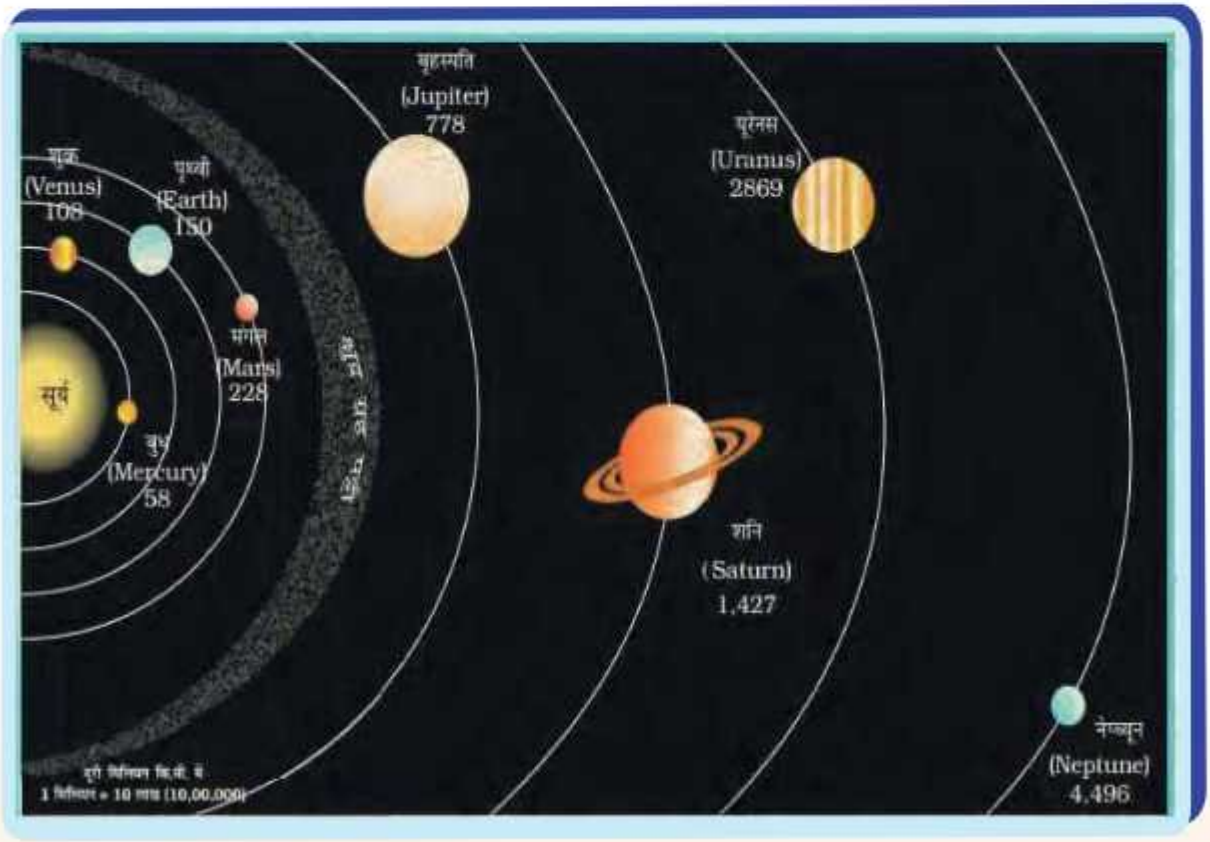

सौरमंडल के ग्रह

सूर्य

सूर्य, सौरमंडल के केन्द्र में स्थित एक तारा (नक्षत्र) है। इसके चारों तरफ पृथ्वी और सौरमंडल के अन्य ग्रह घूमते हैं। सूर्य हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा पिण्ड है। इसका व्यास पृथ्वी के व्यास से लगभग 109 गुना अधिक है। यह ऊर्जा का विशाल भंडार है। यह सौर मंडल के लिए प्रकाश और ऊष्मा का एकमात्र स्रोत है। सूर्य से पृथ्वी की औसत दूरी लगभग 15 करोड़ किलोमीटर है।

ग्रह

सूर्य के चारों तरफ घूमने वाले ऐसे खगोलीय पिण्ड जिनमें ऊर्जा का अपना स्त्रोत नहीं होता उन्हें ग्रह कहते हैं। क्या आप जानते हैं कि 'प्लेनेट' एक लेटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है 'इधर उधर घूमने वाला'। सौरमंडल में आठ ग्रह हैं। क्या आप इनके नाम लिख सकते हो?

सूर्य से दूरी के क्रम में ग्रहों के नाम लिखिए (नजदीक से दूर में)	सौरमंडल के ग्रहों को आकार के अनुसार लिखिए (छोटे से बड़े में)
1.	.....
2.	.....
3.	.....
4.	.....
5.	.....
6.	.....
7.	.....
8.	.....

सौरमंडल के सभी आठ ग्रह एक निश्चित पथ पर सूर्य का परिक्रमण करते हैं। इनका मार्ग दीर्घवृत्ताकार जैसा है। इनके दीर्घवृत्ताकार मार्ग को कक्षा कहते हैं। आठ ग्रहों के अलावा हमारे सौरमंडल में तीन बौने ग्रह हैं– सीरीस, प्लूटो और एरीस।

"क्या आप जानते हैं? –
प्राचीन खगोलशास्त्रियों ने तारों और ग्रहों के बीच का अन्तर इस तरह किया– रात में आकाश में चमकते दिखने वाले अधिकतर पिण्ड हमेशा पूरब की दिशा से उगते हैं और पश्चिम की दिशा में अस्त होते हैं। इन पिण्डों को तारा कहा गया है। पर कुछ पिण्ड ऐसे भी हैं जो कभी आगे जाते थे और कभी पीछे। यानी की वह घुमक्कड़ थे। उन्हें ग्रह माना गया है।"

4.1 पाठगत प्रश्न

1. ग्रह की परिभाषा लिखिए?
2. सूर्य के चारों ओर ग्रह किस प्रकार के पथ पर चक्कर लगाते हैं?
   (क) आयताकार पथ पर
   (ख) दीर्घवृत्ताकार पथ पर
   (ग) वृत्तीय पथ पर
3. सूर्य के सबसे निकट कौन–सा ग्रह है?
4. सूर्य के सबसे दूर कौन–सा ग्रह है?

पृथ्वी की उत्पत्ति की कहानी

पृथ्वी की उत्पत्ति की कहानी कोई एक नहीं है। विभिन्न दार्शनिकों व वैज्ञानिकों ने कई परिकल्पनाएं दी हैं। एक परिकल्पना "निहारिका परिकल्पना" के नाम से प्रसिद्ध हैं। इसके अनुसार ग्रहों का निर्माण धीमी गति से घूमते पदार्थों के बादल से हुआ जो सूर्य की युवा अवस्था से सम्बद्ध थे। बाद में कहा गया कि एक अन्य घूमता हुआ तारा सूर्य के निकट से गुजरा और उस तारे के गुरुत्वाकर्षण से सूर्य की सतह से सिगार के आकार का पदार्थ निकलकर अलग हो गया। बाद में यह पदार्थ सूर्य के चारों ओर घूमने लगा तथा धीरे–धीरे संघनित हो कर ग्रहों के रूप में परिवर्तित हो गया। कुछ वैज्ञानिकों ने इस कहानी/परिकल्पना को सही माना तथा कुछ ने इसमें संशोधन किए जबकि कुछ वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की उत्पत्ति के अपने अलग सिद्धान्त प्रस्तुत किए जिनमें सर्वाधिक सर्वमान्य सिद्धान्त "बिग बैंग सिद्धान्त" है। इसे "विस्तारित ब्रह्मांड परिकल्पना" भी कहा जाता है।

पृथ्वी

पृथ्वीः एक अनोखा ग्रह

सूर्य से दूरी के आधार पर पृथ्वी तीसरा ग्रह है। इसका आकार कुछ संतरे जैसा है। जैसे संतरा ऊपर और नीचे से कुछ चपटा होता है वैसे ही पृथ्वी ध्रुवों के पास थोड़ी चपटी है। इसी कारण इसके आकार को 'भू–आभ' कहा जाता है। 'भू–आभ' का अर्थ है, पृथ्वी के जैसा आकार।

पृथ्वी लाखों प्रजातियों का घर है। अब तक की जानकारी के अनुसार पूरे ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन है। यहाँ जीवन लगभग एक अरब वर्ष पहले प्रकट हुआ। पृथ्वी पर जीवन के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ हैं। जैसे यहाँ न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी है। वायु में जीवन के लिए आवश्यक ऑक्सीजन मौजूद है। यहाँ पानी की भी उपस्थिति है। ये सभी पृथ्वी को जीवन युक्त एक अद्भुत ग्रह बनाते हैं।

अंतरिक्ष से पृथ्वी एक नीले कंचे की तरह दिखाई देती है। पृथ्वी की सतह का 71 प्रतिशत हिस्सा पानी से ढका है। अतः इसे जलीय ग्रह भी कहा जाता है।

राहुल और विलियम घर से विद्यालय की ओर जा रहे थे तभी राहुल ने विलियम को बताया कि कल उसे अपने पिता से पृथ्वी के बारे में अनेक जानकारियाँ मिलीं। इन जानकारियों के मिलने पर राहुल बार–बार पृथ्वी को अनोखा ग्रह कह रहा था। आपको क्या लगता है कि राहुल को अपने पिता से ऐसी क्या जानकारियाँ मिली होंगी जिसके कारण वह पृथ्वी को अनोखा ग्रह बता रहा था।

उपग्रह

जिस प्रकार ग्रह सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं, उसी प्रकार उपग्रह अपने पिता ग्रहों के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। ये अपने पिता ग्रहों से छोटे होते हैं।

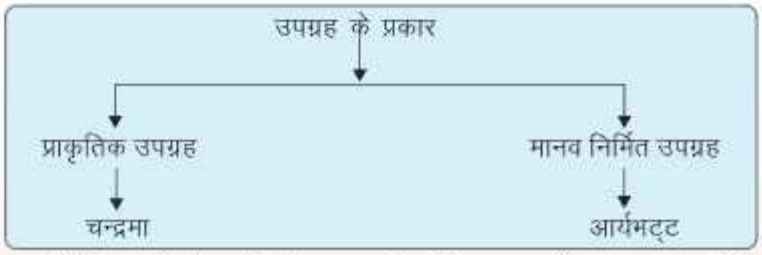

बुध और शुक्र के कोई उपग्रह नहीं हैं। दूसरी ओर शनि के पास सबसे अधिक उपग्रह हैं। क्या आप पृथ्वी के उपग्रह का नाम बता सकते हैं? जी हाँ; वह है चन्द्रमा।

चन्द्रमा

चन्द्रमा पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है। यह सूर्य के बाद आसमान में सबसे अधिक चमकदार पिण्ड है। यह सौरमंडल का पाँचवां सबसे विशाल प्राकृतिक उपग्रह है। पृथ्वी से चन्द्रमा तक की औसत दूरी लगभग 3,84,400 किलोमीटर है। यह पृथ्वी से सबसे नजदीक खगोलीय पिण्ड है।

मानव निर्मित उपग्रह

इन उपग्रहों को मानव प्रयासों द्वारा कक्षा में स्थापित किया जाता है। इनका उपयोग ब्रह्माण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करने एवं पृथ्वी पर संचार माध्यम के लिए किया जाता है। इनके द्वारा मौसम की जानकारी भी प्राप्त होती है। भारत के कुछ मानव निर्मित उपग्रह हैं–

इन्सेट 4 डी

कार्टोसैट–2

ओशियनसैट–2

चन्द्रयान–2

देश का पहला उपग्रह आर्यभट्ट,
प्रक्षेपण तिथि 19 अप्रैल 1975

देश का आधुनिक उपग्रह इनसैट 4 डी,
प्रक्षेपण तिथि 25 दिसम्बर 2010

क्षुद्र ग्रह

सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने वाले पत्थर के छोटे–छोटे टुकड़ों को क्षुद्र ग्रह कहते हैं। ये मंगल एवं बृहस्पति के बीच पट्टी के रूप में स्थित हैं। इनकी संख्या लाखों में है। ये ग्रहों से बहुत छोटे और उल्का पिण्डों से बड़े होते हैं।

क्षुद्र ग्रह

4.2 पाठगत प्रश्न

1. पृथ्वी के सबसे नजदीक खगोलीय पिण्ड का क्या नाम है?
2. ग्रहों और उपग्रहों के बीच का अन्तर लिखिए।

उल्कापिंड

रात्रि के समय कभी कभी आसमान से पृथ्वी पर गिरते हुए पिंड दिखाई देते हैं। उन्हें उल्का और साधारण बोलचाल में 'टूटते हुए तारे' कहते हैं। ये जलते हुए से दिखाई देते हैं। उल्काओं का जो अंश वायुमंडल में जलने से बचकर पृथ्वी पर पहुँचता है उसे उल्कापिंड कहते हैं।

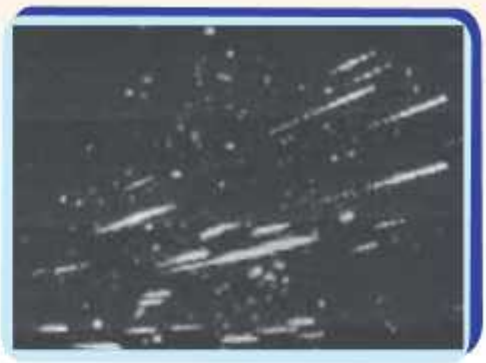

उल्का पिण्ड

आकाशगंगा (मिल्कीवे)

हमारी गैलेक्सी को आकाशगंगा, मिल्कीवे या मन्दाकिनी कहते हैं। हमारी पृथ्वी और सौरमंडल इसी में स्थित है। आकाशगंगा की आकृति एक सर्प की कुंडली के आकार जैसी है। इसका एक बड़ा केन्द्र होता है। उस केन्द्र से निकलती हुई कई वक्र भुजाएँ होती हैं। आकाशगंगा करोड़ों तारों और गैसों से मिलकर बनी है।

आकाश गंगा

ब्रह्माण्ड

ब्रह्माण्ड में हमारी आकाशगंगा जैसी अरबों खरबों आकाशगंगाएँ हैं। इसकी विशालता की कल्पना करना कठिन है। ब्रह्माण्ड का विस्तार आज भी हो रहा है।

4.3 पाठगत प्रश्न

1. विशालता के अनुसार इन्हें छोटे से बड़े क्रम में लिखें / लगाएं

   आकाशगंगा पृथ्वी ब्रह्माण्ड सौरमंडल

   1. ..... 2. ..... 3. ..... 4. .....

2. जोड़े बनाएं–

क	ख
क्षुद्र ग्रह	टूटते हुए तारे
उल्कापिण्ड	विस्तार आज भी हो रहा है
आकाशगंगा	मंगल और बृहस्पति के बीच स्थित
ब्रह्माण्ड	सर्प की कुंडली

पृथ्वी पर महाद्वीप

भूमंडल पृथ्वी का ठोस भाग है। भूमंडल पर मानव का वास है। पृथ्वी की सतह के इस बड़े स्थलीय भू–भाग को महाद्वीप कहते हैं। नीचे दिए गए विश्व मानचित्र पर सातों महाद्वीपों को ढूँढ़ें।

एशिया

पृथ्वी का सबसे बड़ा महाद्वीप एशिया है। एशिया पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है और कर्क रेखा इससे होकर गुजरती है। यह स्थलमण्डल के 30 प्रतिशत हिस्से पर फैला हुआ है। एशिया में 48 देश हैं। यूराल पर्वत एशिया को यूरोप से अलग करता है। क्या तुम इसके कोई पाँच देशों के नाम बता सकते हो?

यूरोप

एशिया के उत्तर पश्चिम में यूरोप महाद्वीप स्थित है। यह तीन ओर से समुद्र द्वारा घिरा हुआ है। यूरोप की स्थिति भूमध्य रेखा से काफि उत्तर की ओर है। आर्कटिक वृत्त इससे होकर गुजरता है इसलिए यहाँ का मौसम अधिक ठंडा रहता है।

अफ्रीका

क्षेत्रफल और जनसंख्या के आधार पर यह दूसरे स्थान पर है। सूडान इसका सबसे बड़ा देश है। लाल सागर तथा स्वेज नहर इसे एशिया से अलग करते हैं। विश्व का सबसे बड़ा सहारा रेगिस्तान यहाँ स्थित है। विश्व की सबसे लम्बी नील नदी अफ्रीका में बहती है।

उत्तर अमेरिका

उत्तर अमेरिका स्थलमण्डल के 16.2 प्रतिशत क्षेत्र पर फैला हुआ है। यहाँ दुनिया के केवल 7.5 प्रतिशत लोग रहते हैं। उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका से पनामा स्थल संधि से जुड़ा हुआ है। मानचित्र को ध्यान से देखो और बताओ कि यह किस गोलार्ध में स्थित है।

दक्षिण अमेरिका

ब्राजील दक्षिण अमेरिका का सबसे बड़ा देश है। विश्व का सबसे बड़ा झरना एन्जल फाल यहाँ स्थित है। इसके पूर्व में अटलांटिक महासागर है और पश्चिम में प्रशांत महासागर। अमेजन नदी विश्व की अन्य नदियों की तुलना में सबसे ज्यादा पानी बहाकर समुद्र तक पहुँचाती है। अतः इसे विश्व की सबसे बड़ी नदी के रूप में जाना जाता है।

आस्ट्रेलिया

आस्ट्रेलिया को द्वीपीय महाद्वीप भी कहा जाता है क्योंकि यह चारों तरफ से महासागरों तथा समुद्रों से घिरा है। यह एक अकेला ऐसा महाद्वीप है जो एक देश भी है।

अंटार्कटिक

अंटार्कटिक दक्षिणी गोलार्ध में स्थित है। इसके चारों ओर दक्षिणी महासागर है। यह विश्व का पाँचवा बड़ा महाद्वीप है। इसका क्षेत्रफल आस्ट्रेलिया से दोगुना है। इसका 98 प्रतिशत क्षेत्रफल एक मील गहरी बर्फ से ढका हुआ है। इसी कारण यहाँ रहना मुश्किल है। इसकी अपनी कोई जनसंख्या नहीं है। परन्तु अलग–अलग देशों ने यहाँ शोध केन्द्र स्थापित किए हैं। भारत के दो शोध केन्द्र यहाँ स्थित हैं– मैत्री और दक्षिण गंगोत्री।

क्षेत्रफल के अनुसार महाद्वीप (करोड वर्ग कि.मी.)

महाद्वीप	क्षेत्रफल	प्रतिशत
एशिया	4.45	29.8
अफ्रीका	3.03	20.3
उत्तर अमेरिका	2.42	16.2
दक्षिण अमेरिका	1.77	11.9
अंटार्कटिका	1.41	9.4
यूरोप	0.99	6.7
आस्ट्रेलिया	0.85	5.7

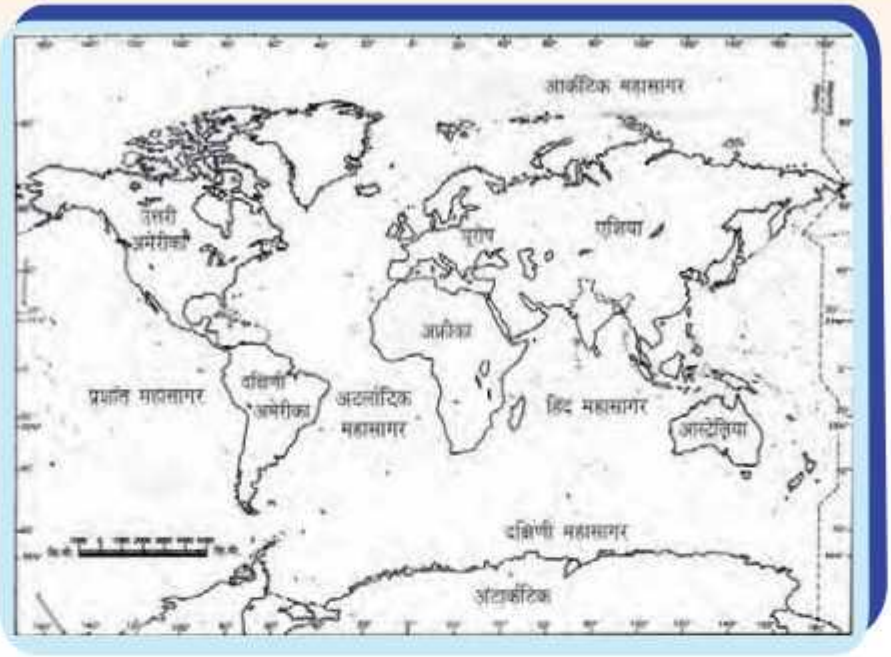

विश्व–महाद्वीप और महासागर

पृथ्वी पर सात महाद्वीप हैं– एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तर अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा अंटार्कटिका

महासागर

पृथ्वी के 71 प्रतिशत भाग पर जल का विस्तार है। यहाँ पर पाये जाने वाले जल का 97 प्रतिशत महासागरों में पाया जाता है।

पृथ्वी पर पाँच प्रमुख महासागर हैं– प्रशांत महासागर, अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर, आर्कटिक महासागर एवं दक्षिणी (अन्टार्कटिका) महासागर। इन्हें विश्व के नक्शे पर दर्शाया गया है।

प्रशांत महासागर – यह पृथ्वी का सबसे बड़ा महासागर है। पृथ्वी का सबसे गहरा भाग मेरियाना गर्त, इसी महासागर में स्थित है। भू–मध्य रेखा इसे उत्तरी और दक्षिणी भाग में बाँटती है।

अटलांटिक महासागर – मानचित्र को देखकर यह बताएं कि इसके चारों ओर कौन से महाद्वीप स्थित हैं। यह विश्व का दूसरा बड़ा महासागर है। चारों महासागरों में से इसका पानी सबसे खारा है। इसमें स्थित भूमध्य रेखा इसे दो हिस्सों में बाँटती है। इसका आकार अंग्रेजी भाषा के अक्षर S की तरह है।

हिंद महासागर – पृथ्वी का 20 प्रतिशत जल इस सागर में है। यह विश्व का एक ही ऐसा महासागर है जिसका नाम किसी देश के नाम पर रखा गया है। इसका आकार त्रिभुजाकार है। हिंद महासागर का मौसम मानसून की हवाओं से प्रभावित होता है।

क्षेत्रफल के अनुसार महासागर

महासागर	क्षेत्रफल (लाख वर्ग किमी.)
प्रशांत सागर	17.96
अटलांटिक सागर	9.23
हिंद सागर	7.39
आर्कटिक सागर	1.40
दक्षिणी सागर	0.20

अभ्यास

1. निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: –

   (क) सौर परिवार में कुल कितने ग्रह हैं ?

   (ख) पृथ्वी के उपग्रह का नाम बताइए।

   (ग) पृथ्वी को अनोखा ग्रह क्यों कहते हैं ?

   (घ) सबसे बड़ा महासागर कौन सा है ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

   (क) सूर्य से पृथ्वी की दूरी.....कि.मी. है।

   (ख) पृथ्वी के .....प्रतिशत भाग पर पानी का विस्तार है।

   (ग) हिंद महासागर में पृथ्वी का .....प्रतिशत जल पाया जाता है।

3. मिलान कीजिए

(क)	सबसे छोटा महाद्वीप	1.	बुध
(ख)	सबसे बड़ा महासागर	2.	प्रशान्त महासागर
(ग)	सबसे बड़ा महाद्वीप	3.	एशिया
(घ)	सबसे छोटा ग्रह	4.	दक्षिण सागर
(ड़)	सबसे छोटा महासागर	5.	आस्ट्रेलिया

4. परियोजना कार्य–

   नीचे लिखी वस्तुओं से सौरमंडल का एक तुलनात्मक चित्र / मॉडल बनाए।

खगोलीय पिण्ड	**वस्तुएँ** (केवल तुलना के लिए)
सूर्य	तरबूज
बुध	राई का दाना
शुक्र	मटर का दाना
पृथ्वी	काबुली चना का दाना
मंगल	मसूर का दाना
बृहस्पति	बड़ा नींबू
शनि	छोटा नींबू
युरेनस	बड़ा कंचा
नेप्चून	छोटा कंचा

5 ग्लोब एवं मानचित्र

प्रस्तावना

पृथ्वी का आकार गोलाकार है। इसे ग्लोब के माध्यम से समझा जा सकता है। मानचित्र भी हमारे जीवन में बहुत उपयोगी है। इसकी सहायता से हम दिशा और सही दूरी का पता लगा सकते हैं। मानचित्र द्विआयामी होते हैं।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ से हम–

1. मानचित्र एवं ग्लोब को समझेंगे।
2. अक्षांशों तथा देशांतरों की जानकारी प्राप्त करेंगे।
3. ग्लोब तथा मानचित्र में अंतर स्पष्ट करेंगे।
4. मानचित्र के प्रमुख घटकों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
5. पृथ्वी पर ताप कटिबंधों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

ग्लोब

ग्लोबः पृथ्वी का प्रतिरूप

1. पृथ्वी एक विशाल गोलाकार ग्रह है। यह अपने काल्पनिक अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है।
2. ग्लोब गोलाकार रूप में मानवकृत पृथ्वी का सही प्रतिरूप है।
3. पृथ्वी के अक्ष की तरह ग्लोब की अक्ष ऊर्ध्वाधर से 23½° के कोण पर झुका होता है।
4. अक्ष का ऊपरी सिरा उत्तरी ध्रुव तथा निचला सिरा दक्षिणी ध्रुव होता है।
5. दोनों ही ध्रुव पृथ्वी पर बिन्दु के रूप में होते हैं।
6. ग्लोब पर देश, महाद्वीप, सागर एवं महासागरों की स्थिति, आकृति एवं स्वरूप पृथ्वी की तरह ही एक दूसरे के संदर्भ में बिल्कुल ठीक होते हैं।
7. पृथ्वी के अध्ययन में ग्लोब बहुत ही उपयोगी है।
8. ग्लोब पर अक्षांशों एवं देशान्तरों की स्थिति बहुत ही सही एवं सटीक होती है।

ग्लोब की उपयोगिता

1. स्थितियों का ज्ञान प्राप्त करना
2. समय की गणना करना
3. महाद्वीप एवं महासागरों का सापेक्षित अध्ययन
4. दिन–रात को समझना
5. अक्षांशों एवं देशान्तरों का ज्ञान
6. पृथ्वी के झुकाव को समझना
7. ध्रुवों की स्थितियों का ज्ञान
8. गोलार्द्धों की विशेषताओं को जानना।

5.1 पाठगत प्रश्न

1. ग्लोब पर ध्रुवों की पहचान कीजिए और उनके नाम लिखिए।
2. ग्लोब की उपयोगिता बताइये।

पृथ्वी पर अक्षांश एवं देशान्तर रेखाएँ

एक गेंद लें और उस गेंद पर अपने पैन से वहाँ निशान लगाएँ जहाँ हमारा देश भारत है। अब अपने दोस्तों द्वारा उनकी गेंदों पर लगाए निशान भी देखें। क्या आप सभी ने भारत के लिए निशान एक ही स्थान पर लगाया है? नहीं ना! सबका निशान अलग–अलग जगह पर क्यों है? जबकि भारत तो एक निश्चित स्थान पर स्थित है। इसका कारण है अक्षांश और देशान्तर का गेंद पर अंकिन नहीं किया जाना। अतः किसी भी स्थान की सही स्थिति जानने और दर्शाने के लिए अक्षांश और देशान्तर का ज्ञान व समझ होना अति आवश्यक है। पृथ्वी जैसे विशाल ग्रह पर किसी स्थान को ढूंढना अत्यंत कठिन है। इस समस्या को हल करने में पृथ्वी के ऊपर अक्षांशों एवं देशान्तरों की जानकारी बहुत सहायक है। आओ पहले अक्षांशों को जानें!

अक्षांश वृत्त–

1. दोनों ध्रुवों से समान दूरी पर पृथ्वी पर बना भूमध्य वृत्त सबसे बड़ा होता है।
2. यह शून्य डिग्री अक्षांश है।
3. भूमध्य वृत्त पृथ्वी को दो समान भागों में बांटता है। उत्तरी ध्रुव की ओर वाले भाग को उत्तरी गोलार्द्ध तथा दक्षिणी ध्रुव वाले भाग को दक्षिणी गोलार्द्ध कहते हैं।
4. उत्तरी गोलार्द्ध तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में कुल 90–90 अक्षांश बनते हैं। कुछ प्रमुख अक्षांश वृत्तों को चित्र में दर्शाया गया है। 90° उत्तरी एवम् दक्षिणी अक्षांश के अतिरिक्त शेष सभी अक्षांश वृत्त हैं।
5. सभी अक्षांश भूमध्य वृत्त के समानान्तर होते हैं।
6. सभी अक्षांश पूर्व–पश्चिम दिशा में होते हैं।
7. एक अक्षांश से दूसरे अक्षांश की दूरी पृथ्वी के सभी भागों में समान होती है।
9. 23½° अक्षांश को उत्तरी गोलार्द्ध में कर्कवृत्त तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में मकरवृत्त कहते हैं।
10. 66½° अक्षांश को उत्तरी गोलार्द्ध में आर्कटिक वृत्त तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में अन्टार्कटिक वृत्त कहते हैं।
11. 90° अक्षांश को उत्तरी गोलार्द्ध में उत्तरी ध्रुव जबकि दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी ध्रुव कहते हैं।

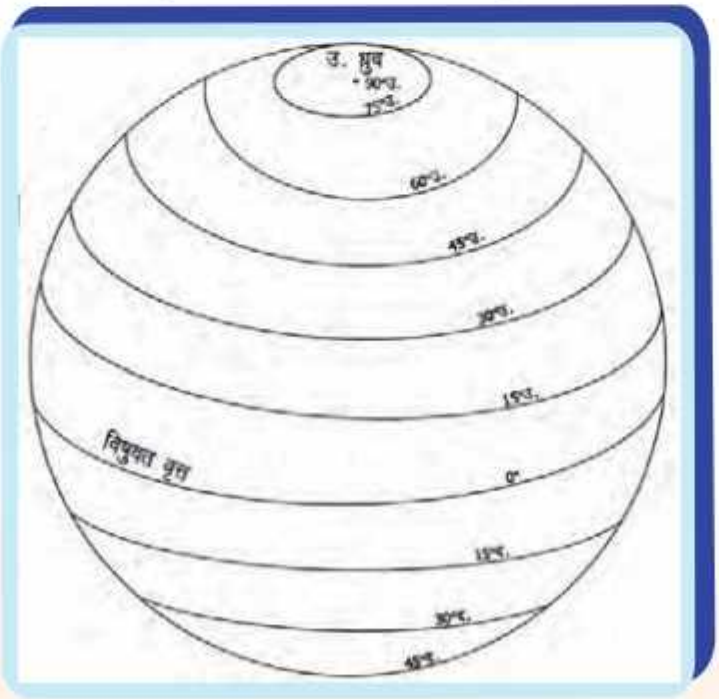

अक्षांश पूर्ण वृत्त के रूप में

देशान्तर रेखाएँ (अर्द्धवृत्त)–

आइए, अब पृथ्वी (ग्लोब) पर देशान्तरों की स्थिति की जानकारी प्राप्त करें–

1. देशान्तर, उत्तर से दक्षिण दिशा में होते हैं।
2. देशान्तर पृथ्वी (ग्लोब) पर उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुवों को मिलाने वाले अर्द्धवृत्त है।
3. इंग्लैण्ड में लंदन के निकट ग्रीनविच से गुजरते हुए उत्तर से दक्षिण में ध्रुवों को मिलाने वाले अर्द्धवृत्त को शून्य डिग्री देशान्तर या प्रधान मध्याह्न देशान्तर या प्रमुख यामोत्तर कहते हैं।
4. प्रधान देशान्तर से पूर्व में स्थित पृथ्वी के भाग को पूर्वी गोलार्द्ध तथा पश्चिम में स्थित भाग को पश्चिमी गोलार्द्ध कहते हैं।
5. पूर्वी गोलार्द्ध में 180° देशान्तर और पश्चिमी गोलार्द्ध में 180° देशान्तर होते हैं परन्तु 180° पूर्वी देशान्तर तथा 180° पश्चिमी देशान्तर दोनों का एक ही अर्द्धवृत होता है।
6. किसी एक देशान्तर पर स्थित सभी स्थानों पर एक ही समय दोपहर होता है।

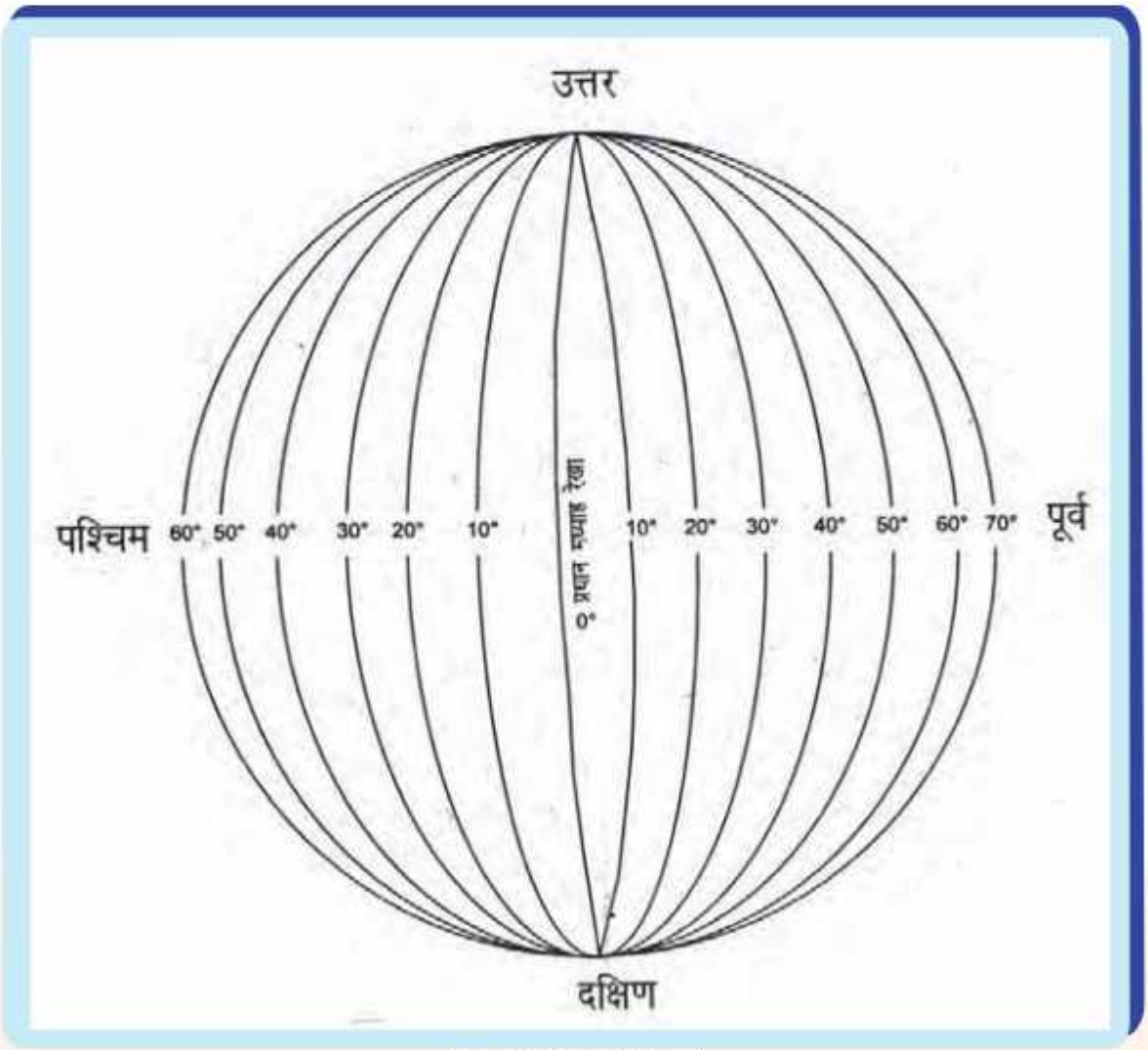

देशांतर अर्द्ध वृत्त के रूप में

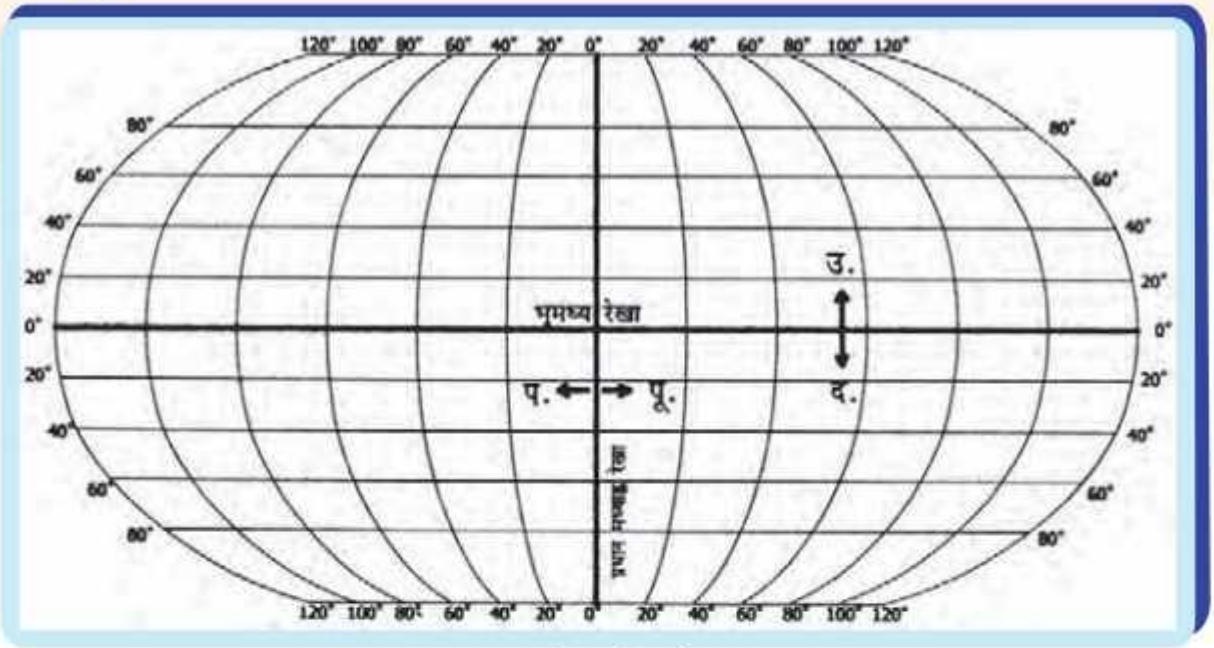

अक्षांश व देशांतर रेखाओं का जाल

5.2 पाठगत प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों में रिक्त स्थान भरिए–

   (क) पृथ्वी धरातल पर 0° अक्षांश को ..... कहते हैं।

   (ख) उत्तरी गोलार्द्ध में 23½° अक्षांश को ..... कहते हैं।

   (ग) दक्षिणी गोलार्द्ध में 66½° अक्षांश को ..... कहते हैं।

2. पृथ्वी को उत्तरी तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में बांटने वाले अक्षांश का नाम बताइए।

3. निम्नलिखित प्रश्न में कॉलम क के तथ्यों को कॉलम ख से सही जोड़े बनाइए।

क	ख
0° देशान्तर	पश्चिमी गोलार्द्ध
30° पूर्वी देशान्तर	प्रधान देशान्तर
30° पश्चिमी देशान्तर	पूर्वी गोलार्द्ध

मानचित्र क्या है?

1. एक चौरस सपाट सतह (कागज, ब्लैक बोर्ड आदि) पर पृथ्वी के छोटे या बड़े क्षेत्र का चित्रण मानचित्र कहलाता है। पृथ्वी सतह पर उपलब्ध विभिन्न अवयवों को पैमाने (मापक) तथा दिशा के अनुसार उस क्षेत्र में स्थित चीजों को प्रतीक चिह्नों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। मानचित्र पूरी पृथ्वी का या इसके किसी भाग का बनाया जा सकता है।

2. मानचित्र में तीन बातों का समावेश होता है जैसे– दिशा, मापक तथा प्रतीक चिह्न।

3. हम अपना घर बनाने से पहले उसका मानचित्र तैयार करते हैं। इसमें प्रत्येक कमरे की लम्बाई–चौड़ाई एक मापक के अनुसार देते हैं। दिशा भी दिखाई होती हैं।

मानचित्र के घटक

1. मानचित्र के तीन प्रमुख घटक हैं: दिशा, पैमाना (मापक) तथा प्रतीक चिह्न।
2. मानचित्र में दिशा को दिखाने के लिए कुतुबनुमा या उत्तर की दिशा में तीर की नोक द्वारा दिखाया जाता है।
3. यदि किसी मानचित्र में दिशा नहीं दिखायी जाती है। तो ऐसे मानचित्र में उत्तर दिशा ऊपर की ओर होती है। नीचे को दक्षिण, दांयी तरफ पूर्व तथा बांयी तरफ पश्चिम होता है।
4. इनके अतिरिक्त उत्तर–पूर्व, उत्तर–पश्चिम, दक्षिण–पूर्व तथा दक्षिण–पश्चिम की दिशाओं की सही जानकारी कुतुबनुमा के द्वारा देखी जा सकती है। मानचित्र पर दी गयी दिशा के अनुसार ही पता चलता है कि कौनसा स्थान किस दिशा में स्थित है।
5. प्रत्येक मानचित्र पर मापक दिया होता है।
6. मान लीजिए कि चित्र पर 1 से.मी. = 1000 मीटर दिया गया है। इसका अर्थ है कि मानचित्र पर एक से.मी. की दूरी पृथ्वी के धरातल पर 1000 मीटर के बराबर है।
8. मापक द्वारा मानचित्र में दो स्थानों की दूरी, नदी, सड़क की लम्बाई आदि को आप नाप सकते हैं।
9. मानचित्र में प्रतीक चिह्न तीसरा घटक है। पृथ्वी के विभिन्न भौगोलिक तथ्यों को दर्शाने के लिए कुछ प्रतीक चिह्नों का प्रयोग करते हैं इन्हें विभिन्न चिह्नों द्वारा मानचित्र पर दिखाया जाता है। इनकी मदद से मानचित्र पर उनकी स्थिति का ज्ञान होता है। नीचे में कुछ भौगोलिक तथ्यों के चिह्न दिए गए हैं जिनका प्रयोग मानचित्र में किया जाता है।

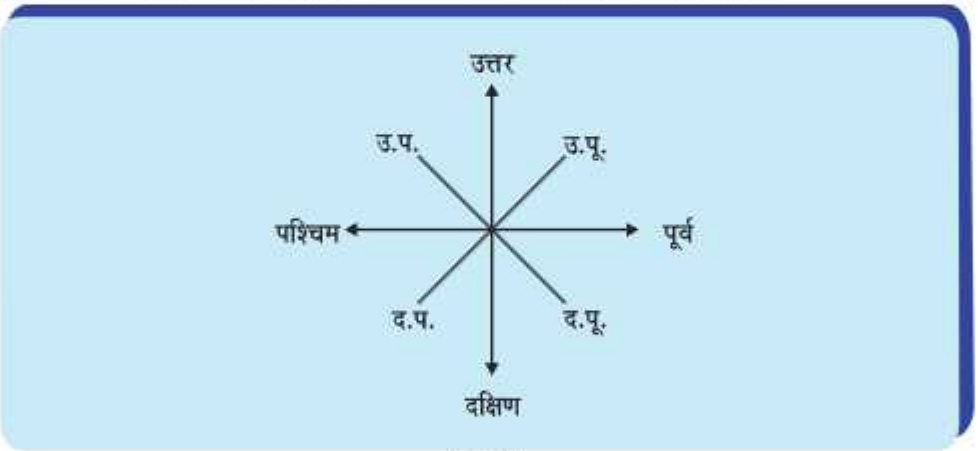

दिशाएँ

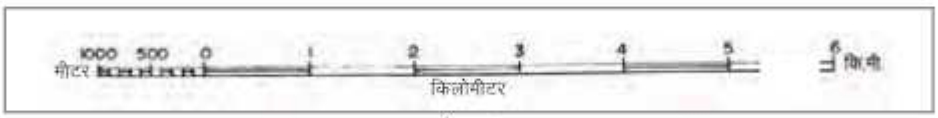

पैमाना

रूढ़ चिह्न

सड़कें	: पक्की, कच्ची, पक्की निर्माणाधीन	
सीमा	: अंतर्राष्ट्रीय, राज्य, ज़िला, तहसील, गाँव	
नदी	: सूखी, धारा सहित, जल प्रपात सहित	
नाले	: सदावाहिनी, मौसमी	
धार्मिक स्थल	: मंदिर, गिरजा, मस्जिद, मकबरा	
पोस्ट ऑफिस	: टेलीग्राफ़ ऑफिस, पोस्ट और टेलीग्राफ़ ऑफ़िस,थाना	PO , TO , PTO , PS
गाँव	: खुला गाँव, दीवार बंद गाँव, उजाड़	

ग्लोब तथा मानचित्र में अंतर:

ग्लोब	मानचित्र
1. ग्लोब पृथ्वी का एक सही प्रतिरूप/नमूना है।	1. मानचित्र कागज या सपाट सतह पर पृथ्वी या उसके किसी भाग का मापक एवं दिशा के अनुरुप सही चित्रण है।
2. ग्लोब पर दिए पूरे तथ्यों को एक साथ नहीं देखा जा सकता है।	2. मानचित्र पर पूरी पृथ्वी के तथ्यों को एक साथ देखा जा सकता है।
3. ग्लोब पूरी पृथ्वी को दर्शाता है। पृथ्वी के किसी छोटे–बड़े भाग के लिए अलग से ग्लोब बनाना संभव नहीं है।	3. मानचित्र पूरी पृथ्वी या उसके किसी भी भाग को प्रदर्शित करने के लिए बनाया जा सकता है।
4. ग्लोब को छोटा या बड़ा नहीं किया जा सकता है अतः इनका उपयोग सीमित है।	4. मानचित्र को आवश्यकतानुसार छोटा या बड़ा किया जा सकता है।
5. ग्लोब पर स्थान की कमी के कारण बहुत ही सीमित लेकिन महत्वपूर्ण ज्ञान हो पाता है।	5. मानचित्र पर पृथ्वी की विस्तार पूर्वक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
6. ज्यादा बड़े ग्लोब को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में असुविधा होती है। आसानी से ग्लोब को मोड़ा या खोला नहीं जा सकता।	6. मानचित्र को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना आसान है। मानचित्र को आसानी से मोड़ा या खोला जा सकता है।

5.3 पाठगत प्रश्न

1. ग्लोब और मानचित्र में कोई तीन अंतर बताइये।
2. ग्लोब का मॉडल बनाइए।

पृथ्वी पर ताप कटिबंध

1. पृथ्वी अपने काल्पनिक अक्ष पर लम्बवत से 23½° के कोण पर झुकी हुई सूर्य का चक्कर लगाती है।
2. चक्कर के समय पृथ्वी के धरातल पर वर्ष के विभिन्न समय/काल में सूर्य की किरणों का कोण बदलता रहता है। इससे सूर्य से प्राप्त ऊष्मा (गर्मी) में अंतर होता है।
3. पृथ्वी पर ऊष्मा की मात्रा के आधार पर ताप कटिबंध पाये जाते हैं।
4. कर्क वृत्त 23½° उत्तरी तथा मकरवृत्त 23½° दक्षिणी के बीच पूरे वर्ष सर्वाधिक ऊष्मा होती है। इसे ऊष्ण कटिबंध कहते हैं।
5. उत्तरी तथा दक्षिणी गोलार्द्धों में 23½° अक्षांश से 66½° अक्षांश तक शीतोष्ण कटिबंध होता है। यहाँ पर न अधिक सर्दी और न अधिक गर्मी पड़ती है।
6. दोनों गोलार्द्धों में 66½° अक्षांश से ध्रुवों तक क्षेत्र शीत कटिबंध कहा जाता है। यहाँ पूरे वर्ष सर्वाधिक ठंड रहती है।

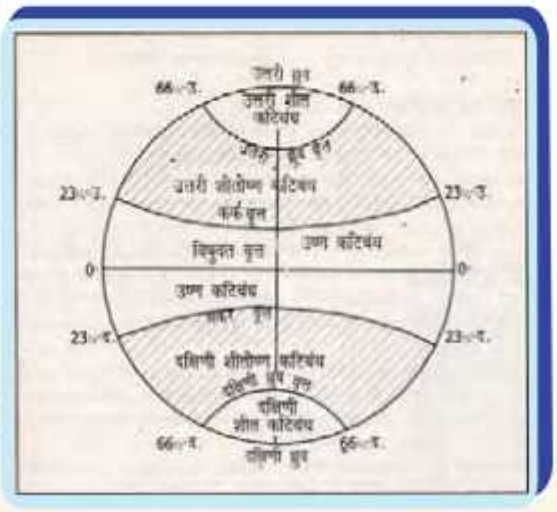

ताप कटिबंध

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए–
   1. पृथ्वी अपने अक्ष पर लम्बवत से कितने डिग्री के कोण पर झुकी हुई है?
   2. अक्षांश वृत्त एवं देशान्तर की दो–दो विशेषताएँ लिखिए।
   3. प्रधान मध्याह्न देशान्तर किस स्थान से गुजरती है?
   4. भारत किस गोलार्द्ध में स्थित है?।
   5. पृथ्वी पर कितने ताप कटिबंध हैं? उनके नाम लिखिए।

2. निम्नलिखित में रिक्त स्थान भरिए–
   1. सभी अक्षांश एक दूसरे के ..... होते हैं।
   2. ..... पृथ्वी के दोनों ध्रुवों से समान दूरी पर होती है।
   3. 23½° अक्षांश तथा ..... अक्षांश के बीच शीतोष्ण कटिबंध होता है।

3. निम्नलिखित में सही के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–
   1. देशान्तर पूर्व–पश्चिम दिशा में होते हैं। ( )
   2. भूमध्य वृत्त पृथ्वी पर सबसे बड़ा वृत्त होता है। ( )
   3. अक्षांश पूर्व–पश्चिम दिशा में होते हैं। ( )
   4. ऊष्ण कटिबंध 23½° उत्तरी तथा 23½° दक्षिणी अक्षांशों के मध्य स्थित है। ( )

4. निम्नलिखित भौगोलिक तथ्यों के प्रतीक चिह्न बनाइए–

   (1) नहर (2) मन्दिर

   (3) बस्ती (4) अंतर्राष्ट्रीय सीमा

5. भारत के मानचित्र को एटलस से ट्रेस कीजिए। मानचित्र पर दिए मापक को भी लिखें। इस पर दिल्ली, श्रीनगर, ईटानगर, चेन्नई तथा अहमदाबाद भी दर्शाइए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–
   1. दिल्ली से चेन्नई किस दिशा में है?
   2. अहमदाबाद से ईटानगर किस दिशा में अवस्थित है।
   3. श्रीनगर से चेन्नई की दूरी कितने किलोमीटर है।

6. स्वयं करके देखें–

   अ. पृथ्वी के वृत्तीय चित्र पर अक्षांशों तथा देशान्तरों का जाल बनाइए। इस पृथ्वी के वृत्तीय चित्र पर भूमध्यवृत्त, प्रधान, मध्याह्न देशान्तर, उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव की स्थिति दिखाइए।

   ब. पृथ्वी के तापकटिबंध का मॉडल तैयार करें।

7. चर्चा करें–

   हमें कैसे पता चला कि पृथ्वी का अपने अक्ष पर झुकाव 23½° का है?

6 पृथ्वी की गतियाँ

प्रस्तावना

हमारे सौरमंडल में आठ ग्रह और अनेक उपग्रह हैं। सभी ग्रह अपनी धुरी पर गतिमान हैं और सूर्य के चारों तरफ भी घूमते हैं। पृथ्वी भी उनमें से एक है। पृथ्वी की दो गतियाँ हैं: घूर्णन और परिक्रमण। आओ, पृथ्वी की इन गतियों के विषय में जानें।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ से हम –

1. पृथ्वी की घूर्णन गति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. पृथ्वी की परिक्रमण गति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. दिन–रात की अवधारणा को समझ सकेंगे।
4. मौसम परिवर्तन की अवधारणा को समझ सकेंगे।
5. दिन–रात की अवधि के घटने–बढ़ने के कारण को समझ सकेंगे।
6. सूर्य के उत्तरायण एवं दक्षिणायन के विषय में जान सकेंगे।

पृथ्वी की गतियाँ

दैनिक गति
- घूर्णन / परिभ्रमण
- पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूमना (परिणामः दिन और रात का होना)

वार्षिक गति
- परिक्रमण
- पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाना (परिणामः ऋतु परिवर्तन का होना)

पृथ्वी की घूर्णन/परिभ्रमण गति (Rotation)–

पिछले सप्ताह सोहन अपनी माँ के साथ मेला देखने गया था। उसने मेले से बच्चों के खेलने की कई चीजें खरीदी। इनमें एक लट्टू भी था। एक दिन जब वह लट्टू चला रहा था तब उसने देखा की लट्टू अपनी कीली पर घूम रहा है। कभी–कभी लट्टू एक अनिश्चित मार्ग के सहारे आगे भी बढ़ रहा है।

उसने अपने पिताजी से पूछा, जब मैं लट्टू चलाता हूँ तो यह दो प्रकार से गति करता है। एक तो यह अपनी कीली पर घूमता है और साथ ही साथ यह आगे भी बढ़ता है। पिताजी, लट्टू की इन दो गतियों को क्या कहा जायेगा?

पिताजी ने कहा – सोहन! क्या तुम्हें पृथ्वी की दो गतियों के बारे में जानकारी है। सोहन ने उत्सुकता से पूछा– पिताजी! क्या पृथ्वी भी गति करती है? पिताजी ने उसे बताया कि जिस प्रकार लट्टू अपनी कीली पर घूमने के साथ–साथ आगे बढ़ता है, ठीक उसी प्रकार से पृथ्वी भी दो रूपों में गति करती है। एक तो वह अपने अक्ष पर घूमती है और दूसरे वह एक निश्चित कक्षा में सूर्य के चारों ओर भी घूमती है।

पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने को क्या कहते हैं? पिताजी!

बेटा! पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने को परिभ्रमण या घूर्णन कहते हैं।

फिर पृथ्वी के एक निश्चित कक्षा में सूर्य के चारों ओर घूमने को क्या कहते हैं? पिताजी।

पृथ्वी के एक निश्चित कक्षा में सूर्य के चारों ओर घूमने को 'परिक्रमण' कहते हैं बेटा।

"घूर्णन – पृथ्वी का अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व को घूमना"

परिभ्रमण या घूर्णन गति में पृथ्वी अपने अक्ष पर लट्टू की तरह घूमती है। यह पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। एक घूर्णन की अवधि लगभग 24 घण्टे है। सोहन ने पूछा– घूर्णन से क्या होता है? पिताजी! पिताजी ने समझाते हुए कहा– घूर्णन से दिन–रात बनते हैं। घूर्णन के समय पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने होता है वह भाग सूर्य का प्रकाश प्राप्त करता है। इससे उस भाग पर दिन होता है। पृथ्वी का पीछे (विपरीत दिशा) वाला भाग सूर्य का प्रकाश प्राप्त नहीं कर पाता। अतः वहाँ रात होती है। (इस स्थिति को समझने के लिए ग्लोब का प्रयोग अवश्य करें।)

क्रियाकलापः दिन–रात का होना

परिभ्रमण/घूर्णन के द्वारा दिन–रात कैसे होते हैं, समझने के लिए निम्नलिखित सामग्री की सहायता लीजिए–

विचारें!
यदि पृथ्वी घूर्णन न कर रही होती तो क्या होता?

पृथ्वी को दर्शाने के लिए एक गेंद लें तथा सूर्य को दर्शाने के लिए एक जलती मोमबत्ती। गेंद पर एक शहर विशेष को दर्शाने के लिए एक निशान लगाइये। अब गेंद को इस प्रकार रखें कि शहर में अंधेरा हो। गेंद को अब बांए से दांए घुमाइये। जैसे ही आप गेंद को थोड़ा घुमायेंगे तो शहर पर सूर्योदय होगा फिर दिन का दोपहर होगा। यदि घूमना जारी रखते हैं तो शहर धीरे–धीरे सूर्य से दूर होता चला जाता है। इसे सूर्यास्त कहते हैं।

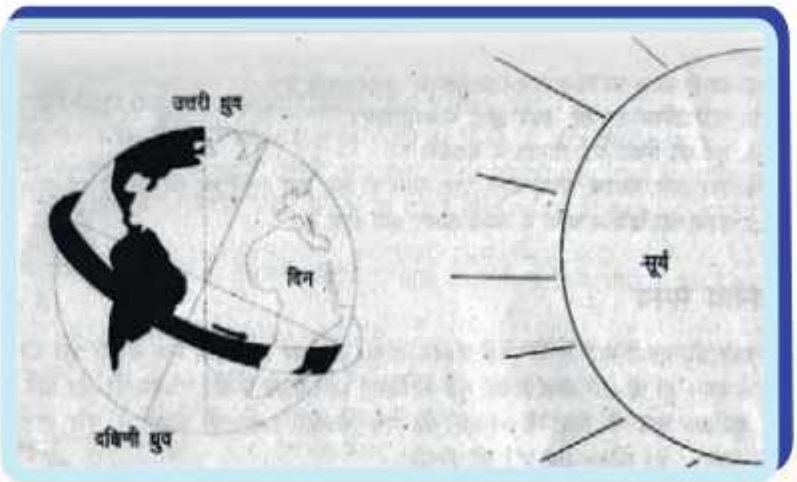

दिन–रात का होना

क्रियाकलाप–
समाचार पत्रों से सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय नोट करें और निष्कर्ष निकालें कि दिन की लंबाई घट या बढ़ रही है।

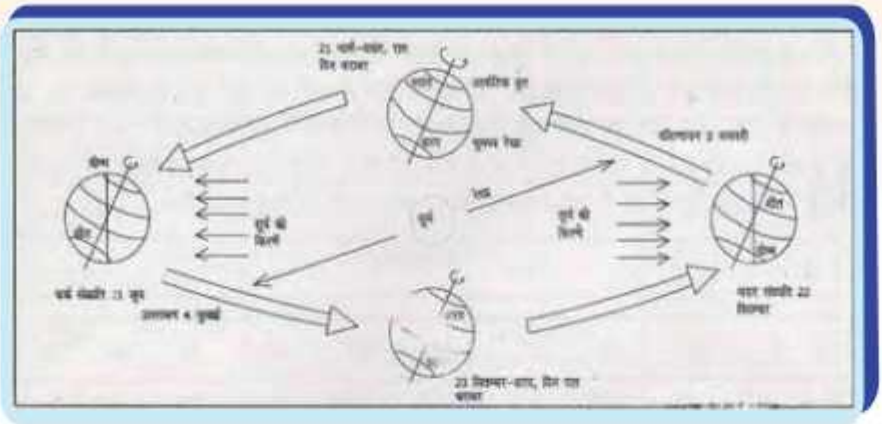

पृथ्वी का परिक्रमण

पृथ्वी की परिक्रमण गति–

परिक्रमण में पृथ्वी अपनी कक्षा पर सूर्य के चारों ओर घूमती है। पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा 365 दिन 6 घंटे में पूरा करती है। सुविधा के लिए इसे हम 365 दिन या एक वर्ष कहते हैं। 6 घंटे का अतिरिक्त समय प्रति चौथे वर्ष में जुड़ जाता है जो 366 दिन का होता है। 366 दिन के इस वर्ष को अधिवर्ष / लीप वर्ष कहते हैं। अधिवर्ष / लीप वर्ष में फरवरी 29 दिनों की होती है। अधिवर्ष / लीप वर्ष यह प्रति चौथे वर्ष आता है। आइये अब हम पृथ्वी की परिक्रमण गति के बारे में चर्चा करें।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पूरे वर्ष मौसम एक जैसा नहीं रहता। ऋतु परिवर्तन होता रहता है। यह ऋतु परिवर्तन पृथ्वी के अक्षीय झुकाव तथा परिक्रमण के कारण होता है।

क्या आप जानते हैं ?

पृथ्वी का अक्ष पृथ्वी के कक्षा तल पर 66½° का कोण बनाता है। (पृथ्वी का झुकाव 23½° है, अतः 90° – 23½° = 66½°)

परिक्रमण के कारण किस प्रकार से ऋतु चक्र बनता है। या ऋतु चक्र की अवधारणा को आपके सामाजिक विज्ञान के अध्यापक अधिक बेहतर तरीके से समझा सकेंगे।

परिक्रमण के दौरान सूर्य एवं पृथ्वी की सापेक्षिक स्थितियों में परिवर्तन होता रहता है। सूर्य कभी कर्क वृत्त, कभी विषुवत वृत्त और कभी मकर वृत्त पर लम्बवत् चमकता है। इसी कारण ऋतु परिवर्तन होता है। यह सब पृथ्वी के अक्षीय झुकाव एवं परिक्रमण के कारण ही होता है।

एक विद्यार्थी ने अपने शिक्षक से पूछा – सर! जब सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् चमकता है तो इस स्थिति को क्या कहते हैं?

शिक्षक ने बताया – प्यारे बच्चो! जब सूर्य 21 जून को कर्क वृत्त पर लम्बवत् चमकता है, तो इस स्थिति को उत्तरी अयनांत कहते हैं। इस समय उत्तरी गोलार्द्ध का झुकाव सूर्य की ओर होता है। सूर्य इस समय उत्तरी गोलार्द्ध में अधिक समय तक चमकता है। इससे उत्तरी गोलार्द्ध में दिन लम्बे और गर्म होते हैं।

पृथ्वी के अक्ष और कक्षा तल पर झुकाव की स्थिति

क्या आप जानते हैं ?

21 जून को आर्कटिक वृत्त पर सूर्य अस्त नहीं होता।

फिर दूसरे विद्यार्थी ने उत्सुकता से पूछा कि जिस समय सूर्य मकर वृत्त पर लम्बवत् चमकता है, उस स्थिति को क्या कहते हैं? कृपया विस्तार से समझाइये।

शिक्षक ने कहा – प्यारे बच्चो! 22 दिसम्बर को सूर्य की किरणें मकर वृत्त पर लम्बवत् पड़ती हैं। इस दिन सूर्य की रोशनी दक्षिणी गोलार्द्ध में अधिक समय के लिए प्राप्त होती है। यही कारण है कि 22 दिसम्बर को दक्षिणी गोलार्द्ध में सबसे लम्बा दिन होता है। और उत्तरी गोलार्द्ध में इस दिन सबसे छोटा दिन होता है।

और विषुवत वृत्त पर सूर्य के लम्बवत् चमकने को क्या कहते हैं? सर जी!

शिक्षक ने बताया – बच्चो! जिन तिथियों में सूर्य की किरणें विषुवत वृत्त पर लम्बवत् पड़ती हैं उन्हें 'विषुव' कहते हैं। 23 सितम्बर और 21 मार्च दो ऐसी ही तिथियाँ हैं। इन दोनों ही तिथियों में सूर्य विषुवत वृत्त पर लम्बवत् चमकता है। इन दोनों तिथियों में ग्लोब पर दिन–रात लगभग बराबर होते हैं। दिन–रात के तापमान में भी अधिक अन्तर नहीं होता।

उत्तरी अयनांत – 21 जून की वह स्थिति, जिसमें सूर्य की किरणें कर्क वृत्त पर लम्बवत् पड़ती हैं।

दक्षिण अयनांत – 22 दिसम्बर की वह स्थिति जिसमें सूर्य की किरणें मकर वृत्त पर लम्बवत् पड़ती हैं।

विषुव – 23 सितम्बर एवं 21 मार्च की वे स्थितियाँ जिनमें सूर्य की किरणें विषुवत वृत्त पर लम्बवत् पड़ती हैं।

6.1 पाठगत प्रश्न

1. ग्रीष्म ऋतु में सबसे लंबा दिन किस तारीख को होता हैं?
2. किन दो तिथियों को पूरी पृथ्वी पर दिन–रात बराबर होते हैं?

दिल्ली में साल भर दिन-रात बराबर क्यों नहीं होते? – क्योंकि पृथ्वी की परिक्रमण गति एवं अक्षीय झुकाव के कारण दोनों ही गोलार्द्धों में सूर्य की किरणों का कोणीय झुकाव परिवर्तित होता रहता है। यह सूर्य की उत्तरायण एवं दक्षिणायन स्थितियों का परिणाम है।

जब सूर्य दक्षिणायन होता है, तो दक्षिणी गोलार्द्ध में सूर्य की किरणों का तिरछापन (कोणीय झुकाव) धीरे–धीरे कम होता जाता है। परिणाम स्वरूप दो बातें देखने को मिलती हैं–

1. **दक्षिणी गोलार्द्ध में किरणों का तिरछापन कम होने से अधिक ताप की प्राप्ति होती है।**
2. **सूर्य की किरणों के लम्बे समय तक चमकने से दिन की अवधि बढ़ जाती है।**

इसी प्रकार से जब सूर्य उत्तरायण होता है, तो उत्तरी गोलार्द्ध में अधिक ताप प्राप्त होता है। साथ ही दिन लम्बे होते हैं।

क्या आप जानते हैं?
सूर्य की उत्तरायण एवं दक्षिणायन यात्रा कर्क एवं मकर रेखाओं के बीच ही सम्पन्न होती है। इन दोनों वृत्तों के मध्य प्रत्येक स्थान पर सूर्य वर्ष में दो बार लम्बवत् चमकता है।

क्रियाकलाप

विद्यार्थी अपने घर या अपने दोस्त के घर में प्रातः एक नियत समय (मान लीजिए प्रातः 8 बजे) पूर्व दिशा की ओर खिड़की से आने वाली सूर्य की किरण को अंकित करें। अंकन का समय तथा तिथि अपनी पुस्तिका में लिखें। एक महीने बाद फिर उसी नियत समय (प्रातः 8 बजे) उसी खिड़की से घर में आने वाली सूर्य की किरण को अंकित करें। दोनों ही तिथियों के चिन्हित् बिंदु का तुलनात्मक

अध्ययन करें। अगर दीवार पर पड़ने वाली पहले दिन की किरण उत्तर तथा एक माह बाद की किरण दक्षिण है तो गर्मी का आगमन समझें। अगर पहले दिन की किरण दक्षिण है तथा एक माह बाद की किरण उत्तर है तो सर्दी का आगमन दर्शाता है।

इसी बीच एक अन्य विद्यार्थी ने पूछा– सर! मैंने सुना है कि ध्रुवों पर छः महीने का दिन और छः महीने की रातें होती हैं?

शिक्षक ने बताया कि प्यारे बच्चो! आप इस बात को भली भांति समझ चुके हैं कि पृथ्वी अपनी कक्षा में सूर्य की परिक्रमा करती है। उसे एक परिक्रमण में एक वर्ष का समय लगता है। पृथ्वी के अक्षीय झुकाव के कारण छः महीने उत्तरी गोलार्द्ध एवं छः महीने दक्षिणी गोलार्द्ध का झुकाव सूर्य की ओर होता है। जिन छः महीनों में उत्तरी गोलार्द्ध का झुकाव सूर्य की ओर होता है, उन छः महीनों तक सूर्य उत्तरी ध्रुव पर निरन्तर चमकता रहता है। परिणामस्वरूप वहाँ छः महीने तक दिन रहता है और दक्षिणी ध्रुव पर रात।

इसी प्रकार छः महीने दक्षिणी गोलार्द्ध का झुकाव सूर्य की ओर रहता है। अतः छः महीने तक दक्षिणी ध्रुव पर निरन्तर सूर्य चमकता रहता है। इस प्रकार छः महीने वहाँ दिन होता है और उत्तरी ध्रुव पर रात। (इस स्थिति को समझने के लिए ग्लोब का प्रयोग अवश्य करें)

विचारें!

आखिर हमें पृथ्वी के घूमने का आभास क्यों नहीं होता?

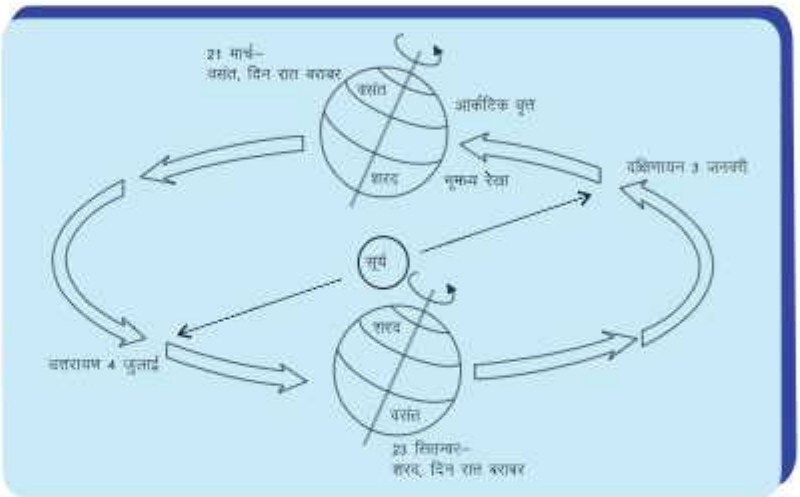

चित्र 1.8 : 21 मार्च और 23 सितंबर की स्थिति

क्या आप जानते हैं ?

कर्क एवं मकर वृत्त के मध्य प्रत्येक स्थान पर सूर्य की किरणें वर्ष में दो बार लम्बवत् चमकती है।

तालिका-3

विभिन्न अक्षांशों पर दिन-रात की अवधि

अक्षांश	ग्रीष्म ऋतु		शीत ऋतु	
	दिन की अवधि	रात की अवधि	दिन की अवधि	रात की अवधि
0°	12 घंटे	12 घंटे	12 घंटे	12 घंटे
23½°	13 घंटे 27 मि.	10 घंटे 33 मि.	10 घंटे 33 मि.	13 घंटे 27 मि.
50°	16 घंटे 18 मि.	7 घंटे 42 मि.	7 घंटे 42 मि.	16 घंटे 18 मि.
66½°	24 घंटे			24 घंटे
90°	6 महीने			6 महीने

6.2 पाठगत प्रश्न

1. पृथ्वी के ..... के कारण ध्रुवों पर छः महीने के दिन और छः महीने की रात होती है।
2. ध्रुवों पर छः महीने का दिन और छः महीने की रात पृथ्वी की ..... का परिणाम है।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए प्रश्नों में खाली स्थान भरिए–
   1. पृथ्वी का अक्ष पृथ्वी के कक्षा तल पर ..... का कोण बनाता है। $23\frac{1}{2}^\circ$, $66\frac{1}{2}^\circ$
   2. ..... तथा ..... को दिन–रात बराबर होते हैं। (21 मार्च एवं 23 सितम्बर, 22 दिसम्बर एवं 21 जून)
   3. पृथ्वी की ..... गति के कारण दिन–रात होते हैं। (दैनिक, मासिक, वार्षिक)
   4. पृथ्वी अपनी कक्षा पर ..... की परिक्रमा करती है। (सूर्य, चन्द्रमा)
   5. अधिवर्ष लीप वर्ष में फरवरी ..... दिनों की होती है। (28, 29)

2. सही विकल्प चुनिए–
   1. पृथ्वी की अक्षीय गति को कहते हैं?
      (क) परिक्रमण (ख) घूर्णन
   2. पृथ्वी के सूर्य के चारों ओर घूमने को कहते हैं?
      (क) घूर्णन (ख) परिक्रमण
   3. 21 जून को उत्तरी गोलार्द्ध की स्थिति क्या होगी?
      (क) विषुवत वृत्त की ओर झुकी हुई (ख) सूर्य की ओर झुकी हुई
   4. यदि पृथ्वी में घूर्णन गति नहीं होती तो
      (क) सम्पूर्ण पृथ्वी पर हमेशा दिन रहता (ख) सम्पूर्ण पृथ्वी पर हमेशा रात रहती
      (ग) आधी पृथ्वी पर हमेशा दिन रहता और आधी पर रात

3. निम्न वाक्यों के लिए असत्य/सत्य लिखिए–
   1. ध्रुवों पर छः महीने का दिन और छः महीने की रात होती है।
   2. 21 जून को सूर्य की किरणें मकर वृत्त पर लम्बवत् चमकती हैं।
   3. अधिवर्ष में 366 दिन होते हैं।
   4. पृथ्वी सूर्य से ताप एवं प्रकाश ग्रहण करती है।
   5. पृथ्वी की वार्षिक गति के कारण दिन–रात होते हैं।

4. सुमेलित कीजिए–

	स्तम्भ (क)		स्तम्भ (ख)
1.	पृथ्वी का अक्षीय झुकाव	(क)	ऋतुएँ
2.	पृथ्वी का परिक्रमण समय	(ख)	वर्ष
3.	पृथ्वी का घूर्णन	(ग)	दैनिक गति
4.	ऋतु परिवर्तन	(घ)	वार्षिक गति

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	_____			
2	_____			
3	_____			
4	_____			
5	_____			
6	_____			
7	_____			
8	_____			
9	_____			
10	_____			

7 विविधता की समझ

प्रस्तावना

समाज में अनेक प्रकार की विविधतायें पायी जाती हैं। विभिन्न प्रकार का भोजन, पहनावा व वेशभूषा और त्यौहार हमारे जीवन को समृद्ध बनाते हैं। इन विविधताओं के अलावा समाज में लिंग, जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र आदि के आधार पर भी विविधता पायी जाती है समाज में कई बार देखने को मिलता है कि कुछ लोगों के साथ अपनी इन पहचानों के कारण भेदभाव होता है। किन्तु संविधान, सरकार और राजनीतिक व्यवस्था समानता में विश्वास रखती है तथा समानता लाने में प्रयासरत है।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद–

1. विविधता के विभिन्न रूपों को पहचान पाएंगे।
2. विविधता तथा उससे व्यक्ति और समाज की पहचान के जुड़ाव को समझ पाएंगे।
3. समाज में व्याप्त विविधता तथा भेदभाव को महसूस कर पाएंगे।
4. भेदभाव की समाप्ति तथा समानता लाने के प्रयासों को समझ पाएंगे।

कक्षा में मनजीत अपना टिफिन खोलता है उसमें मक्के की रोटी और सरसों का साग है। अखिला इडली लायी है जबकि राहुल चावल लाया है। वे आपस में खाना बाँटकर खाते हैं। कुछ व्यंजनों को वे सभी पसन्द करते हैं तथा कुछ पर उनकी राय अलग–अलग है। मनजीत अध्यापिका से पूछता है कि मैडम हमारी मम्मी एक विशेष तरह का खाना ज्यादा देती है, ऐसा क्यों? अध्यापिका कहती है कि खाना हमारी व्यक्तिगत पसंद–नापसंद के अलावा हम जिस क्षेत्र या राज्य और भौगोलिक परिस्थितियों से आते हैं उससे भी जुड़ा होता है।

अध्यापिका– अखिला मूल रूप से केरल से है इसलिए आप देखते हैं कि उसके टिफिन में इडली, डोसा ज्यादा बार आता है, जबकि मनजीत, आपके टिफिन में पंजाब में प्रचलित व्यंजन अधिक होते हैं।

प्रस्तुत चित्र में कुछ व्यंजन दिए गए हैं। इनकी पहचान कीजिए और बताइये कि आपको कौनसा व्यंजन व खाने की चीज ज्यादा पसंद है?

भारतीय व्यंजन

भारतीय व्यंजन

जब आप यह प्रश्न अपने परिवार के सदस्यों तथा कक्षा मे अपने दोस्त और सहपाठियों से पूछेंगे तो पाएगें कि हमारा पसंदीदा भोजन कुछ लोगों के समान तथा कुछ से अलग होता है। अब आप इन प्रश्नों के उत्तर सहजता से दे सकते हो कि, क्या सभी लोगों की स्वादिष्ट या अच्छे भोजन की समान धारणा होती है? सभी की इस पर राय अलग–अलग हो सकती है। इस बात पर कुछ हद तक सहमति हो सकती है कि कौनसा भोजन पौष्टिक है तथा हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा है, तथा एक अन्य प्रकार का भोजन जैसे "जंक फूड" आपको अच्छा लग सकता है परन्तु वह हमारे स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है। हम कह सकते हैं कि पसंदीदा भोजन एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से एक परिवार का दूसरे परिवार से तथा एक राज्य या क्षेत्र के लोगों से भिन्न या बिल्कुल अलग हो सकता है। भोजन या व्यंजन का प्रचलन किसी समाज व राज्य के लोगों की पहचान को भी दर्शाता है।

पश्चिम बंगाल

राजस्थान

पंजाब

तमिलनाडु

पहनावा व वेशभूषा

भोजन के बाद यदि हम पहनावे की बात करें तो उसमें भी व्यक्तिगत पसंद, आयु के अनुसार तथा भौगोलिक आधार पर बड़ी भिन्नता पायी जाती है। नीचे दिए गए चित्रों में भारत के विभिन्न राज्यों का पहनावा दिखाया गया है। इससे हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि उस राज्य में सभी लोग ऐसे ही कपड़े पहनते हैं। प्रत्येक राज्य के लोगों का कुछ पारम्परिक पहनावा होता है। प्रत्येक परिवार, समाज, राज्य व देश में लोग अपनी पसंद के अनुसार अलग–अलग तरह के वस्त्र व पोशाक पहनते हैं। पहनावा भी काफी हद तक विशेषकर पारम्परिक पहनावा लोगों की पहचान से जुड़ा होता है।

आओ सीखें:–

शिक्षक कक्षा को एक बड़े घेरे में बैठाकर हर बच्चे से उसके राज्य में पहनी जाने वाली वेशभूषा और खानपान पर चर्चा करने को कहें, उसके बाद प्रत्येक विद्यार्थी निम्न प्रश्नों के उत्तर अपनी कापी में लिखें :–

प्रश्न– आप मूल रूप से किस राज्य से हैं, वहाँ का पारंपरिक भोजन व पहनावा क्या है?

शिक्षक कक्षा के हर बच्चे से उसकी पसंदीदा पोशाक एवं भोजन की सूची बनवाएं और उसके आधार पर चर्चा करवाएं कि :–

प्रश्न– आप यह कैसे कह सकते हैं कि भोजन और पहनावे को हमारी पसंद अलग–अलग होती है?

त्योहार और उत्सव

भारत को त्योहारों का देश कहा जाता है। यहाँ जाति, धर्म के साथ–साथ भौगोलिक विविधता भी व्याप्त है यही कारण है कि यहाँ वर्ष भर कई त्योहार मनाये जाते हैं। होली, दिवाली, क्रिसमस, ईद, गुरू पर्व आदि अलग धर्मों में विश्वास रखने वाले लोगों के त्योहार हैं। इसके अलावा कुछ त्योहार ऐसे हैं जिन्हें देश के सभी लोग मनाते हैं चाहे वे किसी भी जाति, धर्म या क्षेत्र के हों। इन्हें राष्ट्रीय त्योहार कहा जाता है, गणतंत्र दिवस (26 जनवरी), स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) तथा गाँधी जयन्ती (2 अक्टूबर) हमारे राष्ट्रीय त्योहार है। राष्ट्रीय त्योहार लोगों में एकता लाते हैं तथा राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा देते हैं।

खान–पान व पहनावा में हमारी पसन्द शामिल होती है लेकिन समाज में हमारी कुछ पहचान ऐसी होती है जो हमें जन्म से प्राप्त होती है। हम जिस परिवार, समुदाय और समाज में जन्म लेते है उसकी भाषा, संस्कृति, जाति, आस्था आदि सामान्यतः हमें जन्म से प्राप्त होती है। इसी तरह लड़का या लड़की के रूप में पहचान भी प्रकृति से या जन्मजात है। समाज में हमारी अलग–अलग पहचान होती है। उसका आधार लैंगिक, जातिगत, भाषाई, सांस्कृतिक या धार्मिक हो सकता है। कई बार हमारी पहचानों के कारण हमें भेदभाव का सामना भी करना पड़ता है।

पूर्वाग्रह

सामान्यतः लड़के ऐसे होते हैं, लड़कियाँ वैसी होती है, इसी तरह किसी जाति, धर्म, क्षेत्र के लोगों के विषय में हम पहले से कोई राय बना लेते हैं तथा उसे अपने दिमाग में बिठा लेते हैं। यह धारणा कई प्रकार की हो सकती है। आप किसी राज्य में घूमने गये, स्टेशन पर उतरते ही आपको एक दो बुरे आदमी मिल गये तो क्या आपकी यह धारणा बन जाती है कि उस राज्य के सभी लोग बुरे हैं? वास्तव में यदि हम गहराई से सोचे तो समझ पायेंगे कि हर समाज में अच्छे और बुरे इंसान होते हैं। इसलिये किसी समाज, समुदाय, भाषा या संस्कृति से सम्बद्ध व्यक्ति के विषय में पूर्वाग्रह नहीं रखना चाहिये। पूर्वाग्रह व्यवहारिक जीवन में भेदभाव को जन्म देता है।

समाज में भेदभाव कई रूपों में देखने को मिलता है–

लैंगिक असमानता– इंसान लड़का या लड़की के रूप में जन्म लेता है लेकिन समाज में लड़का और लड़की के विषय में अनेक पूर्वाग्रह होते हैं जिसके कारण लैंगिक भेदभाव जन्म लेता है। कई बार हम अपने पूर्वाग्रह के कारण लड़कियों और लड़कों से एक विशेष तरह के व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं। हमें यह स्वीकार करना चाहिये कि कोमल और संवेदनशील जैसे शब्द लड़कों के लिये भी प्रयोग में लाये जा सकते हैं तथा कठोरता, वीरता, दृढ़ता जैसे गुण लड़कियों में भी पाये जा सकते हैं। यह समाज और इतिहास की हमारी समझ से सिद्ध हो जाता है। माता–पिता या अभिभावक को चाहिए कि अपने बच्चों में कभी भी लैंगिक भेदभाव न करें। दोनों को समान महत्व दें।

आओ जानें:–

अपने आस–पास मौजूद लैंगिक समानता और असमानता का एक उदाहरण दीजिए व कक्षा में इसकी चर्चा कीजिए?

जातिगत भेदभाव

यद्यपि भारतीय संविधान जाति आधारित भेदभाव को प्रतिबंधित करता है लेकिन व्यवहार में हमारा समाज विभिन्न जातियों और उपजातियों में बँटा हुआ है। हम जानते हैं और यह कभी कभी भेदभाव को बढ़ाता है। समाज में लोग अपनी आजीविका कमाने के लिए अलग–अलग तरह के काम करते हैं। समाज के सुचारू रूप से संचालन के लिये ये सभी काम आवश्यक है। एक सफाई सहायक और अध्यापक का कार्य समाज के लिए बराबर महत्व रखते हैं। लेकिन व्यवहार में लोग ऐसा नहीं मानते। वे कुछ कामों में लगे लोगों को ज्यादा महत्व देते हैं जबकि कुछ अन्य कामों में लगे लोगों के साथ भेदभाव करते हैं। संविधान छुआछूत या अस्पृश्यता को समाप्त करता है लेकिन समाज के कुछ स्तरों में यह बुराई अभी भी मौजूद है।

धर्म और आस्था

अलग–अलग धर्म में आस्था रखने वाले लोगों के पूजा स्थल व पूजा अर्चना की पद्धति भी भिन्न होती है। केवल अपने धर्म को सही मानना तथा अन्य को गलत करार देना एक साम्प्रदायिक सोच है तथा यह धार्मिक आधार पर भेदभाव को जन्म देती है। भारत में विश्व में पाये जाने वाले लगभग सभी प्रमुख धर्मों के लोग रहते हैं तथा भारत का संविधान सभी धर्म के लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता और समान अधिकार प्रदान करता है। इसलिए भारत को पंथ निरपेक्ष या धर्म निरपेक्ष राज्य के रूप में जाना जाता है।

मन्दिर

मस्जिद

गुरुद्वारा

गिरजाघर

धार्मिक स्थल

भाषायी विविधता

भारत में अनेक भाषा और बोलियाँ बोली जाती है। कई बार एक भाषा को अन्य से श्रेष्ठ मान लिया जाता है, जैसा कई बार भारत में अंग्रेजी को स्थानीय बोली और भाषा से उच्चतर माना जाता है, परन्तु यह एक तरह का पूर्वाग्रह है क्योंकि प्रत्येक भाषा और बोली लोगों को स्वयं को व्यक्त करने का माध्यम होती है जो लोग जिस भाषा को बोलते हैं उनके लिए वही अभिव्यक्ति का माध्यम है और वही भाषा श्रेष्ठ भी है।

राष्ट्रीय पहचान

विविधता हमारे जीवन को समृद्ध करती है पर कई बार विविधता में सामंजस्य स्थापित न कर पाने के कारण भेदभाव और संघर्ष की स्थिति भी पैदा हो जाती है।

हमारा देश भारत, विविधता में एकता का प्रतीक माना जाता है। हमारी कुछ अलग–अलग पहचान हो सकती है लेकिन कई ऐसी चीजें भी है जो जाति, धर्म, वर्ग, भाषा, क्षेत्र की पहचान से ऊपर राष्ट्रीय पहचान को बढ़ावा देती है। राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान हमें आपस में एक राष्ट्र के नागरिक के रूप में जोड़ते है। राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय चिह्न व प्रतीक राष्ट्रगान, हमें एक राष्ट्र के रूप में एकता के सूत्र में बांधते हैं वे हमारी पहचान है। हमें इनका सम्मान करना चाहिए।

राष्ट्रीय–चिन्ह

राष्ट्रीय–ध्वज

राष्ट्रीय–फूल (कमल)

राष्ट्रीय–पक्षी (मोर)

राष्ट्रीय–पशु (बाघ)

हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन वास्तव में स्वतंत्रता व समानता के लिये संघर्ष था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान सभा द्वारा भारत देश के लिये एक आधुनिकतम संविधान बनाया गया, जिसने समानता के सिद्धान्त को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की। संविधान द्वारा समाज में सभी को समान अधिकार तथा सभी को समान रूप से मताधिकार, जिसे सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार कहा जाता है, प्रदान किया गया। इस प्रकार भारत में राजनीतिक समानता स्थापित की गयी, लेकिन सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में असमानता अभी भी देखने को मिलती है। समाज में भेदभाव अभी समाप्त नहीं हुये इसलिये समाज में कई स्तरों पर भेदभाव के विरूद्ध तथा समानता के लिये, जहाँ एक ओर राजनीतिक स्तर पर अनेक प्रयास किये गये है वही इस उद्देश्य के लिए संघर्ष और आन्दोलन भी जारी है।

आओ समझें:–

अभ्यास

1. चर्चा कीजिए कि भारत का संविधान समानता को बढ़ावा देता है?
2. आपको अपने आसपास के समाज में किस प्रकार की विविधता नज़र आती हैं। उन्हें सूचीबद्ध कीजिए।
3. भारत में मनाए जाने वाले त्योहारों की सूची तैयार कीजिए।
4. किन्ही दो राष्ट्रीय पहचानों के नाम लिखिए।

कार्यपत्रक

1. निम्न में सही/गलत छांटिये–

   (क) 15 अगस्त को हमारा स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। ( )

   (ख) जन गण मन अधिनायक जय हो, हमारा राष्ट्र गीत है। ( )

   (ग) भारत में संविधान समानता स्थापित करता है। ( )

   (घ) भारतीय समाज में असमानता व भेदभाव देखने को मिलता है। ( )

2. निम्न बॉक्स में चित्र बनाकर अपना पसंदीदा भोजन और पहनावा बताइये तथा कक्षा में अपने सहपाठियों द्वारा व्यक्त की गयी पसन्द और आपकी अपनी पसन्द में आपको क्या अन्तर नज़र आता है।

   (क) मेरा पसंदीदा फल

   घ मेरा पसंदीदा फूल

   (ख) मेरा मनपसन्द खाना

   ड़ मेरी पसंदीदा किताब

   (ग) मेरी मनपसन्द ड्रेस या कपड़े

   च मेरा पसंदीदा मौसम

3. **आओ करें**

   कक्षा में समूह बनाकर अपने–अपने राज्य के विभिन्न त्यौहारों पर गाए जाने वाले लोकगीत गाएँ।

8 लोकतांत्रिक सरकार

प्रस्तावना

- आपने "सरकार" शब्द का ज़िक्र अक्सर अखबारों व चर्चा में सुना होगा।
- इस पाठ में हम समझेंगे कि सरकार क्या है? और यह हमारे जीवन में क्यों महत्वपूर्ण है?
- हम सरकार के विभिन्न स्तरों को भी जानेंगे।
- अलग–अलग प्रकार की सरकारों जैसे लोकतांत्रिक सरकार, राजतंत्रीय सरकार व तानाशाही सरकार के बीच अंतर और लोकतांत्रिक सरकार की विशेषताओं को भी हम यहाँ जान सकेंगे।
- लोकतंत्र के महत्व तथा मानव अधिकारों की रक्षा में इसके महत्व को समझ सकेंगे।

प्रत्येक देश में विभिन्न विषयों पर निर्णय लेने एवं काम करने के लिए सरकार की जरूरत होती है। ये निर्णय व कार्य सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून व्यवस्था आदि से सम्बन्धित हो सकते हैं। अर्थात् सरकार ही तय करती है कि सड़क कहाँ बनाई जाएगी, स्कूल कहाँ खोले जायेंगे, बिजली की दर क्या होगी, आदि। सरकार का कार्य केवल यहाँ तक सीमित नहीं है बल्कि विभिन्न सामाजिक समस्याओं जैसे कि– बंधुवा मज़दूरी, बाल मज़दूरी, बुजुर्गों के लिये स्वास्थ्य सुविधा आदि का समाधान करना भी उसका दायित्व है। यह कार्य वह अनेक कार्यक्रम चलाकर व नीतियों को लागू कर करती है। जैसे कि डाक एवं रेल सेवाएं चलाना, अस्पताल खोलना, श्रम कानून बनाना आदि। सीमा की सुरक्षा करना व दूसरे देशों से शान्तिपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखना भी सरकार की ज़िम्मेदारी है। यह सुनिश्चित करती है कि प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़, सुनामी, भूकम्प आदि से पीड़ित लोगों की सहायता करें। नागरिकों के आपसी विवादों का समाधान सरकार का अंग न्यायपालिका करती है।

आप किस विद्यालय में पढ़ेंगे? अस्वस्थ होने पर किस अस्पताल में जायेंगे? किन पड़ोसियों से सम्बन्ध रखेंगे? रात में किस समय तक आप घर से बाहर रह सकते हैं? आदि निर्णय आपके घर में कौन लेता है? क्या इन निर्णयों पर आपकी राय ली जाती है? क्या मम्मी–पापा घर में सरकार की तरह निर्णय लेते हैं व काम करते हैं। अपने साथियों से चर्चा करें।

सरकार के स्तर

सरकार के इतने सारे कार्यों को देखकर आपको आश्चर्य हुआ? इतना अधिक कार्य सरकार कैसे कर पाती है? वास्तव में सरकार इन कार्यों को विभिन्न स्तरों– स्थानीय स्तर, राज्य स्तर व राष्ट्रीय स्तर पर बाँट देती है। स्थानीय स्तर से तात्पर्य गाँव व नगर से है। राज्य स्तर का मतलब पूरे प्रदेश से है, जैसे दिल्ली की सरकार पूरे प्रदेश में काम करती है। जबकि राष्ट्रीय स्तर की सरकार पूरे देश से सम्बन्धित होती है।

राष्ट्रीय स्तर (भारत)
↑
राज्य स्तर
↑
(उ.प्र., दिल्ली, महाराष्ट्र, केरल आदि)
↑
स्थानीय स्तर
(पंचायत, नगरपालिका व नगर निगम)

8.1 आओ जाने :–

1. नीचे दी गई तालिका में दिये गये कथनों पर नज़र डालें। क्या आप पहचान सकते हैं कि वे सरकार के किस स्तर से सम्बन्धित हैं? उनके आगे निशान लगाइये।

	राष्ट्रीय	राज्यीय	स्थानीय
(क) 2000 रूपये का नया नोट शुरू करने का निर्णय			
(ख) मेट्रो सेवा शुरू करने का निर्णय			
(ग) गाँव में नलकूप लगाने के स्थान का निर्णय			
(घ) चीन की सरकार से सीमा विवाद पर वार्ता			
(ङ) पश्चिम बंगाल में महिलाओं को पंचायतों में 50 प्रतिशत आरक्षण देने का निर्णय			

2. मालूम करें आप जिस क्षेत्र में रहते हैं वहाँ से राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर व स्थानीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति के नाम क्या हैं?

जैसा कि हम जानते हैं कि सरकार का अंग, विधायिका कानून बनाती है। कार्यपालिका कानून को लागू करती है। न्यायपालिका सुनिश्चित करती है कि कानून का अनुपालन ठीक ढंग से हो। अर्थात् नागरिक व कार्यपालिका दोनों ही कानून का सही ढंग से पालन करें। सरकार या नागरिक किसी एक पक्ष द्वारा कानून का पालन न किए जाने की स्थिति में दूसरा पक्ष अदालत की शरण में जा सकता है।

सरकार के अंग

- विधायिका (कानून बनाना)
- कार्यपालिका (कानून लागू करना)
- न्यायपालिका (विवाद सुलझाना)

1. इन चित्रों को पहचानें:–

(क)

(ख)

(ग)

3. **आओ करें**

	(क)	(ख)	(ग)
चित्र का नाम	.....	.....	.....
सरकार के अंग का नाम	.....	.....	.....

परन्तु यहाँ यह प्रश्न उठता है कि सरकार को निर्णय लेने व कानून का पालन करवाने अर्थात् उन्हें बाध्य बनाने की शक्ति कौन देता है? इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि उस देश में कैसी सरकार है? लोकतंत्र में तो लोग ही अपने मतों के माध्यम से अपने प्रतिनिधि चुनते हैं तथा चुने हुये प्रतिनिधि ही सरकार बनाते हैं। इस प्रकार लोकतांत्रिक सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी होती हैं। चूँकि इन निर्वाचित प्रतिनिधियों को अधिकतम पाँच वर्ष बाद फिर से जनता के पास जाना होता है। अतः सरकार को अपने प्रत्येक निर्णय या उठाये गये कदम के बारे में जनता को सफ़ाई देनी होती है।

सरकार का एक अन्य प्रकार राजतंत्र होता है, जिसमें राजा या रानी को ही निर्णय लेने व कानून बनाने तथा कानून का पालन कराने का अधिकार होता है। यह अधिकार उन्हें वंशानुगत आधार पर प्राप्त होता है। राजा या रानी निर्णय लेने से पूर्व चार–पाँच लोगों के समूह से सलाह ले सकते हैं, परन्तु अंतिम निर्णय राजा या रानी का ही होता है। राजा या रानी किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं होते हैं अर्थात् न तो उन्हें अपने निर्णय का आधार बताना होता है और न ही अपने निर्णय पर सफ़ाई देनी होती है। यह स्थिति असीमित राजतंत्र की है। संवैधानिक राजतंत्र जैसे ब्रिटेन में राजा या रानी को मनमानी करने का अधिकार नहीं होता वे संविधान के अधीन रहकर कार्य करते हैं। राजतंत्रीय सरकार से मिलता–जुलता सरकार का एक अन्य रूप तानाशाही सरकार का होता है। इसमें तानाशाह ताकत के बल पर शासक बन बैठता है। वह किसी के प्रति ज़िम्मेदार नहीं होता। वह अपने निर्णय ताकत के बल पर ही मनवाता है।

सरकार के तीन रूपों– लोकतांत्रिक, राजतंत्रीय व तानाशाही के अध्ययन से स्पष्ट है कि केवल लोकतांत्रिक सरकार में ही सहमति, विचार विमर्श व विरोध की अनुमति है।

8.2 आओ समझें

1. सुमेलित करें–

जनता के प्रति उत्तरदायी सरकार	राजतांत्रिक
वंशानुगत आधार पर शासक	तानाशाही
ताकत के बल पर शासक	लोकतांत्रिक

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
   (क) लोकतांत्रिक सरकार को पाँच वर्ष बाद पुनः .....के पास मत प्राप्त करने के लिये जाना होता है।
   (ख) ..... अपनी बात ताकत के बल पर मनवाता है।
   (ग) विरोध व असहमति जताने का अधिकार केवल ..... सरकार देती है।

विवादों का समाधान

आपने भारत की आज़ादी के किस्से अवश्य सुने होंगे। जिसमें सुना होगा कि किस तरह अंग्रेज भारतीय लोगों की न्यायोचित मांगों को भी ताकत के बल पर दबा देते थे। अकाल, बाढ़ व दूसरी आपदाओं के समय भी सरकारी धन का किस तरह अपव्यय करते थे। शांतिपूर्ण विरोध करने पर भी उसे हिंसा के बल पर दबा देते थे। ऐसा वह इसलिए करते थे क्योंकि उनके शासन का आधार जनता की इच्छा नहीं बल्कि ताकत थी।

आज़ादी के बाद भी हमारे देश में आपने अक्सर जातीय संघर्ष, धार्मिक व क्षेत्रीय उन्माद की खबरें सुनी होंगी। यह स्थिति लोगों के अंदर भय व असुरक्षा की भावना फैलाती है। लोकतांत्रिक सरकार की यह ज़िम्मेदारी होती है कि वह विवादों का समाधान समय रहते करें। वह सभी पक्षों को एक जगह बिठा कर विचार–विमर्श करवाती है ताकि विवाद का समाधान निकल सके।

3. **आओ करें**

   शिक्षक बच्चों को दिल्ली की विधानसभा के निर्वाचन क्षेत्रों के नाम बताएँ तथा बच्चों से दिल्ली के मानचित्र पर उनसे संबंधित विधान–सभा निर्वाचन क्षेत्र का नाम दर्शाएँ।

समानता एवं न्याय

लोकतांत्रिक सरकार के मुख्य विचारों में से एक है, उसका न्याय और समानता के प्रति वचनबद्ध होना। न्याय और समानता को अलग नहीं किया जा सकता। हमारे देश में अस्पृश्यता अर्थात् छुआछूत की प्रथा पर अब कानूनी रोक लगा दी गयी है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों को मंदिरों में प्रवेश की अनुमति नहीं थी। हमारे संविधान निर्माताओं ने इसे अमानवीय प्रथा कहा। न्याय तभी प्राप्त हो सकता है जब सब लोगों के साथ बराबरी का व्यवहार हो। शिक्षा का समान अवसर समानता और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए आवश्यक है।

सरकार समानता व न्याय की स्थापना के लिए विशेष प्रावधान करती है। हमारे समाज में लोग लड़कों की देखभाल लड़की से ज्यादा करते हैं। ऐसा गलत एवं अन्यायपूर्ण है। इसे दूर करने के लिये सरकार ने कई कदम उठाये हैं। जैसे– सरकारी संस्थानों एवं कॉलेजों में लड़कियों की फीस समाप्त या कम करने का प्रावधान किया गया है। सरकारी नौकरियों में महिलाओं को उम्र में छूट आदि अतिरिक्त सुविधायें दी गई हैं।

8.3 आओ समझें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
   - (क) छुआछूत की प्रथा पर अब ..... द्वारा रोक लगा दी गई है।
   - (ख) न्याय प्राप्ति के लिये ..... का होना आवश्यक है।
   - (ग) संविधान निर्माताओं ने छुआछूत की प्रथा को ..... प्रथा कहा।

बंधुता

लोकतांत्रिक सरकार की एक अन्य प्रमुख विशेषता बंधुता की भावना बढ़ाना है। हमारा देश विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग व क्षेत्रों में बँटा हुआ है। विभिन्न समुदायों में आपसी विश्वास को बढ़ाने तथा विरोधी विचारों का सम्मान करने के लिये बंधुता की भावना होना बहुत आवश्यक है। इससे राष्ट्रीय एकता विकसित करने में मदद मिलती है।

आओ समझें

1. हम अपने अड़ोस पड़ोस में मिलजुलकर कैसे रह सकते हैं चर्चा करें।
2. लोकतंत्र में विवादों का समाधान किस प्रकार किया जाता है?
3. आप अपने घर में मतभेद दूर करने के लिए क्या तरीका अपनाओगे?
4. लोकतंत्र को एक श्रेष्ठ शासन प्रणाली क्यों माना जाता है?
5. सरकार के कार्यों के सम्बन्ध में सही–गलत का चुनाव करें–
   - (क) नोट व सिक्के जारी करना।
   - (ख) जनता को शाकाहारी बनने के लिए कहना।
   - (ग) सार्वजनिक नलकूप की स्थापना।
   - (घ) पड़ोसी देशों से सम्बन्ध रखना।
   - (ङ) किसी धर्म विशेष को अपनाने के लिए कहना।
   - (च) मुफ्त शिक्षा का निर्णय लेना।
   - (छ) आपसी झगड़ों को सुलझाना।

क्रियाकलाप

शिक्षक कक्षा को तीन समूहों में विभाजित करें और कोई अखबार लेकर उसमें छपी खबरों को कार्यपालिका, न्यायपालिका, विधायिका के रूप में छाँटकर कक्षा में चर्चा करवाएँ।

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	_____			
2	_____			
3	_____			
4	_____			
5	_____			
6	_____			
7	_____			
8	_____			
9	_____			
10	_____			

कक्षा–7

भाग–2

9 नये विचार एवं सम्राट अशोक

प्रस्तावना

छठी शताब्दी ईसा पूर्व के इतिहास को महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है। इस काल में जरथुस्त्र, सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, महावीर और बुद्ध जैसे कई चिंतकों का उद्‌भव हुआ। उन्होंने जीवन के रहस्यों को समझने की कोशिश की। साथ–साथ वह इंसानों और संसार की व्यवस्थाओं को भी समझने की कोशिश कर रहे थे। जीवन का अर्थ, मृत्यु के बाद का जीवन, कर्मों की विचारधारा पर गहन विचार किया गया। भारत के महान् विचारक महात्मा बुद्ध और महावीर ने जीवन के दुःखों की मुक्ति के लिये, वेदों और आत्मा की प्रकृति, लौकिक सुखों पर अपने विचार व्यक्त किये। दोनों ही धर्मों ने आत्मज्ञान का रास्ता बतलाया। उस समय संस्कारों व अनुष्ठानों का बहुत बोलबाला था। इन धर्मों के संस्थापकों ने दुनिया के कल्याण के लिये राह दिखलायी। सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद बौद्ध धर्म अपना कर देश–विदेश में प्रचार किया। भारतीय समाज में इन दोनों धर्मों का योगदान उल्लेखनीय था।

अधिगम उद्देश्य

- जैन धर्म व बौद्ध धर्म के उद्‌भव को समझना।
- बुद्ध व महावीर की शिक्षाओं से अवगत कराना।
- इनके द्वारा स्थापित किये गये संघों की कार्यशैली से परिचित कराना।
- सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन के कारण आए राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तनों को पहचानना।

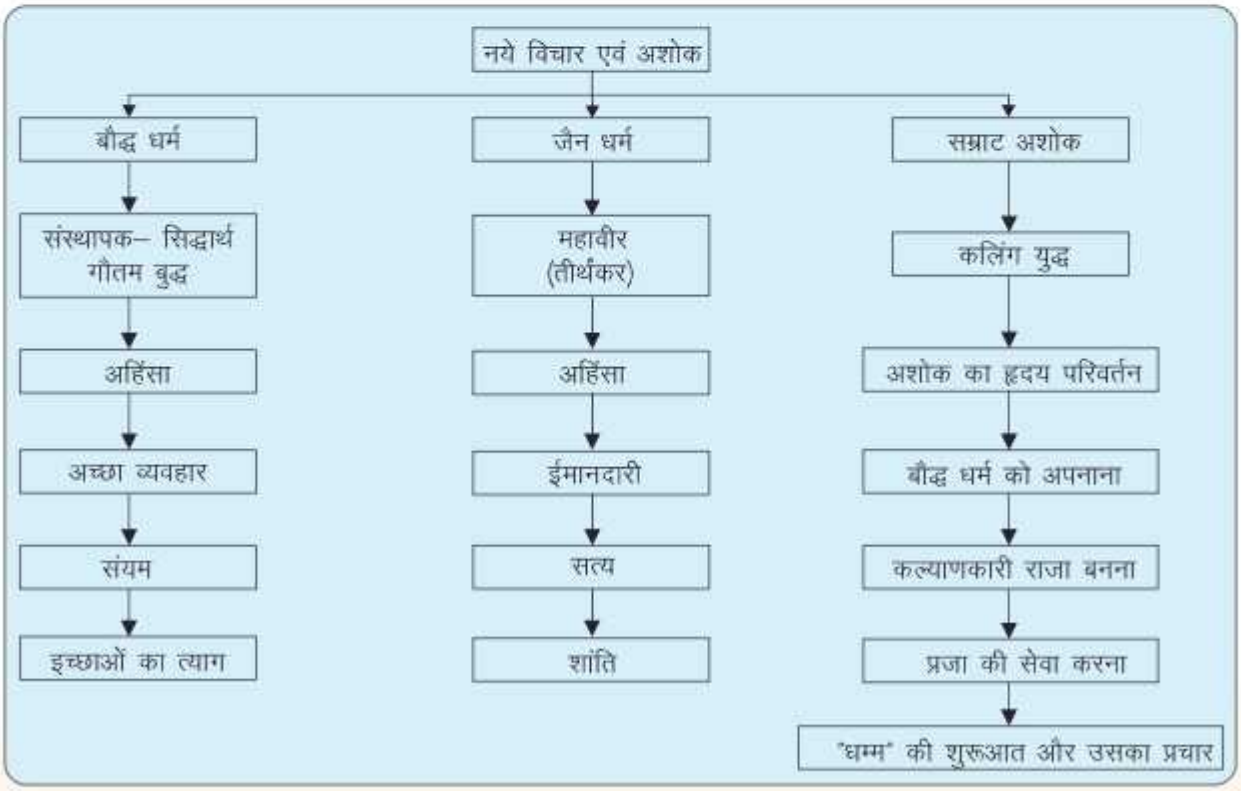

महात्मा बुद्ध की कहानी

बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ थे जिन्हें गौतमबुद्ध के नाम से भी जाना जाता है। उनका जन्म लगभग 2500 साल पहले हुआ था। यह वह समय था जब लोगों के जीवन में तेजी से बदलाव आ रहा था। महाजनपदों के राजा बहुत शक्तिशाली हो गये थे। नगर–गाँव दोनों में बदलाव आ रहा था। वे जीवन के सच्चे मतलब को भी जानने की कोशिश कर रहे थे।

बुद्ध क्षत्रिय थे और 'शाक्य' गण से संबंध रखते थे। उन्हें महल की चारदीवारी के अंदर सुख के साथ बड़ा किया गया। एक दिन जब वह शहर घूमने के लिए निकले तो उन्हें एक बूढ़ा आदमी, एक बीमार और एक मृतक को देखा तो उन्हें गहरा सदमा लगा। उन्हें महसूस हुआ कि आदमी की मृत्यु निश्चित है। उन्होंने ज्ञान की खोज के लिए परिवार व घर के सुखों को छोड़ दिया। उन्होंने सन्यास का रास्ता अपनाया और सत्य की खोज के लिए निकल पड़े।

उन्होंने गहन तपस्या कर अनेक विचारकों से बातचीत की। उन्होंने पीपल के नीचे कई दिनों तक तपस्या की। अंततः उन्हें बोधि यानी ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके बाद से वह बुद्ध के नाम से जाने गए। वह वाराणसी के पास स्थित सारनाथ गए, जहाँ उन्होंने प्रथम उपदेश पाँच ब्राह्मणों को दिया। उन्होंने अपना सारा जीवन लोगों को बौद्ध धर्म की शिक्षा देने में व्यतीत किया और कुशीनगर में महापरिनिर्वाण (मृत्यु) को प्राप्त किया।

अगर आप भी सिद्धार्थ की तरह आपकी पसंद के अनुसार सब कुछ दिया जाए पर बीमार, बूढ़े या मृत्यु को नहीं देख पाएं तो आप कैसा महसूस करेंगे?

सिद्धार्थ का तप

मुख्य बातें–

1. महात्मा बुद्ध का जन्म लुम्बिनी (नेपाल) में हुआ।
2. इनकी माता का नाम महामाया तथा पिता का नाम शुद्धोधन था।
3. महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्त पीपल वृक्ष की नीचे निरंजना नदी (फालगू नदी) के तट पर 'गया' (बिहार) में हुआ।
4. सारनाथ में पहला उपदेश दिया।
5. बौद्ध धर्म के तीन अंग हैं– बुद्ध, धम्म, संघ।
6. बौद्ध धर्म आत्मा को नहीं मानता है। ये पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।

सांसारिक दुःखों की मुक्ति के लिए बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग की बात की, ये साधन हैं–

(i) सम्यक दृष्टि (ii) सम्यक् संकल्प (iii) सम्यक् वाणी (iv) सम्यक कर्म (v) सम्यक् आजीव (vi) सम्यक व्यायाम (vii) सम्यक् स्मृति (viii) सम्यक समाधि

निर्वाण बौद्ध धर्म का परम लक्ष्य है जिसका अर्थ है जीवन मरण से मुक्ति, इसे सरल बनाने के लिए दस शील पर बल दिया है। (i) अहिंसा, (ii) सत्य (iii) अस्तेय (चोरी न करना) (iv) अपरिग्रह (किसी प्रकार की सम्पदा का संग्रह न करना) (v) मद्य सेवन न करना (vi) असमय भोजन न करना (vii) सुखप्रद विस्तर पर न सोना (viii) धन संचय न करना (ix) स्त्रियों से दूर रहना (x) नृत्य गान आदि से दूर रहना

गृहस्थों के लिए पाँच शील और संन्यासियों के लिए दस शील मानना अनिवार्य था।

महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध की शिक्षाएँ–

1. दुःखों का कारण हमारी इच्छाएँ हैं।
2. हम हमेशा चीजों को पाने की आशा करते रहते हैं, जिसे तृष्णा कहा गया है। हमें इन्हीं तृष्णाओं को, लालसाओं को छोड़ना है।
5. लोगों को दयालु होना चाहिए।
6. मनुष्यों के साथ जानवरों के साथ भी अच्छा व्यवहार करना चाहिए।
7. हमारे अच्छे व बुरे कर्म हमारे आज के जीवन को भी प्रभावित करते हैं।
8. हमें अहिंसा (दूसरों को न मारना) को अपनाना चाहिए।
9. हमें अच्छा व्यवहार और अच्छे कर्म करने चाहिए।

उस समय आमजन की भाषा पाली थी इसीलिए बुद्ध ने अपनी शिक्षा 'पाली' भाषा में दी, ताकि आम लोग भी उनके संदेश को समझ सकें। ।

क्रियाकलाप–

महात्मा बुद्ध के जीवन पर आधारित एक स्क्रैप बुक तैयार करें।

बौद्ध धर्म की सलाह

एक बौद्ध ने एक अमीर आदमी को सलाह दी कि मालिक को अपने पास काम करने वाले लोगों की पाँच तरह से देखभाल करनी चाहिए–

1. उनकी क्षमता के अनुसार काम देकर।
2. उन्हें भोजन देकर।
3. उन्हें मज़दूरी देकर।
4. बीमार पड़ने पर उनकी देखभाल कर।
5. उनके साथ भोजन बाँट कर और समय–समय पर उन्हें छुट्टी देकर।

चार आर्य सत्य–

1. दुःख
2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध
4. दुःख निरोध गामिनी प्रातिपद्या

9.1 पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
   (i) दूसरों को न मारने को ..... कहते हैं।
   (ii) बुद्ध ने अपनी शिक्षाएँ ..... भाषा में दी थी।
   (iii) बौद्ध धर्म के संस्थापक का नाम ..... था।
   (iv) बुद्ध का जन्म स्थान ..... था।

महात्मा बुद्ध जीवन परिचय

जन्म स्थान	लुम्बिनी
संस्थापक	सिद्धार्थ गौतम – बुद्ध
धार्मिक ग्रंथ	त्रिपिट्क
ज्ञान प्राप्ति का स्थान	बोध गया
पहले उपदेश का स्थान	सारनाथ
महापरिनिर्वाण प्राप्ति का स्थान (मृत्यु)	कुशीनगर
धार्मिक स्तूप	स्तूप
त्योहार	वसक
धार्मिक आवास	विहार (मठ)

संघ

'संघ' जिसका पाली में अर्थ है "सहयोग" या "समुदाय" बौद्ध मठ वासी समुदाय को संघ कहा जाता था। यहाँ पर बौद्ध भिक्षुओं को बौद्ध मत की शिक्षा दी जाती थी। यहाँ पर अनुशासन में रहना होता था। संघ के लोगों को ज्ञान और मुक्ति की राह दिखायी जाती थी, जो लोग इसमें शामिल होते थे उन्हें सांसारिक जीवन को छोड़कर बौद्ध भिक्षुओं के समूह में रहना होता था। संघ आर्थिक रूप से समुदाय पर निर्भर था।

संघ में रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं के लिये नियम 'विनयपिटक' नामक ग्रंथ में मिलते हैं। संघ में रहने के लिये पुरूष और स्त्रियों के लिए अलग स्थान होता था। सभी संघ में प्रवेश ले सकते थे। संघ में प्रवेश के लिये बच्चों को अपने माता–पिता से, दासों को राजा से अनुमति लेनी होती थी।

संघ में रहने वाले लोग सादा जीवन जीते थे। वे शहरों और गाँवों में जाकर भिक्षा माँगते थे। उन्हें भिक्षु और भिक्षुणी कहा जाता था। वह एक दूसरे की मदद भी करते थे और आपसी लड़ाई का निपटारा भी करते थे।

संघ में प्रवेश लेने वालों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, व्यापारी, मज़दूर, नाई आदि शामिल थे।

9.2 पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–
   (क) संघ शब्द का पाली में अर्थ ..... है।
   (ख) बौद्ध भिक्षुओं के लिए नियम ..... नामक ग्रंथ में मिलते हैं।
   (ग) संघ में रहने वाले लोग ..... जीवन जीते थे।
   (घ) संघ पहले लकड़ी के बनाये गये और बाद में ..... का प्रयोग किया गया।
2. बौद्ध धर्म से सम्बन्धित किन्ही पाँच स्थलों को मानचित्र में भरें।

महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल

बौद्ध विहार

बौद्ध ग्रंथ– त्रिपिटक

साँची स्तूप

बुद्धं शरणम् गच्छामि!

* स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है,
* संतोष सबसे बड़ा धन है,
* वफादारी सबसे बड़ा सम्बन्ध है!

धम्मं शरणम् गच्छामि!!!

महात्मा बुद्ध

जैन धर्म

इसी युग में अर्थात् लगभग 2500 साल पहले जैन धर्म के सबसे महत्वपूर्ण विचारक वर्धमान महावीर ने भी अपने विचारों का प्रचार किया।

वह वज्जि संघ के लिए लिच्छवी कुल के एक राजकुमार थे। 30 साल की उम्र में उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और जंगल में रहने लगे। बारह साल तक उन्होंने कठोर तपस्या कर अलगाव का जीवन व्यतीत किया। इसके बाद उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

भगवान महावीर जी के संदेश एवं शिक्षाएँ

जो स्त्री व पुरूष सत्य को जानने की इच्छा रखते है उन्हें–

1. ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
2. अहिंसा का पालन करना चाहिए।
3. किसी भी जीव को कष्ट नहीं देना चाहिए।
4. किसी भी जीव को मारना नहीं चाहिए।
5. चोरी नहीं करनी चाहिए, ईमानदार होना चाहिए।

भगवान महावीर जी ने अपनी शिक्षा प्राकृत भाषा में दी थी–

- जैन शब्द 'जिन' शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'विजेता'। महावीर को 'जिन' इस लिए कहा जाता है कि वे इन्द्रियों को जीत चुके थे।
- सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य और खारवेल ने जैन धर्म को अपनाया व प्रोत्साहन दिया।

भगवान महावीर

जैन धर्म का विस्तार

1. खासकर/विशेष रूप से व्यापारियों ने जैन धर्म का समर्थन किया।
2. किसानों के लिए जैनधर्म के नियम बड़े कठिन थे।
3. जैन धर्म पहले उत्तर भारत में और बाद में गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक में फैल गया।
4. महावीर और उनके अनुयायियों की शिक्षाएँ काफी समय तक मौखिक रूप में ही रही।
5. इनके लिखित दस्तावेज़ गुजरात में मिलते हैं।

मुख्य बातें

1. जैन परम्परा के अनुसार इस धर्म के 24 तीर्थंकर हुए। इनमें प्रथम ऋषभदेव थे।
2. महावीर स्वामी जैनियों के 24वें तीर्थंकर एवं जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक थे।
3. महावीर स्वामी का जन्म वैशाली के निकट कुण्डग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ व माता का नाम त्रिषला था। इनकी पत्नी यशोदा थीं।
4. महावीर को 12 वर्ष की कठिन तपस्या के बाद जुम्भिकग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के किनारे एवं साल के वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ।

जैन तथा बौद्ध भिक्षु पूरे साल एक स्थान से दूसरे सीन पर घूम–घूम कर उपदेश दिया करते थे। केवल बारिश के मौसम में उनको घूमना मुश्किल हो जाता था तो वे एक जगह पर रह जाते थे, ऐसे समय में वह अस्थायी निवासों में व गुफाओं में रहते थे।

जैसे–जैसे समय बीता भिक्षु–भिक्षुणियों ने 'आवास' की जरूरत महसूस की। तब कई शरण स्थल बनाए गए जिन्हें "विहार" कहा गया। यहाँ संघ के भिक्षु तप, संन्यास व ज्ञान प्राप्त करते थे।

पहले विहार लकड़ी के बनाए गए और बाद में इनमें ईंटों का इस्तेमाल किया गया। पश्चिमी भारत में कुछ विहार पहाड़ियों को खोद कर भी बनाए गए।

विहार

विहार का मतलब होता है "आवास"। बौद्ध व जैन मत के लोगों के लिए रहने के स्थान को बौद्ध विहार या मठ कहते थे। स्थायी मठों को विहार का नाम दिया गया।

9.3 पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–
   - क. जैन धर्म के संस्थापक.....थे।
   - ख. महावीर ने अपनी शिक्षाएँ..... भाषा में दी थी।
   - ग. किन राजाओं..... ने जैन धर्म का समर्थन किया।
   - घ. महावीर जैन धर्म के 24 वें..... थे।

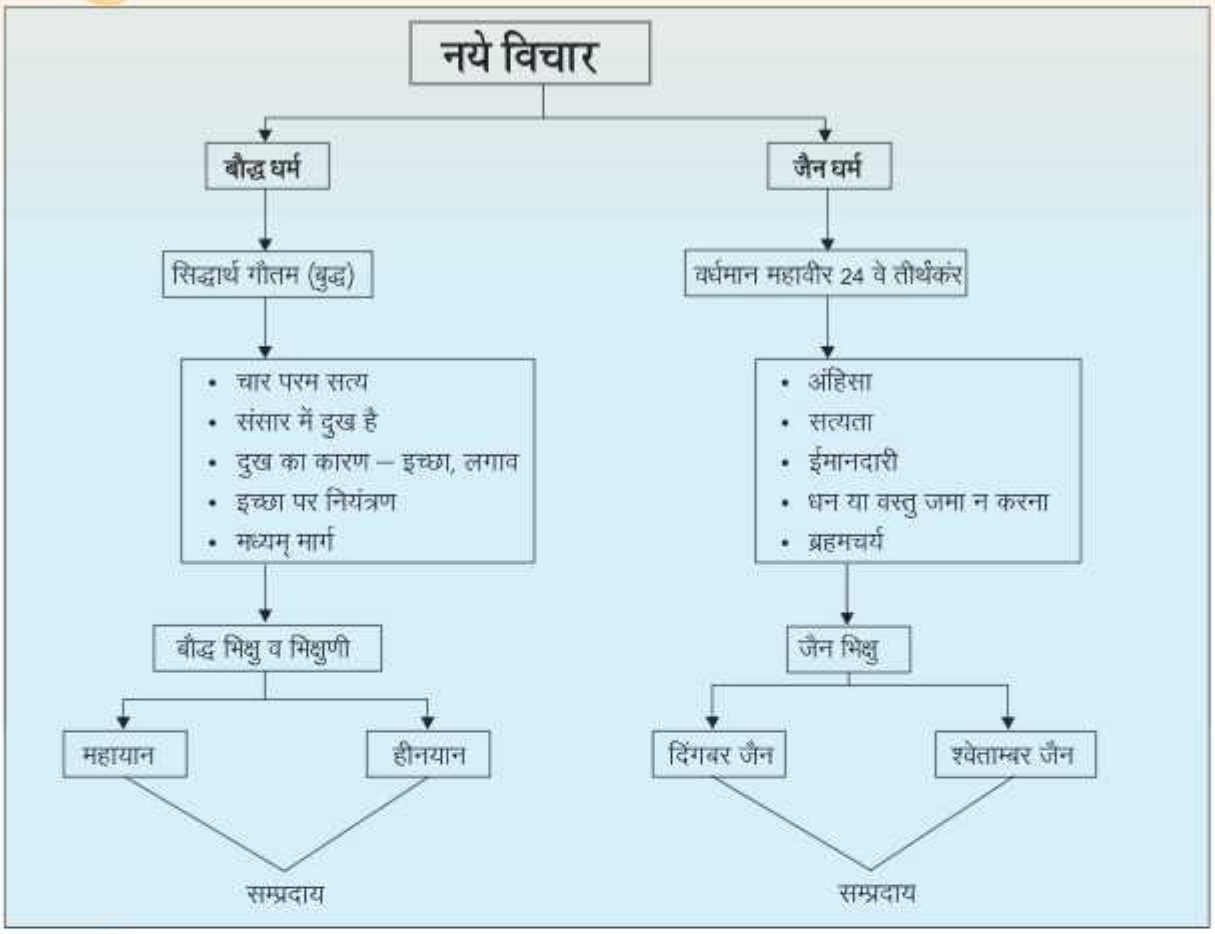

अशोक

आपने जिस राष्ट्रीय चिह्न को शेरों के चित्र के रूप में रूपयों–पैसों पर देखा होगा, उसका लंबा इतिहास है। इसे पत्थरों को काट कर बनाया गया और फिर उसे सारनाथ में एक बड़े स्तंभ पर स्थापित किया गया। इस स्तम्भ को सम्राट अशोक ने बनवाया था। जिन्होनें कलिंग युद्ध के बाद अपने को एक कल्याणकारी राजा बनाया।

राजा अशोक जिस सम्राज्य पर शासन करते थे, उसकी स्थापना उनके दादा चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी। चाणक्य या कौटिल्य नाम के बुद्धिमान ब्राह्मण ने चन्द्रगुप्त की मदद् की थी। चाणक्य के विचार हमें 'अर्थशास्त्र' नामक किताब में मिलते हैं। इनके साम्राज्य में बहुत सारे नगर थे जिसमें पाटलिपुत्र, उज्जैन, और तक्षशिला प्रमुख थे।

सम्राट अशोक

राष्ट्रीय चिह्न

प्रशासन

मौर्य साम्राज्य बहुत बड़ा था इसलिए अलग–अलग ढंग से शासन किया जाता था–

1. शहरों और गाँवो से कर इकट्ठा करने के लिए राजा अधिकारियों को नियुक्त करता था।
2. अधिकारियों को वेतन दिया जाता था।
3. राजा के जासूस अधिकारियों पर नज़र रखते थे।
4. राजा के वरिष्ठ मंत्री राजा पर नियंत्रण रखते थे।
5. राजा के वरिष्ठ मंत्री राजा की शासन करने में मदद् करते थे।
6. राज्य कई प्रांतो में विभाजित था, जिनपर तक्षशिला या उज्जैन जैसी प्रांतीय राजधानियों से शासन किया जाता था।
7. प्रांतों का शासन राज्यपाल (गर्वनर) के पास होता था।
8. मौर्य शासक मार्गों व नदियों पर नियंत्रण रखते थे।
9. संसाधन नज़राने के रूप में राजा को दिए जाते थे।

मेगस्थानीज

मौर्यकाल मे यूनानी राजा सेल्यूकस निकेटर का राजदूत मेगस्थनीज़ भारत आया जिसने मौर्य साम्राज्य के बारे में अपनी किताब 'इंडिका' में लिखा।

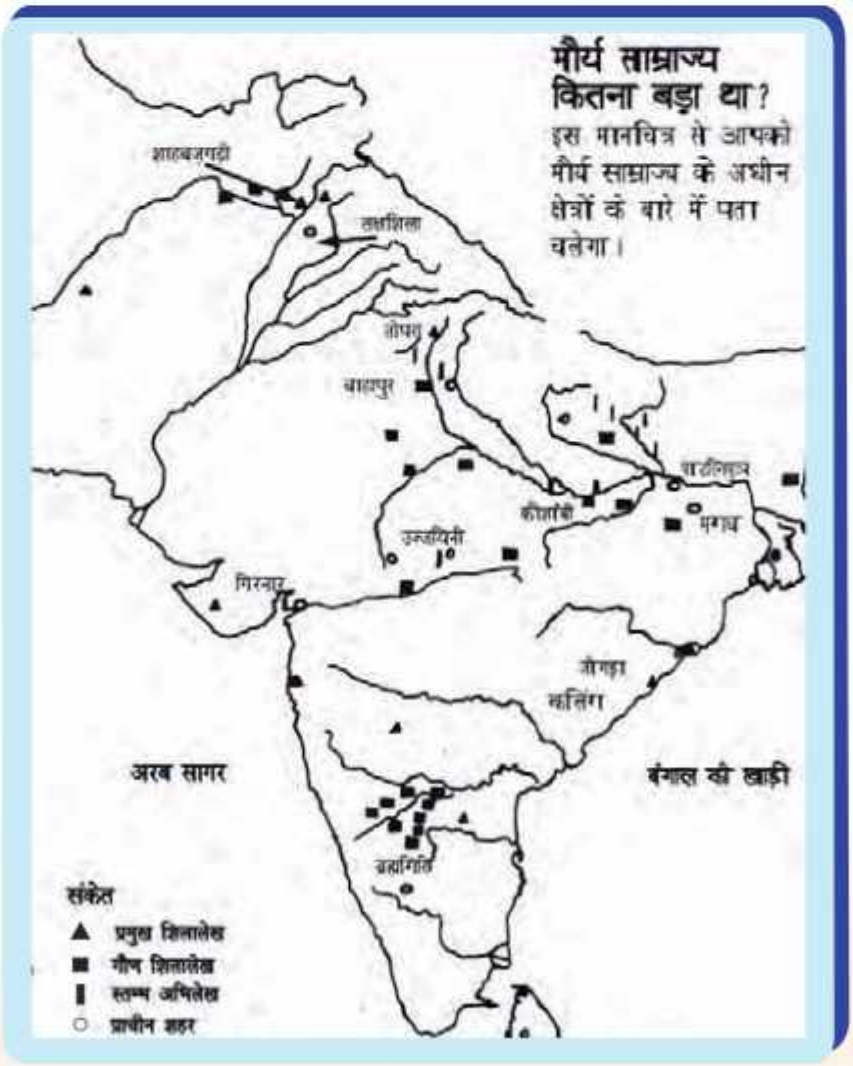

मुख्य बातें

1. राजा बनने से पूर्व अशोक उज्जैन का राज्यपाल था।
2. अशोक का धम्म सामाजिक व नैतिक अवधारणा पर आधारित था।
3. अशोक के कुल स्तम्भों की संख्या 17 थी।
4. कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने बौद्ध धर्म अपना लिया था।
5. अर्थशास्त्र में प्रशासन और राजस्व से सम्बन्धित मामले दिए गए हैं।

अशोक–एक अनोखा सम्राट

अशोक मौर्य वंश के सबसे प्रसिद्ध सम्राट थे। वे ऐसे पहले राजा थे जिन्होने अभिलेखों के द्वारा आम जनता तक अपने विचार पहुँचाए। उनके लेख पाली, ब्राह्मी, खरोष्ठी और आरमाईक लिपि में हैं।

अशोक का कलिंग युग

कलिंग तटवर्ती उड़ीसा का पुराना नाम है। अशोक ने कलिंग को जीतने के लिए युद्ध किया। युद्ध में खून–खराबा और हिंसा को देख कर अशोक का मन बदल गया। उन्होंने सोच लिया कि अब कभी भी युद्ध या लड़ाई नहीं करेंगे और सबका भला ही करेंगें। कलिंग युद्ध अशोक का अन्तिम युद्ध था। फिर अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ले ली और बौद्ध धर्म के प्रचार प्रचार के लिए काम किया।

अशोक का धम्म–

- राजा अशोक के साम्राज्य में लोग अलग–अलग धर्मो को मानते थे जिससे उनमें कई बार आपस मे टकराव भी हो जाता था। जानवरों की बलि चढ़ाई जाती थी। तब अशोक ने यह महसूस किया की उन्हें इस समस्या का हल निकालना होगा।
- अशोक ने सारे धर्मो से निहित संस्कारों को मिलाकर एक व्यवहार नीति अपनाई जिसे 'धम्म' कहा गया।

धम्म की शिक्षाएँ

1. सबके प्रति सद्व्यवहार रखना।
2. जरूरतमंदों की मदद करना (दान देना)।
3. माता–पिता और बड़ों की आज्ञा मानना।
4. गुरूजनों के प्रति आदर रखना।
5. क्रोध व ईर्ष्या से दूर रहना।
6. सभी जीवों पर दया करना।
7. दूसरे धर्मों का भी आदर करना।

धर्म

- धर्म शब्द को पाली भाषा में 'धम्म' कहा जाता है।
- अशोक ने इस शब्द का प्रयोग अपने शिलालेखों में किया है।

अशोक द्वारा धम्म प्रचार हेतु किए गए कार्य:

1. धम्म–महामात्य नाम के अधिकारियों की नियुक्ति की।
2. धम्म के संदेशो को शिलाओं (पत्थरों) और स्तंभों पर खुदवाया और जगह–जगह लगवाया गया।
3. लोगों को संदेशों को पढ़ कर सुनाया गया।
4. धम्म का प्रचार करने के लिए श्रीलंका, थाईलैण्ड, जापान में दूतों (लोगों) को भेजा गया।
5. अशोक ने सड़कें बनवाई। कुएँ खुदवाए और विश्राम गृह बनवाए।
6. जानवरों के लिए भी चिकित्सालय खुलवाए।

9.4 पाठगत प्रश्न

1. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–
   1. मेगस्थनीज़ ने मौर्य साम्राज्य के बारे में अपनी किताब.....में लिखा।
   2. अशोक का हृदय परिवर्तन..... की लड़ाई के कारण हुआ।
   3. अशोक.....वंश के सबसे प्रसिद्ध राजा (सम्राट) थे।
   4. अशोक के अभिलेख.....भाषा और..... लिपि में लिखे गए थे।

क्रियाकलाप–

भारत के मानचित्र पर अशोक के साम्राज्य विस्तार को दर्शाइए।

पाठ का सार

1. बौद्ध धर्म के संस्थापक सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) थे।
2. सिद्धार्थ ने ज्ञान की खोज के लिए त्याग का रास्ता अपनाया।
3. बुद्ध ने जीवन–मृत्यु के चक्र से मुक्ति, आत्मा ज्ञान और निर्वाण एवं मध्यममार्ग का रास्ता बताया।
4. बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियों के लिए मठों वह विहारों को बनाया गया।
5. जैन धर्म के संस्थापक महावीर थे।
6. महावीर ने त्याग, तपस्या, अहिंसा व सच पर बल दिया।
7. छठी ई.पू. में बौद्ध और जैन धर्म का प्रचार किया गया।
8. सम्राट अशोक को मौर्य साम्राज्य का और भारत का एक प्रमुख राजा माना गया है।
9. कलिंग युद्ध के बाद उन्होंने अपने शासन एवं प्रशासन व्यवस्था में बदलाव किया।
10. उन्होंने एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की।
11. उन्होंने 'धम्म' की शुरूआत की और उसके प्रचार के लिए धम्म महामात्य नियुक्त किए।
12. बौद्ध धर्म का प्रचार श्रीलंका, थाईलैण्ड, सुमात्रा, जापान में किया गया।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए–
   1. बुद्ध की किन्हीं चार शिक्षाओं का उल्लेख कीजिए।
   2. महावीर के किन्हीं चार संदेशों का वर्णन कीजिए।
   3. बुद्ध और महावीर के संदेशों में समानताओं का उल्लेख कीजिए।
   4. 'धम्म' क्या था ?

2. रिक्त स्थान भरिए–
   1. बौद्ध धर्म के संस्थापक..... थे।
   2. जैन धर्म के संस्थापक ..... थे।
   3. बुद्ध..... से संबध रखते थे।
   4. मौर्य सम्राट के सबसे प्रसिद्ध राजा..... थे।

3. मेल कीजिए–

कलिंग	कौटिल्य
इंडिका	अशोक
मठ	उड़ीसा
धम्म	भिक्खु
अर्थशास्त्र	मेगस्थनीज

4. बहु विकल्पी प्रश्नों का सही विकल्प चुनिए–
   (i) अशोक के अभिलेख किस भाषा में लिखे गए?
   (क) संस्कृत
   (ख) ग्रीक
   (ग) पाली
   (घ) अरबी
   (ii) अशोक ने धम्म प्रचार के लिए किसकी नियुक्ति की?
   (क) धम्म महामात्य
   (ख) सेनापति
   (ग) राज्यपाल
   (घ) अध्यक्ष

5. सही व गलत पर निशान लगाइए–

1. बुद्ध जैन धर्म के संस्थापक थे। ☐
2. ब्राह्मण लोग उपनिषद की पूजा विहार में करते थे। ☐
3. बुद्ध ने बोध गया में ज्ञान प्राप्त किया। ☐
4. सम्राट अशोक का मन कलिंग युद्ध के बाद बदला। ☐

6. आपको महात्मा बुद्ध का कौनसा एक विचार सबसे अच्छा लगा और क्यों?

7. सम्राट अशोक के धम्म के संदेशों को लिखिए–

1. माता–पिता से संबधित – 1.
   – 2.
2. समाज से संबधित – 1.
   – 2.

कार्यपत्रक–

महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित प्रमुख किन्हीं 5 विशेषताओं को लिखिए–

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....

वर्धमान महावीर के जीवन से संबंधित प्रमुख किन्हीं 5 विशेषताओं को लिखिए–

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....

10 विकास के आर्थिक पहलू

हड़प्पा सभ्यता के बाद 1500 वर्षों के लंबे अंतराल में उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में कई प्रकार के विकास हुए। मुख्य रूप से आरंभिक राज्यों, साम्राज्यों के विकास के साथ–साथ नए शहरों का विकास हुआ। कृषि का प्रसार, उद्योग तथा व्यापार में प्रगति हुई। व्यापारियों ने एक तरफ जहाँ उपमहाद्वीप के अंदर तथा बाहर जमीन के रास्तों की खोज की। पश्चिमी एशिया, पूर्वी अफ्रीका तथा दक्षिण–पूर्वी एशिया के समुद्री रास्ते भी खोले। इन सब खोजों का परिणाम यह हुआ कि संसार के विभिन्न देश व्यापार के लिए एक–दूसरे के संपर्क में आने लगे।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने से विद्यार्थी –

- प्राचीन भारतीय उपमहाद्वीप में हुए परिवर्तनों को समझेंगे।
- कृषि व्यवस्था तथा शिल्प की व्याख्या कर पाएँगे।
- ग्रामीण तथा नगरीय जीवन में अंतर कर पाएँगे।
- व्यापार तथा व्यापारियों की स्थिति को समझ पाएँगे।
- रेशम मार्ग की वर्तमान मार्गों से तुलना कर पाएँगे।

कृषि व्यवस्था में बदलाव

करीब 2500 वर्ष पहले लोहे के औजारों के बढ़ते उपयोग का प्रमाण मिलता है। इनमें जंगलों को साफ करने के लिए कुल्हाड़ियाँ और जुताई के लिए हलों के फाल शामिल हैं।

कृषि उपज बढ़ाने का एक तरीका हल का प्रचलन था। जो छठी शताब्दी ई.पू. से ही गंगा और कावेरी की घाटियों के क्षेत्र में फैल गया था। जिन क्षेत्रों में भारी वर्षा होती थी वहाँ लोहे के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वर भूमि की जुताई की जाने लगी। इसके अलावा गंगा की घाटी में धान की रोपाई की वजह से कृषि उपज में भारी वृद्धि होने लगी। हालाँकि किसानों को इसके लिए कमरतोड़ मेहनत करनी पड़ती थी।

कृषि उपज बढ़ाने का एक और तरीका कुओं, तालाबों और कहीं–कहीं नहरों के माध्यम से सिंचाई करना था। राजा या प्रभावशाली लोग व्यक्तिगत तौर पर तालाबों, कुओं और नहरों जैसे सिंचाई के साधन निर्मित करने वाले लोग थे।

औजारों की सूची में इन चित्रों के नाम चुनो–हँसिया, कुल्हाड़ी और सँड़ासी।

लोहे की ऐसी पाँच चीजों की सूची बनाओ जिनका प्रयोग आप दैनिक जीवन में करते हो।

क्या आप जानते हैं?

धान की खेती उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ पानी बहुतायत में होता है। इसमें पहले धान के बीज अंकुरित करके पानी से भरे खेतों में पौधों की रोपाई की जाती है।

क्रियाकलाप–

1. आपके घरों में उपयोग होने वाले लोहे के औजार तथा अन्य पाँच घरेलू उपयोग की चीजों की सूची एवं उनका चित्र बनाइए।
2. वर्तमान समय में सिंचाई के साधनों की सूची तैयार कीजिए।

नगरीय व्यवस्था

अधिकांश नगर महाजनपदों की राजधानियाँ थी। प्रायः सभी नगर यातायात मार्गो के किनारे बसे थे। पाटलिपुत्र जैसे अन्य नगर भूतल मार्गो के किनारे बसे थे। इनके अलावा पुहार जैसे नगर समुद्रतट पर थे, जहाँ से समुद्री मार्ग प्रारंभ हुए। मथुरा जैसे अनेक शहर व्यावसायिक सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधि के मुख्य केन्द्र थे।

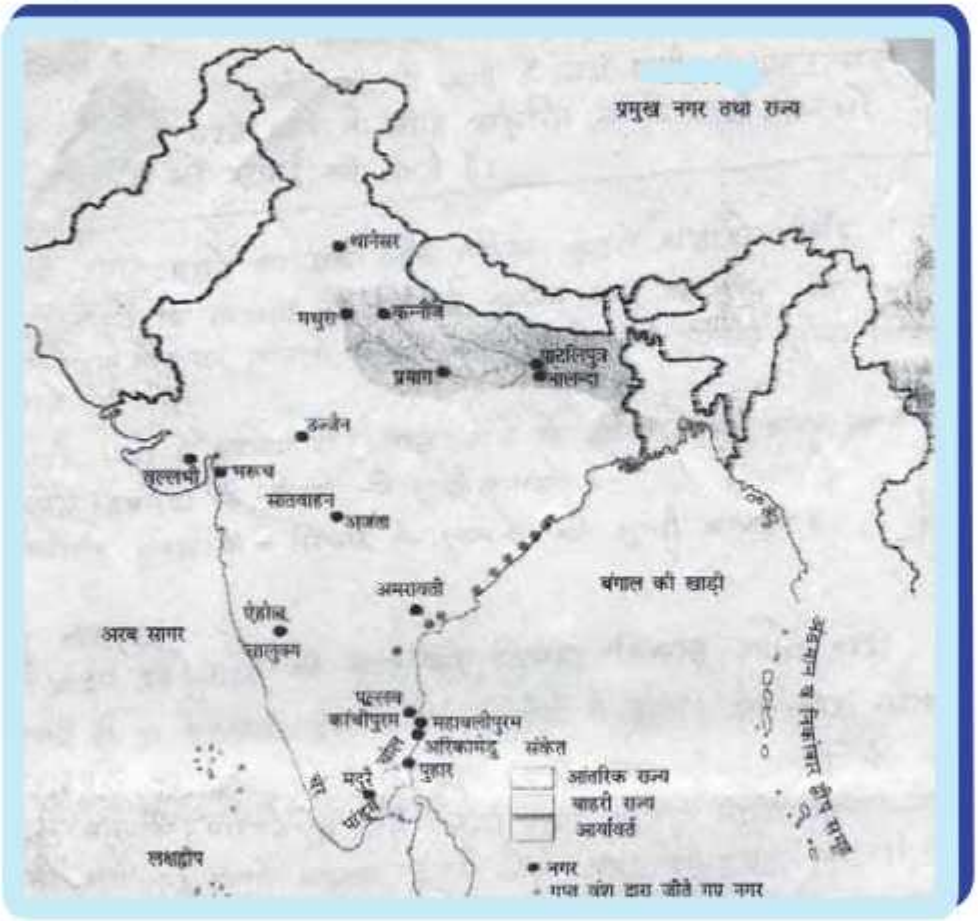

मथुरा 2500 साल से भी ज्यादा समय से एक महत्वपूर्ण नगर रहा है क्योंकि यह यातायात और व्यापार के दो मुख्य रास्तों पर स्थित था। इनमें से एक रास्ता उत्तर–पश्चिम से पूरब की ओर, दूसरा उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाला था। शहर के चारों ओर किलेबंदी थी, इसमें अनेक मंदिर थे। आस–पास के किसान तथा पशुपालक शहर में रहने वालों के लिए भोजन जुटाते थे। मथुरा बेहतरीन मूर्तियाँ बनाने का केन्द्र भी था।

लगभग 2000 साल पहले मथुरा कुषाणों की दूसरी राजधानी बनी। मथुरा एक धार्मिक केंद्र भी रहा है। यहाँ बौद्ध विहार और जैन मंदिर हैं। आज भी कृष्ण भक्ति के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है।

मथुरा में प्रस्तर–खंडों तथा मूर्तियों पर अनेक अभिलेख मिले हैं। आमतौर पर ये संक्षिप्त अभिलेख है, जो स्त्रियों तथा पुरूषों द्वारा मठों या मंदिरों को दिए जाने वाले दान का उल्लेख करते हैं। प्रायः शहर के राजा, रानी, अधिकारी, व्यापारी तथा शिल्पकार इस प्रकार के दान करते थे। उदाहरण के लिए मथुरा के अभिलेख में सुनारों, लोहारों, बुनकरों, टोकरी बुनने वालों, माला बनाने वालों, इत्र बनाने वालों के उल्लेख मिलते हैं।

10.1 पाठगत प्रश्न

1. मथुरा के लोगों के प्रमुख व्यवसायों की सूची बनाओ।
2. मथुरा नगर कब कुषाणों की राजधानी बनी।

यद्यपि खेती की इन नई तकनीकों से उपज तो बढ़ी लेकिन इसके लाभ समान नहीं थे। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि खेती से जुड़े लोगों में आगे चलकर भेद बढ़ता रहा। कहानियों में विशेषकर बौद्ध कथाओं के अनुसार गांवों तथा नगरों में विशेषकर तीन तरह के लोग रहते थे, भूमिहीन खेतिहर श्रमिक, छोटे किसान और बड़े–बड़े जमींदार। पाली भाषा में गहपति का प्रयोग छोटे किसानों और जमींदार के लिए किया जाता था। बड़े–बड़े जमींदार और ग्राम–प्रधान के पद पर अक्सर एक ही परिवार के लोग कई पीढ़ियों तक बने रहते थे, अर्थात् यह पद वंशानुगत था। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे स्त्री–पुरुष थे, जिनके पास अपनी जमीन नहीं होती थी। इनमें दास, कर्मकार आते थे, जिन्हें दूसरों की जमीन पर काम करके अपनी जीविका चलानी पड़ती थी।

गहपति

गहपति घर का मुखिया होता था और घर में रहने वाली महिलाओं, बच्चों, नौकरों और दासों पर नियंत्रण करता था। घर से जुड़े भूमि, जानवर या अन्य सभी वस्तुओं का वह मालिक होता था। कभी–कभी इस शब्द का प्रयोग नगरों में रहने वालें संभ्रात व्यक्तियों और व्यापारियों के लिए भी होता था।

आरंभिक तमिल संगम साहित्य में भी गाँवों में रहने वाले विभिन्न वर्गों के लोगों का उल्लेख मिलता है, जैसे वेल्लार, या बड़े जमींदार, हलवाहा या उल्वर और दास अणिमई। यह संभव है कि वर्गों की यह विभिन्नता भूमि के स्वामित्व श्रम और नये प्रौद्योगिकी के उपयोग पर आधारित थे। ऐसी परिस्थिति में श्रम का स्वामित्व महत्वपूर्ण हो गया जिसकी चर्चा प्रायः विधि ग्रंथों में की जाती थी।

प्राचीनतम् तमिल रचनाएँ (साहित्य)

तमिल की प्राचीनतम् रचनाओं को संगम साहित्य कहते हैं। इनकी रचना करीब 2300 साल पहले की गई। इन्हें संगम इसलिए कहा जाता है क्योंकि मदुरै के कवियों के सम्मेलन में इनका संकलन किया जाता था। गाँव में रहने वालों के जिन तमिल नामों का उल्लेख यहाँ किया गया है, वे संगम साहित्य में पाए गए हैं।

शिल्प और शिल्पकार

पुरास्थलों से शिल्पों के नमूने मिले हैं। इनमें मिट्टी के बहुत ही पतले और सुन्दर बर्तन मिले हैं, जिन्हें उत्तरी काले चमकीले पात्र कहा जाता है क्योंकि ये ज्यादातर उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में मिले हैं तथा ये प्रायः काले रंग के होते हैं, और इनमें एक खास चमक होती है। संभवतः इनका उपयोग अमीर लोग किया करते होंगे। साथ ही सोने, चाँदी, कांस्य, ताँबे, हाथी दाँत, शीशे जैसे तरह–तरह के पदार्थों के बने गहने उपकरण, हथियार, बर्तन, सीप और पक्की मिट्टी मिली है।

ध्यान रहे कि अन्य दूसरें शिल्पों के अवशेष नहीं बचे होंगे। जैसे कि विभिन्न ग्रंथों से हमें पता चलता है कि कपड़ों का उत्पादन बहुत महत्वपूर्ण था। उत्तर में वाराणसी और दक्षिण में मदुरै इसके प्रसिद्ध केन्द्र थे।

अनेक शिल्पकार तथा व्यापारी अपने–अपने संघ बनाने लगे थे, जिन्हें श्रेणी कहते थे। शिल्पकारों की श्रेणियों का काम प्रशिक्षण देना, कच्चा माल उपलब्ध कराना तथा तैयार माल का वितरण करना था। जबकि व्यापारियों की श्रेणियाँ व्यापार का संचालन करती थी। श्रेणियाँ बैंकों के रूप में काम करती थीं, जहाँ लोग पैसे जमा रखते थे। इसमें धन निवेश लाभ के लिए किया जाता था। उससे मिले लाभ का कुछ हिस्सा जमा करने वाले को लौटा दिया जाता था या फिर मठ आदि धार्मिक संस्थानों को दान दे दिया जाता था।

अधिकांश गाँवों में लोहार, कुम्हार, बढ़ई तथा बुनकर जैसे कुछ अन्य शिल्पकार भी रहते थे।

क्रियाकलाप–

1. आपके घरों के आस–पास रहने वाले मुख्य शिल्पकारों की सूची बनाइए।
2. शिल्पकार अपने लिए कच्चा माल कहां से प्राप्त करते हैं उन स्थानों की सूची बनाइए।

ग्रामीण एवं नगरीय जीवनः यात्रा विवरण, मूर्तिकला और पुरातत्व

प्राचीन नगरों व शहरों के बारे में वहाँ गए नाविकों तथा यात्रियों के विवरणों द्वारा पता चलता है। ऐसा ही एक विस्तृत विवरण किसी अज्ञात यूनानी नाविक का है। जिन–जिन पत्तनों पर वह गया। उन सभी के बारे में उसने लिखा है।

बेरिगाज़ा (भरूच का यूनानी नाम) की कहानी बेरिगाज़ा की संकरी खाड़ी में समुद्र से आने वालों के लिए नाव चला पाना बहुत मुश्किल होता है। राजा के द्वारा नियुक्त कुशल और अनुभवी स्थानीय मछुआरे ही यहाँ जहाज ला सकते थे। बेरिगाज़ा में शराब, ताँबा, टिन, सीसा, मूँगा, पुखराज, कपड़े, सोने और चाँदी के सिक्कों का आयात होता था। हिमालय की जड़ी–बूटियाँ, हाँथी–दाँत, गोमेद, कार्नीलियन, सूती कपड़ा, रेशम तथा इत्र यहाँ से निर्यात किए जाते थे। राजा के लिए व्यापारी विशेष उपहार लाते थे। इनमें चाँदी के बर्तन, गायक–किशोर, स्त्रियाँ, अच्छी शराब तथा उत्कृष्ट महीन कपड़े शामिल थे।

क्रियाकलाप–

- बेरिगाज़ा से आयात–निर्यात होने वाली चीजों की सूची बनाओ।
- राजा को दिए जाने वाले उपहारों की सूची बनाओ। • आजकल लोगों द्वारा दिए जाने वाले उपहारों की सूची बनाओ।

तुमने जातकों (बुद्ध की पिछले जन्म की कथाएँ) के बारे में सुना होगा। ये वो कहानियाँ है, जो आम लोगों में प्रचलित थी। बौद्ध भिक्षुओं ने इनका संकलन किया। प्राचीन नगरों के जीवन के बारे में हमें कुछ अन्य स्रोतों से भी पता चलता है। शहरों, गाँवों या फिर जंगलों के जीवन से जुड़ी घटनाओं को मूर्तिकार कलात्मक ढ़ंग से उकेरते थे। इन मूर्तियों को इमारतों की रेलिंग, खंभों या प्रवेश–द्वारों पर सजाया जाता था।

दिल्ली में मिला वलयकूप। हड़प्पा की जल निकास व्यवस्था से यह कैसे भिन्न है?

नीचे: साँची की मूर्तिकला यह मध्य प्रदेश स्थित साँची के स्तूप की मूर्तिकला का नमूना है। इसमें शहर के जीवन का एक दृश्य है। इन दीवारों को देखो। क्या वे ईंट की बनी है या फिर लकड़ी या पत्थर से? क्या इसकी रेलिंग लकड़ी की बनी हैं? इन इमारतों की छतों का वर्णन करो।

10.2 पाठगत प्रश्न

1. आजकल आप मूर्तियाँ कहाँ–कहाँ लगी पाते हैं, उन स्थानों को सूचीबद्ध कीजिए।
2. आजकल मूर्तिकार किन पदार्थों की मूर्तियाँ बनाते हैं, उनकी सूची बनाइए।
3. श्रेणिओं के प्रमुख कार्य बताओ।

अनेक शहर व नगर महाजनपदों की राजधानी थे। जैसा कि तुमने पढ़ा, इनमें से कुछ शहर टेराकोटा से घिरे होते थे। जैसा कि तुम ऊपर के चित्र में देख रहे हो, अनेक शहरों में वलयकूप मिले हैं। ये वलयकूप, गुसलखाने, नाली या कूड़ेदान के लिए प्रयुक्त होते थे। प्रायः ये वलयकूप लोगों के घरों में होते थे।

महलों, बाजारों या आम घरों के अवशेष बहुत कम मिले हैं। संभवतः लकड़ी, मिट्टी व कच्ची ईंटों या छप्पर से बने होने के कारण थे जो ज्यादा समय तक नहीं टिक पाए हो। भविष्य में पुरातत्वविद् इनकी खोज कर सकते हैं।

व्यापार और व्यापारियों के बारे में जानकारी

उत्तर के काले पॉलिश वाले खूबसूरत बर्तन, खासतौर से कटोरियाँ तथा थालियाँ, इस उपमहाद्वीप के अनेक पुरास्थलों से मिले हैं। सवाल उठता है कि अन्य जगहों पर ये बर्तन कैसे पहुँचे होंगे? ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि जहाँ ये बनते थे, वहाँ से व्यापारी इन्हें ले जाकर अलग–अलग जगहों पर बेचते थे।

छठी शताब्दी ई0 पू0 से ही उपमहाद्वीप में नदी मार्गों और भूमार्गों का मानो जाल सा बिछ गया था और कई दिशाओं में फैल गया था। मध्य एशिया और उससे भी आगे तक भू–मार्ग थे। समुद्रतट पर बने कई बंदरगाहों से जलमार्ग अरब सागर से होते हुए उत्तरी अफ्रीका, पश्चिम एशिया तक फैल गया था। शासकों ने प्रायः इन मार्गों पर नियंत्रण करने की कोशिश की। संभवतः वे इन मार्गों पर व्यापारियों की सुरक्षा के बदले उनसे धन लेते थे।

दक्षिण भारत, सोना, मसाले, खासतौर पर काली मिर्च तथा कीमती पत्थरों के लिए प्रसिद्ध था। काली मिर्च की रोमन साम्राज्य में इतनी मांग थी कि इसे 'काले सोने' के नाम से बुलाते थे। व्यापारी इन सामानों को समुद्री जहाजों और सड़कों के रास्ते रोम पहुँचाते थे। दक्षिण भारत में ऐसे अनेक रोमन सोने के सिक्के मिले हैं। इससे यह अंदाजा लगाया जाता है कि उन दिनों रोम के साथ व्यापार बहुत अच्छा चल रहा था।

व्यापारियों ने कई समुद्री रास्ते खोज निकाले। उनमें से कुछ समुद्र के किनारे चलते थे, कुछ अरब सागर और बंगाल की खाड़ी पार करते थे। नाविक मानसूनी हवा का फायदा उठाकर अपनी यात्रा जल्दी पूरी कर लेते थे। वे अफ्रीका या अरब के पूर्वीतट से इस उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट पर पहुँचना चाहते थे तो दक्षिणी पश्चिमी मानसून के साथ चलना पसंद करते थे। इन लंबी यात्राओं के लिए मजबूत जहाजों का निर्माण किया जाता था।

रेशम मार्ग

कीमती, चमकीले रंग और चिकनी मुलायम बनावट की वजह से रेशमी कपड़े अधिकांश समाज में बहुमूल्य माने जाते हैं। रेशमी कपड़ा तैयार करना एक जटिल प्रक्रिया है। रेशम के कीड़े से कच्चा रेशम निकालकर, कताई होती है, और फिर उससे कपड़ा बुना जाता है। रेशम बनाने की तकनीक का आविष्कार सबसे पहले चीन में करीब 7000 साल पहले हुआ था। इस तकनीक को उन्होंने हजारों सालों तक बाकी दुनिया से छुपाए रखा। पर चीन से पैदल, घोड़ों या ऊँटों पर कुछ लोग दूर–दूर की जगहों पर जाते थे और अपने साथ रेशमी कपड़े भी ले जाते थे। जिस रास्ते से ये लोग यात्रा करते थे, वह मार्ग रेशम मार्ग (सिल्क रूट) के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

कभी–कभी चीन के शासक ईरान और पश्चिमी एशिया के शासकों को उपहार के तौर पर रेशमी कपड़े भेजते थे। यहाँ से रेशम के बारे में जानकारी पश्चिम की ओर फैल गई। करीब 2000 साल पहले रोम के शासकों और धनी लोगों के बीच रेशमी कपड़े पहनना एक फैशन बन गया। इसकी कीमत बहुत ही ज्यादा होती थी, क्योंकि चीन से इसे लाने में दुर्गम पहाड़ी और रेगिस्तानी रास्तों से होकर जाना पड़ता था, यही नहीं, रास्ते के आस–पास रहने वाले लोग व्यापारियों से यात्रा–शुल्क भी मांगते थे ।

मानचित्र में रेशम मार्ग को देखो। इसमें रेशम मार्ग और उसकी शाखाओं को दिखाया गया है। कुछ शासक इसके बड़े–बड़े हिस्सों पर अपना नियंत्रण करना चाहते थे क्योंकि इस रास्ते पर यात्रा कर रहे व्यापारियों से उन्हें कर, शुल्क तथा तोहफों के जरिए लाभ मिलता था। इसके बदले, ये शासक इन व्यापारियों को अपने राज्य से गुजरते वक्त लूटेरों के आक्रमणों से सुरक्षा देते थे।

रेशम मार्ग पर नियंत्रण रखने वाले शासकों में सबसे प्रसिद्ध कुषाण थे। करीब 2000 साल पहले मध्य एशिया तथा पश्चिमोत्तर भारत पर इनका शासन था। पेशावर तथा मथुरा इनके दो मुख्य शक्तिशाली केन्द्र थे। तक्षशिला भी इनके ही राज्य का हिस्सा था। इनके शासनकाल में ही रेशम मार्ग की एक शाखा मध्य–एशिया से होकर सिंधु नदी के मुहाने के पत्तनों तक जाती थी। फिर यहाँ से जहाजों द्वारा रेशम, पश्चिम की ओर रोमन साम्राज्य तक पहुँचता था। इस उपमहाद्वीप में सबसे पहले सोने के सिक्के जारी करने वाले शासकों में कुषाण थे। रेशम मार्ग पर यात्रा करने वाले व्यापारी इनका उपयोग किया करते थे।

10.3 पाठगत प्रश्न

1. रेशमी कपड़े की शुरूआत कहाँ से हुई?
2. रेशम किस प्रकार संसार के अन्य हिस्सों तक पहुँचा?
3. दक्षिण भारत किसके लिए प्रसिद्ध था?

अभ्यास

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
   1) कृषि उपज बढ़ाने का एक तरीका———— का प्रचलन था।
   2) अधिकांश नगर ————की राजधानियाँ थे।
   3) ————2500 साल पहले से भी ज्यादा समय से एक महत्वपूर्ण नगर रहा है।
   4) मथुरा———— की दूसरी राजधानी बनी।
   5) —— और —— प्रायः किसानों पर नियंत्रण रखते थे।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–
   1) छठी शताब्दी से कृषि उपज में बढ़ोतरी के क्या कारण थे?
   2) मथुरा किस प्रकार व्यावसायिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र था?
   3) श्रेणी किसे कहते थे? उसके क्या कार्य थे?
   4) रेशम मार्ग से क्या अभिप्राय है?
   5) दक्षिणी भारत किन चीजों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था?

3. रेशम मार्ग पर आने वाले प्रमुख नगरों के नाम लिखो।

4. संगम कालीन दो महाकाव्यों के नाम लिखो।

5. काले सोने के नाम से किसे जाना जाता था?

6. बेरिगाजा बन्दरगाह को किस नाम से जाना जाता था?

11 नये प्रमुख साम्राज्य

उपमहाद्वीप में 2200 वर्ष पहले मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् कई नए राज्यों का उदय हुआ। पश्चिमोत्तर, उत्तर तथा पश्चिमी भारत पर शक नामक मध्य एशियाई लोगों का शासन स्थापित हुआ। शक शासकों को गुप्त शासकों ने पराजित किया। भारतीय उपमहाद्वीप में लगभग 1700 साल पहले गुप्त साम्राज्य की स्थापना हुई। गुप्त शासकों के काल में विज्ञान, कला, धर्म, साहित्य, कृषि, उद्योग, व्यापार के विकास से भारतीय संस्कृति समृद्ध हुई।

अधिगम उद्देश्य:

- इस पाठ के उपरान्त हम–
- समुद्रगुप्त और उसके साम्राज्य विस्तार को जान सकेंगे।
- हर्ष वर्धन और उसके साम्राज्य विस्तार को जान पाएंगे।
- चेर, चोल, पांड्यः और उनके साम्राज्य विस्तार का उल्लेख कर सकेंगे।
- भारतीय कला और संस्कृति के विकास की विभिन्न स्रोतों से व्याख्या कर सकेंगे।

समुद्रगुप्त और उसका साम्राज्य विस्तार

समुद्रगुप्त के बारे में हमें एक अभिलेख से पता चलता है। वास्तव में यह उसके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा संस्कृत में लिखी एक कविता है। इसे करीब 1700 साल पहले लिखा गया। इलाहाबाद में अशोकस्तंभ पर इसकी खुदाई की गई थी।

प्रशस्ति

यह एक विशेष किस्म का अभिलेख है, जिसे प्रशस्ति कहते हैं। यह एक संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ– 'प्रशंसा' होता है। प्रशस्तियाँ लिखने का प्रचलन पहले भी था। गौतमी–पुत्र श्री सातकर्णी के प्रशस्ति से हमें उनके बारें में जानकारी मिलती है। गुप्त काल में इनका महत्व और बढ़ गया।

समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण ने अपनी लिखी प्रशस्ति में अपने राजा की एक योद्धा, युद्धों को जीतने वाले राजा, विद्वान तथा एक उत्कृष्ट कवि के रूप में भरपूर प्रशंसा की है। यहाँ तक कि उसे ईश्वर के बराबर बताया गया है। प्रशस्ति में लंबे–लंबे वाक्य दिए गए हैं। यहाँ वैसे ही एक वाक्य का अंश दिया गया है:

सम्राट समुद्रगुप्त

जिनका शरीर युद्ध मैदान में कुठारों, कुल्हाड़ियों, तीरों, भालों, बर्छों, तलवारों, लोहे की गदाओं, नुकीलें तीरों तथा अन्य सैंकड़ों हथियारों से लगे घावों के दाग से भरे होने के कारण अत्यंत सुंदर दिखता है।

मानचित्र इस प्रशस्ति में प्राप्त जानकारियों के आधार पर बनाया गया है। हरिषेण चार विभिन्न प्रकार के राजाओं और उनके प्रति समुद्रगुप्त की नीतियों का वर्णन करते हैं।

1. मानचित्र में आर्यावर्त क्षेत्र के उन नौ शासकों का है, जिन्हें समुद्रगुप्त ने हराकर उनके राज्यों को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
2. इसके बाद दक्षिणापथ के बारह शासक आते हैं। इनमें से कुछ की राजधानियों को दिखाने के लिए मानचित्र पर बिंदु दिए गए हैं। इन सब ने हार जाने पर समुद्रगुप्त के सामने समर्पण किया था। समुद्रगुप्त ने उन्हें फिर से शासन करने की अनुमति दे दी।

समुद्रगुप्त के कुछ अन्य गुणों को सिक्कों पर दिखाया गया है जैसे इस सिक्के में उन्हें वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।

3. पड़ोसी देशों का आंतरिक घेरा बैगनी रंग से रंगा गया है। इसमें असम, तटीय बंगाल, नेपाल और उत्तर–पश्चिम के कई गण या संघ आते थे। ये समुद्रगुप्त के लिए उपहार लाते थे, उनकी आज्ञाओं का पालन करते थे तथा उनके दरबार में उपस्थित हुआ करते थे।

4. बाह्य इलाके के शासक, जिन्हें नीले रंग से रंगा गया है, संभवतः कुषाण तथा शक वंश के थे। इसमें श्रीलंका के शासक भी थे। इन्होंने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की और अपनी पुत्रियों का विवाह उससे किया।

11.1 पाठगत प्रश्न

1. मानचित्र में प्रयाग (इलाहाबाद का पुराना नाम), उज्जैन तथा पाटलिपुत्र (पटना) को ढूँढ़ो।
2. समुद्रगुप्त द्वारा जिन क्षेत्रों पर अपना प्रभाव डाला गया, उनकी सूची बनाओ।

समुद्रगुप्त के बारे में हमे उनके बाद के शासकों, जैसे उनके बेटे चन्द्रगुप्त द्वितीय की वंशावली (पूर्वजों की सूची) से भी जानकारी मिलती है। उनके बारे में अभिलेखों तथा सिक्कों से पता चलता है। उन्होंने पश्चिम भारत में सैन्य अभियान में अंतिम शक शासक को परास्त किया। उनका दरबार विद्वानों से भरा था। कवि कालीदास और खगोल शास्त्री आर्यभट्ट उनके दरबार में थे।

हर्षवर्धन तथा साम्राज्य

जिस तरह गुप्त वंश के शासकों के बारे में अभिलेखों तथा सिक्कों से पता चलता है, उसी तरह कुछ अन्य शासकों के बारे में उनकी जीवनी से पता चलता है। ऐसे ही एक राजा हर्षवर्धन थे, जिन्होंने करीब 1400 साल पहले शासन किया। उनके दरबारी कवि बाणभट्ट ने संस्कृत में उनकी जीवनी हर्षचरित लिखी है। इसमें हर्षवर्धन की वंशावली देते हुए उनके राजा बनने तक का वर्णन है। चीनी यात्री हवेन त्सांग काफी समय के लिए हर्षवर्धन के दरबार में रहे। उन्होंने वहाँ जो कुछ देखा, उसका विस्तृत विवरण दिया है।

हवेन त्सांग के अनुसार हर्षवर्धन एक अत्यन्त योग्य शासक था। जिसने विशाल साम्राज्य की स्थापना में प्रत्यक्ष विजय और अधिग्रहण दोनों तरीकों का प्रयोग किया। वह एक परोपकारी शासक था, जिसके लिए प्रजा का हित सबसे पहले था। उसने शिक्षा और ज्ञान के विस्तार को प्रोत्साहन दिया। उसी के शासन काल में नालंदा अपने शिखर पर पहुँचा। हर्ष ने बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया।

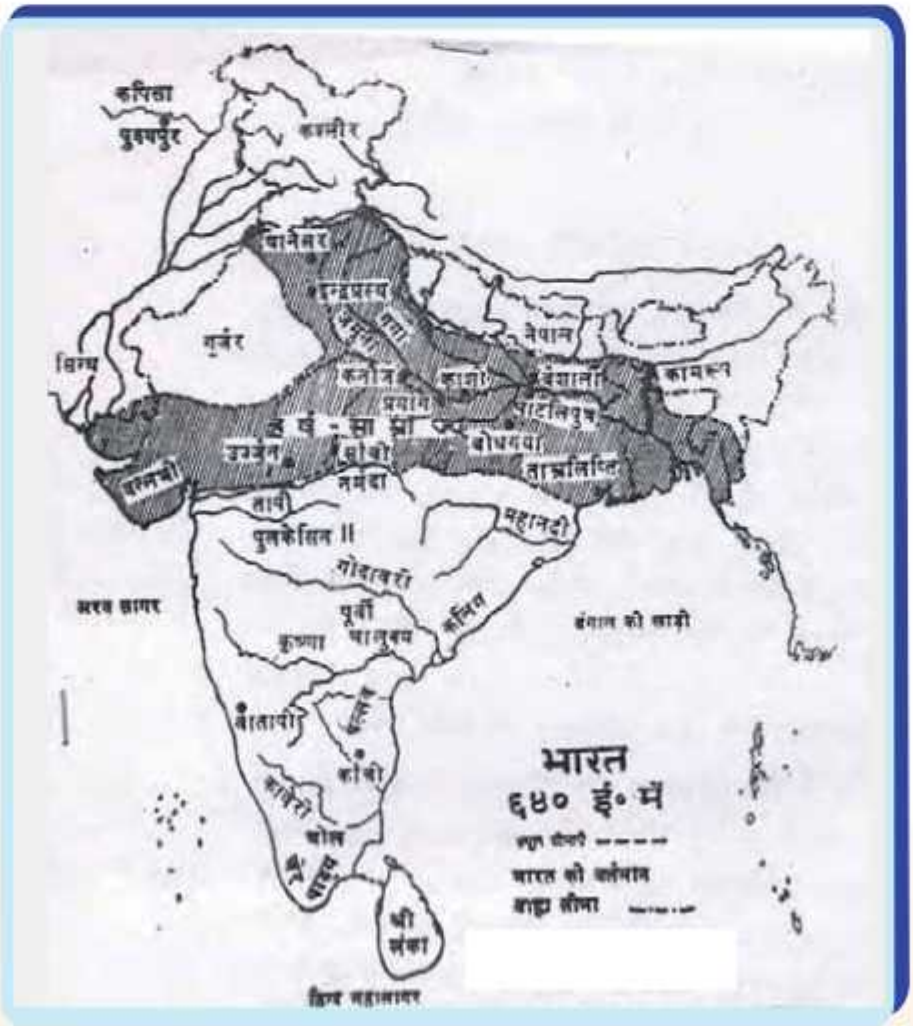

नालंदा–शिक्षा का एक विशिष्ट केंद्र

ह्वेन त्सांग तथा अन्य तीर्थयात्रियों ने उस समय के सबसे प्रसिद्ध बौद्ध विद्या केंद्र नालंदा (बिहार) में अध्ययन किया। उसने नालंदा के बारे में इस प्रकार लिखा है:

यहाँ के शिक्षक योग्यता तथा बुद्धि में सबसे आगे हैं। बुद्ध के उपदेशों का वह पूरी ईमानदारी से पालन करते हैं। मठ के नियम काफी सख्त हैं, जिन्हें सबको मानना पड़ता है। पूरे दिन वाद–विवाद ही चलते रहते हैं। जिससे युवा और वृद्ध दोनों ही एक–दूसरे की मदद करते हैं। विभिन्न शहरों से विद्वान लोग अपनी शंकाएँ दूर करने यहाँ आते हैं। नए आगन्तुकों से पहले द्वारपाल ही कठिन प्रश्न पूछते हैं। उन्हें अंदर जाने की अनुमति तभी मिलती है, जब वे द्वारपाल को सही उत्तर दे पाते हैं। दस में से सात–आठ सही उत्तर नहीं दे पाते हैं।

हर्षवर्धन अपने पिता के सबसे बड़े बेटे नहीं थे पर अपने पिता और बड़े भाई की मृत्यु हो जाने पर थानेसर के राजा बने। उनके बहनोई कन्नौज के शासक थे। जब बंगाल के शासक ने उन्हें धोखे से मार डाला, तो हर्षवर्धन ने कन्नौज को अपने अधीन कर लिया और बंगाल पर आक्रमण कर दिया।

चोल, चेर और पांड्य तथा उनका साम्राज्य विस्तार:

इस उपमहाद्वीप के दक्षिणी भाग में बड़ा तटीय प्रदेश है। इनमें बहुत से पहाड़, पठार और नदी के मैदान है। नदियो के मैदानी इलाकें में कावेरी का मैदान सबसे उपजाऊ है। मैदानी इलाकों तथा तटीय इलाकों के सरदारों और राजाओं के पास धीरे–धीरे काफी संपति और शक्ति हो गई। संगम कविताओं में मुवेन्दार की चर्चा मिलती है। यह एक तमिल शब्द है, जिसका अर्थ तीन मुखिया है। इसका प्रयोग तीन शासक परिवारों के मुखियाओं के लिए किया गया है। ये थे–चोल, चेर तथा पांड्य। जो करीब 2300 साल पहले दक्षिण भारत में काफी शक्तिशाली माने जाते थे।

इन तीनों मुखियाओं के अपने दो–दो सत्ता केंद्र थे। इनमें से एक तटीय हिस्से में और दूसरा अंदरूनी हिस्से में था। इस तरह छह केन्द्रों में से दो बहुत महत्वपूर्ण थे। एक चोलों का पत्तन पुहार या कावेरीपट्टिनम, दूसरा पांड्यों की राजधानी मदुरै।

ये मुखिया लोगों से नियमित कर के बजाए उपहारों की मांग करते थे। कभी–कभी ये सैनिक अभियानों पर भी निकल पड़ते थे और आस–पास के इलाकों से शुल्क वसूल कर लाते थे। इनमें से कुछ धन वे अपने पास रख लेते थे, बाकी अपने समर्थकों, नाते–रिश्तेदारों, सिपाहियों तथा मुखियाओं को देते थे। चूँकि यह तीनों आपस में भी युद्ध करते थे इन कवियों ने योद्धाओं की प्रशंसा में कविताएँ लिखी है जो उन्हें कीमती जवाहरात, सोने, घोड़े, हाथी, रथ या सुंदर कपड़े दिया करते थे।

मुखिया (सरदार) और सरदारी

सरदार एक शक्ति शाली व्यक्ति होता था जिसका पद वंशानुगत भी होता था और नहीं भी। उसके समर्थक उसके खानदान के लोग होते थे। सरदार के कार्यो में विशेष अनुष्ठान का संचालन, युद्ध के समय नेतृत्व करना और विवादों को सुलझाने में मध्यस्थता की भूमिका निभाना शामिल था। वह अपने अधीन लोगों से भेंट लेता था। (जबकि राजा कर वसूली करता था) और अपने समर्थकों में उस भेट को बाँटता था। सरदारी में सामान्यतः कोई स्थायी सेना या अधिकारी नहीं होते थे।

11.2 पाठगत प्रश्न

1. चोल, चेर, पांड्य के महत्वपूर्ण सत्ता के केन्द्र मानचित्र पर ढूँढिए।
2. यदि आपको नालंदा जैसे किसी विद्यालय में भेजा जाए, तो आपके क्या अनुभव होंगे। चर्चा कीजिए।

भारतीय कला और संस्कृति

गुप्तकाल का गौरव है कला के विभिन्न क्षेत्रों की उपलब्धियाँ। गुप्त शासक कला के पोषक थे और उनके द्वारा स्थापित राजनैतिक एकता और उनके दिए गए संरक्षण के कारण सांस्कृतिक गतिविधियों में बहुत तेजी आई। यूनानी आक्रमणों के बाद भारतीय कला पर यूनानी और रोमन कला शैलियों का गहरा प्रभाव पड़ा। कला के माध्यम से बुद्ध और उनके विचारों को व्यक्त किया गया। गुप्तकाल में कला ने सृजनात्मक रूप धारण कर लिया और अब कला द्वारा देवी देवताओं को प्रस्तुत किया जाने लगा।

सिक्के, स्मारक और मूर्तियाँ इस काल की कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। देवगढ़ के मंदिर में विष्णु और लक्ष्मी की अनेक सुन्दर मूर्तियाँ है। सारनाथ की बुद्ध की मूर्तियाँ भी उल्लेखनीय है।

गुप्त शासकों के संरक्षण के कारण महान् साहित्यकार, नाटककार गद्यलेखक, व्याकरण शास्त्री, दार्शनिक और वैज्ञानिक प्रकट हुए जैसे हरिषेण, कवि कालीदास, शूद्रक, विशाखदत्त आदि जिनका भारतीय साहित्य में बहुत योगदान है।

गुप्तकाल में गणित, खगोल शास्त्र, ज्योतिष और धातु कला के क्षेत्र में बहुत उन्नति हुई। गुप्तकाल में ही दशमलव पद्धति और शून्य के अविष्कार का गौरव प्राप्त है। आर्यभट्ट गणितज्ञ, खगोलशास्त्री वराहमिहिर, बाणभट्ट और चरक चिकित्सक इसी काल में हुए।

नवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक चोल साम्राज्य एक शक्तिशाली राज्य रहा। राजराजा प्रथम और राजेन्द्र प्रथम ने राज्य का विस्तार किया और अपने जहाजी बेड़े दक्षिण–पूर्व एशिया तक भेजे। चोल शासन व्यवस्था से साम्राज्य शक्तिशाली बना। इसने ग्रामीण स्वायत्तता को महत्व दिया। चोल शासकों के अधीन मूर्तिकला, वास्तुकला और साहित्य के नए कीर्तिमान स्थापित किए। तंजौर में द्रविड़ शैली में बना मंदिर चोल वास्तुकला का उत्तम नमूना है।

साँची के स्तूप का एक मूर्ति चित्र।
यहाँ इस वृक्ष और उसके नीचे के खाली आसन को देखो। मूर्तिकारों ने यह बताने के लिए खुदाई करके यह मूर्ति बनाई कि बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति इसी वृक्ष के नीचे बैठ कर ध्यान करते हुए हुई।

लौह स्तंभ

गुप्तकाल के इतिहास की जानकारी के लिए जब पुरातत्विक स्रोतों का अध्ययन किया जाता है, तो लौह स्तंभ अभिलेख का अध्ययन करने से हमें गुप्तकाल के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। महरौली (दिल्ली) में कुतुबमीनार के परिसर में खड़ा यह लौह स्तंभ भारतीय शिल्पकारों की कुशलता का एक अद्भुत उदाहरण है। इसकी ऊँचाई 7.2 मीटर और वजन 3 टन से भी ज्यादा है। इसका निर्माण लगभग 1500 साल पहले हुआ इसके बनने के समय की जानकारी हमें इस पर खुदे अभिलेख से मिलती है। इसमें चन्द्र नाम के एक शासक का जिक्र है जो संभवतः गुप्त वंश के थे। आश्चर्य की बात यह है कि इतने वर्षों के बाद भी इसमें जंग नहीं लगी।

लौह स्तंभ (कुतब परिसर) दिल्ली

क्रियाकलाप

कुतुबमीनार परिसर में कौन–कौन सी इमारतें दिखाई देती हैं? सूची बनाइए।

संगम साहित्य

संगम साहित्य तमिल इतिहास की जानकारी का एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्रोत है। इस साहित्य में वर्णित समस्त काल को संगम युग कहा गया है। यह ऐतिहासिक काल के आरंभ में तमिल लोगों के जीवन की जानकारी देते हैं। इस संकलन को अन्तिम रूप 300–600 ई0 में दिया गया था।

संगम तमिल कवियों का मण्डल या सम्मेलन था। इसे राजनैतिक संरक्षण प्राप्त था। आठवीं शताब्दी के स्रोत के अनुसार तीन संगम 1990 वर्ष तक चले। इसमें 8598 कवियों ने भाग लिया और इन्हें 197 पांड्य राजाओं का संरक्षण मिला था।

संगम साहित्य का वर्गीकरण आठ संकलनों में किया गया है। प्रत्येक कविता के अन्त में टिप्पणियाँ भी दी गई है जिनमें कवि का नाम और कविता रचने की परिस्थितियाँ दी गई है।

कविताओं से तमिल शासकों की वंशावली और उनकी उपलब्धियों की जानकारी मिलती है। इनके विवरण से ही उस काल की सामाजिक और धार्मिक परंपराओं पर प्रकाश पड़ता है। दक्षिण भारत के इतिहास की जानकारी का महत्वपूर्ण स्रोत संगम साहित्य है।

क्रियाकलाप

1. तमिल साहित्य के प्रमुख ग्रंथों की सूची बनाइये।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –
    1. प्रशस्ति किसे कहते हैं?
    2. समुद्रगुप्त कौन थे? गुप्त साम्राज्य के विस्तार में इनका क्या योगदान था?
    3. गुप्त साम्राज्य की जानकारी हमें किस प्रकार प्राप्त होती है?
    4. इस काल में भारत आने वाले विदेशी (चीनी) यात्री कौन–कौन से थे?
    5. हर्षवर्धन के शासन काल में शिक्षा और ज्ञान की क्या स्थिति थी?
    6. दक्षिणी भारत में उदय होने वाले तीन प्रमुख राज्य कौन–कौन से थे?
    7. भारतीय कला और संस्कृति के क्षेत्र में गुप्त काल की उपलब्धियाँ लिखिए –
2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –
    1. ———समुद्रगुप्त के दरबारी कवि थे।
    2. हर्षचरित के ——— लेखक थे।
    3. चीनी तीर्थयात्री ———काफी लंबे समय तक हर्ष के दरबार में रहे।
    4. पांड्यों की राजधानी——— थी।
    5. आर्यभट्ट एक प्रसिद्ध ——— थे।
    6. ——— एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे।
    7. चोलों के सबसे प्रसिद्ध शासक ——— थे।
    8. कुतुबमीनार परिसर में ——— स्थित है।

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	_____			
2	_____			
3	_____			
4	_____			
5	_____			
6	_____			
7	_____			
8	_____			
9	_____			
10	_____			

12 हमारा देश भारत

प्रस्तावना

भारत एक विशाल देश है। यहाँ पर विविधता में एकता है। भारत देश की भौतिक बनावट असमान है। कहीं पर्वत, कहीं पठार, कहीं मैदान तो कहीं मरुस्थल पाए जाते हैं। गंगा–सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा निर्मित मैदान विश्व का सबसे बड़ा एवं उपजाऊ क्षेत्र है। भारत की बड़ी आबादी इस मैदान में रहती है जो कृषि पर निर्भर है। इस अध्याय में आप भारत की राजनैतिक और भौतिक विशेषताओं का अध्ययन करेंगे।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद हम सीखेंगे–

- भारत का राजनैतिक विभाजन
- भारत के प्रमुख पड़ोसी देश
- भारत के आकार एवं विस्तार की जानकारी
- भारत के अक्षांशीय व देशान्तरीय विस्तार की जानकारी
- भारत के भौतिक स्वरूप व उनकी विशेषताएँ
- भारत का मानक देशान्तर व स्थानीय समय
- भारत की प्रमुख नदियाँ

असद एक बारह वर्ष का लड़का है। वह अपने चाचा इकबाल के साथ दूध की सप्लाई का काम करता है। असद हर रोज गगन विहार कालोनी में आशा मैडम के घर दूध पहुँचाता है। आशा मैडम का पुत्र रोहित बी० ए० की पढ़ाई दिल्ली विश्व विद्यालय से कर रहा है। असद जब भी आशा मैडम के घर जाता है तो, उसकी नजर ड्राईंग रूम की दीवार पर टंगे भारत के मानचित्र पर पड़ती है। वह जिज्ञासा भरी नजरों से हर रोज उस मानचित्र को देखता है। असद इस मानचित्र के विषय में जानना चाहता है। एक दिन रोहित असद को दीवार पर टंगे मानचित्र को देखते हुए देख लेता है। इसके विषय में रोहित व असद के बीच एक वार्तालाप शुरू होती है जो इस प्रकार है–

रोहितः असद! इतनी गौर से दीवार पर क्या देख रहे हो?

असदः भईया, मैं दीवार पर टंगे इस मानचित्र को देख रहा हूँ। यह क्या है?

रोहितः असद तुम इसे नहीं पहचानते, यह हमारे देश भारत का राजनैतिक मानचित्र है।

असदः हमारे देश भारत का मानचित्र! भईया यह कितना सुन्दर है ना।

रोहितः हाँ, असद हमारा देश बहुत सुन्दर देश है।

असदः भईया क्या आप मुझे हमारे देश भारत के बारे में बताएँगे? मुझे अपने देश के बारे में जानने की बड़ी इच्छा है।

रोहितः अरे! क्यों नहीं। आओ मेरे पास यहाँ बैठो। मैं तुम्हें अपने देश भारत के बारे में विस्तार से बताता हूँ।

(असद ड्राईंग रूम के सोफे पर बैठ जाता है। रोहित अलमारी से एक एटलस अर्थात् नक्शों की किताब निकाल कर असद को भारत का राजनैतिक मानचित्र दिखाता है।

भारत के राज्य एवं राजधानी

क्रमांक	राज्यों के नाम	राजधानियाँ
1	आंध्र प्रदेश	अमरावती
2	अरूणाचल प्रदेश	ईटानगर
3	असम	दिसपुर
4	बिहार	पटना
5	छत्तीसगढ़	रायपुर
6	गोवा	पणजी
7	गुजरात	गांधीनगर
8	हरियाणा	चंडीगढ़
9	हिमाचल प्रदेश	शिमला
10	झारखण्ड	रांची
11	कर्नाटक	बेंगलुरु
12	केरल	तिरुवनंतपुरम
13	मध्य प्रदेश	भोपाल
14	महाराष्ट्र	मुंबई
15	मणिपुर	इम्फाल
16	मेघालय	शिलांग
17	मिजोरम	आइजोल
18	नागालैण्ड	कोहिमा
19	ओडिशा	भुबनेश्वर
20	पंजाब	चंडीगढ़
21	राजस्थान	जयपुर
22	सिक्किम	गंगटोक
23	तमिलनाडु	चेन्नई
24	त्रिपुरा	अगरतला
25	उत्तर प्रदेश	लखनऊ
26	उत्तराखण्ड	देहरादून
27	पश्चिम बंगाल	कोलकाता
28	तेलंगाना	हैदराबाद

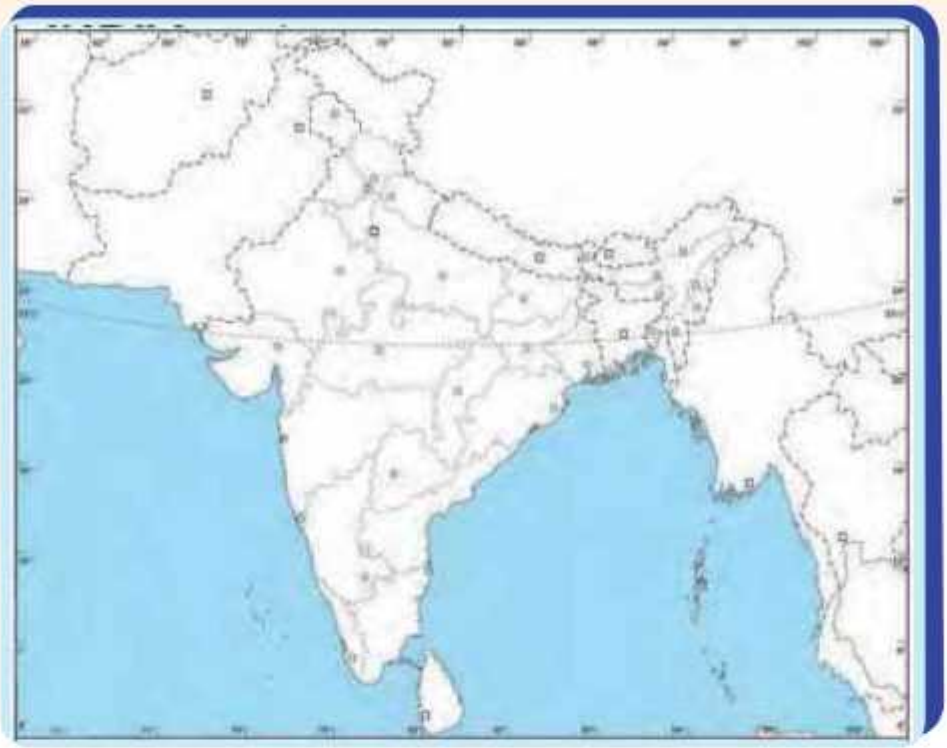

रोहितः असद! इस मानचित्र को गौर से देखो। यह भारत का राजनैतिक रेखा मानचित्र है। इस मानचित्र में भारत के राज्यों व उनकी राजधानियों को दर्शाइए। पड़ोसी देशों को भी दर्शाइए।

असदः भईया, ये सब मिलाकर कितने राज्य होंगे?

रोहितः भारत एक विशाल देश है। इसके शासन को सही ढंग से चलाने के लिए इस समय भारत को 28 राज्यों में रखा गया है। भारत में इस समय क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य राजस्थान है और गोवा भारत का सबसे छोटा राज्य है। इन राज्यों के अलावा भारत में 8 केन्द्र शासित प्रदेश भी हैं। ऐसा ही एक केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली है। भारत की राजधानी नई दिल्ली है।

असदः भईया, ये केन्द्र शासित राज्य क्या होते हैं? क्या आप मुझे इनके नाम बता सकते हैं?

रोहितः केन्द्र शासित प्रदेश उस राज्य को कहते हैं जिसका प्रशासन भारत की केन्द्र सरकार का प्रतिनिधि अर्थात् उपराज्यपाल संभालता है। इन राज्यों को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त नहीं होता। भारत में ऐसे आठ प्रदेश हैं जिनके नाम हैं–

केन्द्र शासित राज्य एवं राजधानी

केन्द्र शासित राज्य	राजधानियाँ
1. दिल्ली	नई दिल्ली
2. चंडीगढ़	चंडीगढ़
3. अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	पोर्टब्लेयर
4. दादरा और नगर हवेली एवम् दमन और दीव	दमन
5. जम्मू कश्मीर	श्रीनगर
6. पुदुचेरी	पुदुचेरी
7. लक्षद्वीप	कवरत्ती
8. लद्दाख	लेह

12.1 पाठगत प्रश्न

1. भारत के निम्न राज्यों का उनकी राजधानियों से उचित मिलान कीजिए

	राज्य	राजधानियाँ
1	राजस्थान	दिसपुर
2	तमिलनाडु	जयपुर
3	मध्यप्रदेश	शिमला
4	असम	चेन्नई
5	हिमाचल प्रदेश	भोपाल

2. भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित राज्यों को अलग–अलग रंग से प्रदर्शित कीजिए।
   1. उत्तर प्रदेश
   2. ओडिशा
   3. मेघालय
   4. केरल
   5. पंजाब

रोहितः असद! ध्यान से इस मानचित्र को देखो। इसमें भारत व उसके पड़ोसी देशों को दिखाया गया है। ये हमारे पड़ोसी देशों का मानचित्र है।

असदः भईया, ये सब हमारे पड़ोसी देश हैं, लेकिन नीचे तो हिन्द महासागर है। यहाँ हमारा पड़ोसी देश कौन है?

रोहितः (असद को मानचित्र दिखाते हुए) देखो भारत के सात पड़ोसी देशों की सीमाएँ तो भारत की सीमा से मिलती हैं। उनके नाम हैं: अफगानिस्तान पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और म्यांमार। हिन्द महासागर में भी दो ऐसे देश हैं जिनकी सीमा तो हमारी भू–सीमा से नहीं मिलती परन्तु वे हमारे द्वीपीय पड़ोसी देश हैं। ये श्रीलंका और मालदीव हैं।

12.2 पाठगत प्रश्न

1. भारत के उन पड़ोसी देशों की सूची बनाइए जिनकी सीमा भारत की सीमा से लगती है।
2. भारत के मानचित्र में भारत के पड़ोसी देशों के नाम दर्शाइए।
3. भारत के दक्षिण में स्थित किसी एक देश का नाम लिखिए।
4. भारत के पूर्व में स्थित पड़ोसी देशों के नाम लिखिए।

भारत की स्थिति एवं विस्तार –

असदः भईया, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में ये नन्हें–नन्हें बिन्दु से क्या दिखाया गया है।

रोहितः भारत का दक्षिणी भाग प्रायद्वीपीय है। यह तीन ओर से समुद्र से घिरा है। इसके पूर्व में बंगाल की खाड़ी है। पश्चिम में अरब सागर फैला है। इसके नीचे दक्षिण में हिन्द महासागर स्थित है। देखो, बंगाल की खाड़ी में छोटे–छोटे द्वीप हैं। ये अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के नाम से जाने जाते हैं। दूसरी ओर अरब सागर में स्थित छोटे–छोटे द्वीप लक्षद्वीप हैं। असद, ये दोनों द्वीप समूह भारत के ही भाग हैं। हमारे देश हिन्दुस्तान के नाम पर ही इस महासागर का नाम हिन्द महासागर पड़ा है। हिन्द महासागर में हमारे देश की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है।

असदः अच्छा भईया, मानचित्र में ये रेखाएँ क्यों खींची गई हैं। इनका मानचित्र से क्या सम्बन्ध है?

रोहितः मानचित्र पर ये रेखाएँ अक्षांश एवं देशांतर रेखाएँ हैं। ये रेखाएँ बहुत ही महत्वपूर्ण होती हैं। इनके द्वारा ही किसी भी स्थान या देश की स्थिति का पता लगाया जाता है। ग्लोब या मानचित्र पर पूर्व–पश्चिम रेखाएँ अक्षांश वृत्त व उत्तर दक्षिण खींची रेखाएँ देशान्तर अर्द्धवृत्त (रेखाएँ) होती हैं।

असदः अच्छा भईया, इन रेखाओं से भारत की स्थिति का पता कैसे चलता है? मुझे भी बताओ।

रोहितः इस मानचित्र को देखो इस मानचित्र में भारत का मुख्य भाग 8°4′ उत्तरी अक्षांश से 37°6′ उत्तरी अक्षांशों के बीच स्थित है। इसी प्रकार भारत 68°7′ पूर्वी देशान्तर से 97°25′ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। कर्क रेखा 23°30′ उत्तरी अक्षांश देश के लगभग बीच से गुजरती है।

असदः अच्छा भईया, हमारे देश की लम्बाई चौड़ाई कितनी होगी?

रोहितः इन मानचित्रों को पुनः देखो। इनसे भारत की लम्बाई व चौड़ाई का पता आसानी से लगाया जा सकता है। भारत उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्या कुमारी तक 3214 किलोमीटर लम्बा तथा पूरब में असम से लेकर पश्चिम में गुजरात तक 2933 कि0 मी0 चौड़ा है। भारत का कुल क्षेत्रफल लगभग 32.8 लाख वर्ग कि0 मी0 है। यह विश्व का सातवां बड़ा देश है।

असदः मानचित्र में भारत के बीचों बीच उत्तर से दक्षिण की ओर यह बिन्दुदार लाईन क्यों खिंची है? इसका क्या अर्थ है?

रोहितः भारत के बीचों बीच उत्तर से दक्षिण की ओर खिंची बिन्दुदार रेखा 82°30′ पूर्वी देशान्तर रेखा है। यह भारत का मानक देशान्तर है। इसके समय को ही भारत का मानक समय माना जाता है। यह उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर से गुजरती है। इस देशान्तर के स्थानीय समय को भारत का मानक समय माना जाता है। जब इस देशान्तर पर 12 बजते हैं तो पूरे भारत में घड़ियों में 12 बजे होते हैं।

12.3 पाठगत प्रश्न

1 निम्न रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्दों से पूरा कीजिए?

1. भारत का क्षेत्रफल लगभग ..... वर्ग कि0 मी0 है।
2. भारत की उत्तर दक्षिण लम्बाई ..... कि0 मी0 है।
3. भारत का अक्षांशीय विस्तार ..... से ..... अक्षांश तक है।
4. भारत का देशान्तरीय विस्तार ..... पूर्वी देशान्तर से ..... पूर्वी देशान्तर तक है।
5. ..... (23°30′) अक्षांश भारत के लगभग मध्य से गुजरती है।

असद अभ्यास पूरा करके रोहित को दिखा देता है। उसके द्वारा किया गया अभ्यास सही निकलता है। रोहित उसे शाबासी देता है। असद रोहित से अपने घर जाने के लिए इजाजत लेता है। लेकिन वह आग्रह करता है कि कल आप मुझे इसके आगे भारत के विषय में बताएंगे। रोहित उसका आग्रह स्वीकार कर लेता है और उसे जाने की अनुमति देता है।

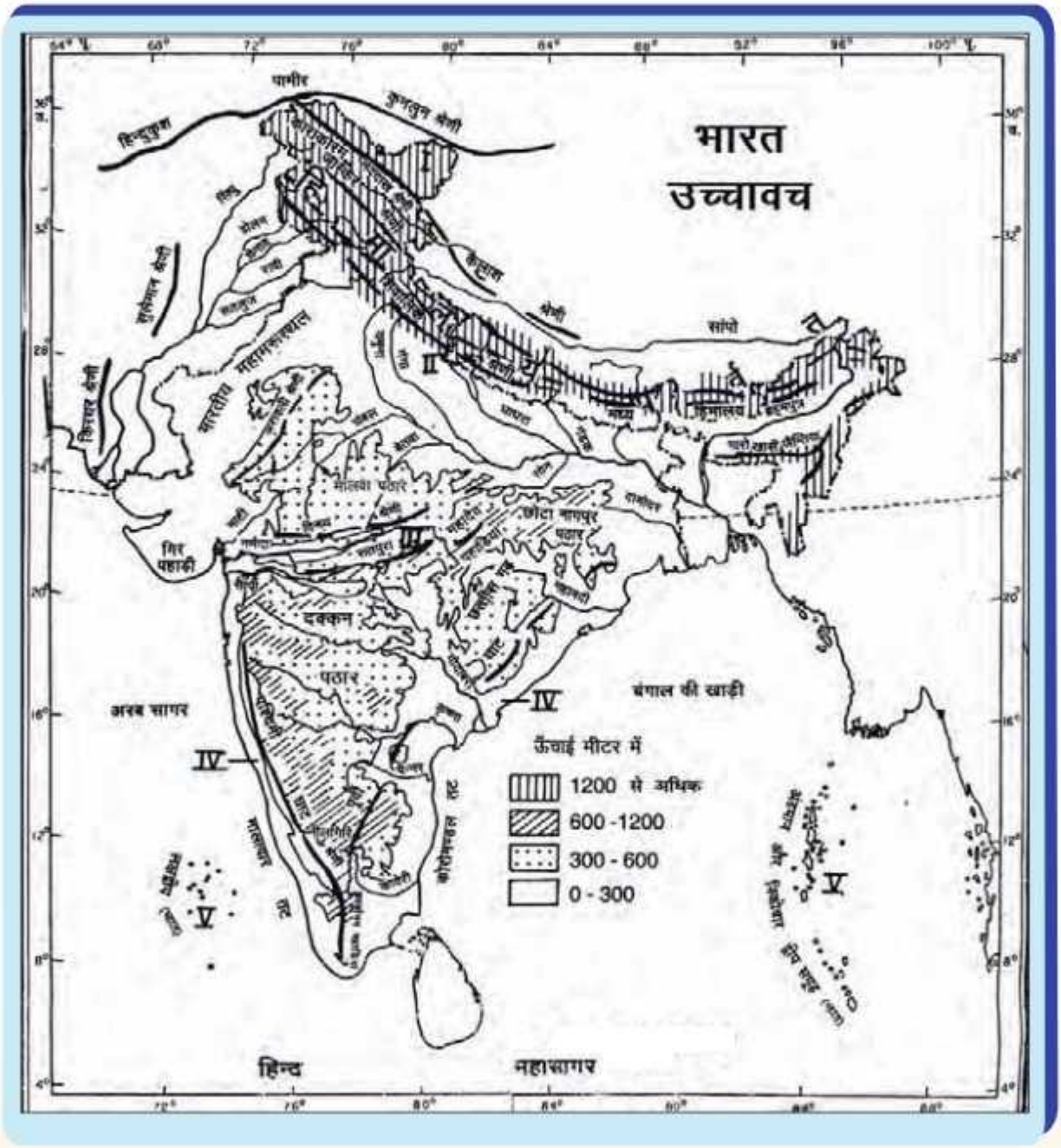

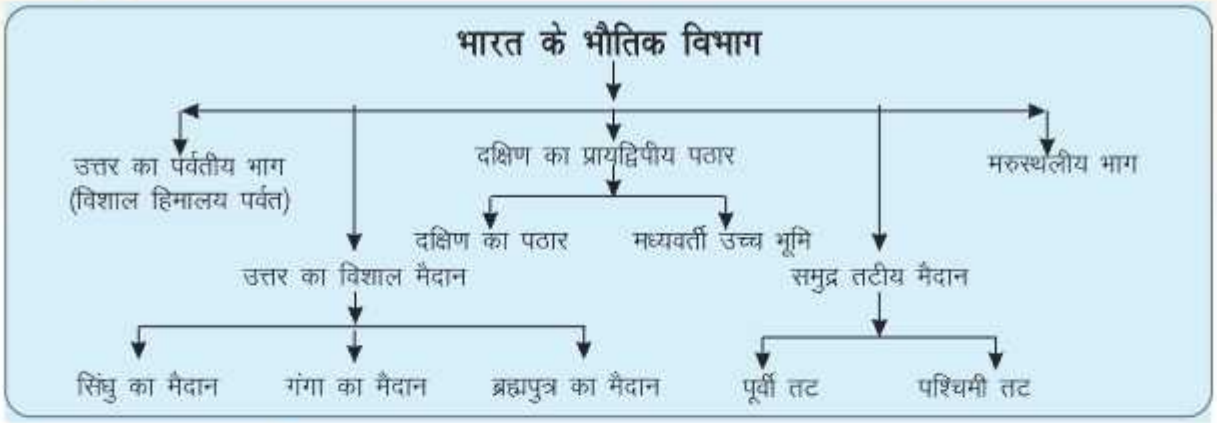

भारत का धरातलीय स्वरूप–

'अगले दिन'

असद: भईया, आज मैं घर अपने चाचा को बताकर आया हूँ कि मुझे आने में देर हो जाएगी। भईया से भारत के विषय में मैं और जानकारी प्राप्त कर रहा हूँ। आज आप मुझे उसके आगे बताइये।

रोहित: आओ, मैं तुम्हें आज भारत की धरातलीय बनावट अर्थात भारत की भू–आकृति के बारे में बताता हूँ। इस मानचित्र को देखो। यह भारत का भौतिक मानचित्र है।

असद: भईया, यह मानचित्र तो बड़ा ही रंग बिरंगा है। इसमें तो कई तरह के रंग भरे हुए हैं। ऐसा क्यों है?

रोहित: भारत एक विशाल भू भाग है। इसका धरातल सब जगह एक समान नहीं है। इसके उत्तरी भाग में हिमालय का पर्वतीय क्षेत्र फैला है। यह एक विशाल पर्वत माला है। इसकी तीन समानान्तर पर्वत श्रृंखलाऐं है। इनकी ऊँचाई अलग–अलग है। इनमें उत्तर की ओर सबसे ऊँची पर्वत श्रृंखला का नाम हिमाद्री है। इसी में संसार की सबसे ऊँची पर्वत चोटी एवरेस्ट स्थित है। इसकी ऊँचाई 8848 मीटर है। इसके अतिरिक्त कंचनजंगा, धौलागिरी, अन्नपूर्णा, नंगापर्वत, नंदादेवी आदि मुख्य चोटियाँ हैं। ये लगभग 8000 मीटर से भी अधिक ऊँची हैं। एटलस की सहायता से इन चोटियों को ढूँढें। इसके ठीक नीचे मध्य हिमालय है। इनमें कई हिल स्टेशन स्थित हैं, जैसे– शिमला, नैनीताल, धर्मशाला, मनाली आदि। हिमालय का दक्षिणी भाग शिवालिक के नाम से जाना जाता है। हिमालय से भारत की अनेक नदियों का जन्म होता है। यह भारत की उत्तरी सीमा पर प्रहरी का कार्य भी करता है।

असद: भारत के भौतिक मानचित्र में हिमालय के नीचे हरे रंग का क्या मतलब है?

रोहित: हिमालय के दक्षिण में ये हरा रंग उत्तरी विशाल मैदान को दर्शा रहा है। यह मैदान हिमालय से निकलने वाली तीन बड़ी नदियों– सिन्धु, गंगा व ब्रह्मपुत्र तथा उनकी सहायक नदियों द्वारा जलोढ़ मिट्टी बिछाकर बनाया गया है। यह मैदान समतल एवं सपाट है। यह बहुत उपजाऊ मैदान है। यहाँ सभी प्रकार की खाद्य फसलें उगाई जाती हैं। इसलिए इस मैदान में भारत की बड़ी जनसंख्या निवास करती है। इसी मैदान में हम सभी रहते हैं।

असद: अच्छा भईया, मैदान के नीचे वाले भाग के बारे में भी बताइए।

रोहित: यह भारत का दक्षिणी भाग बड़ा ही उबड़–खाबड़ व पथरीला है। ऐसे क्षेत्र को पठारी क्षेत्र कहते हैं। भारत का दक्षिणी भाग भी पठारी है। इसकी आकृति त्रिभुजाकार है। इस क्षेत्र में बहुत सी पुरानी पहाड़ी श्रृंखलाएँ व घाटियां स्थित हैं। इस क्षेत्र की सबसे पुरानी पहाड़ी अरावली पर्वत श्रृंखला है। इसके कुछ अंश दिल्ली में भी पाये जाते हैं। इस पठार के पश्चिमी किनारे पर पश्चिमी घाट या सह्याद्री पहाड़ियां फैली हैं। पूर्वी घाट पर टूटी–फूटी पहाड़ियां हैं। इसके उतरी भाग में सतपुड़ा व विध्यांचल पर्वत स्थित है। यह सारा भाग काफी ऊँचा नीचा है। यहाँ पर लोहा, कोयला व अन्य खनिज खूब पाये जाते हैं।

असद: भईया, ये तो भारत के केवल तीन भौतिक भाग हुए। इसके अतिरिक्त और भी विभाग हैं क्या?

रोहितः भारत में इनके अलावा भी और कई प्रकार का धरातलीय स्वरूप मिलता है। पश्चिमी भाग में भारत का महा मरूस्थल स्थित है। इसे थार मरूस्थल भी कहते हैं। यहाँ चारों ओर रेत ही रेत फैला है। यहाँ पर वर्षा बहुत कम होती है। इसलिए पेड़–पौधे भी न के बराबर हैं। नीचे समुद्री तट के किनारे भारत के तटीय मैदान पाये जाते हैं। पूर्वी तट के मैदान को पूर्वी तटीय मैदान और पश्चिमी तट के मैदान को पश्चिमी तटीय मैदान कहते हैं। पूर्वी तटीय मैदान अपेक्षाकृत चौड़ा है।

असद, भारत के दोनों ओर स्थित द्वीप समूह भी भारत का ही भाग है। बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और अरब सागर में स्थित लक्षद्वीप समूह भी अलग भूआकृति के नाम से जाने जाते हैं।

असदः भईया, भारत में नदियों का मानचित्र भी दिखाइए। मुझे भारत की नदियों के बारे में भी जानना है।

रोहितः ये लो। इस मानचित्र को देखो। इसमें भारत की प्रमुख नदियों व उनकी कुछ मुख्य सहायक नदियों को दिखाया गया है।

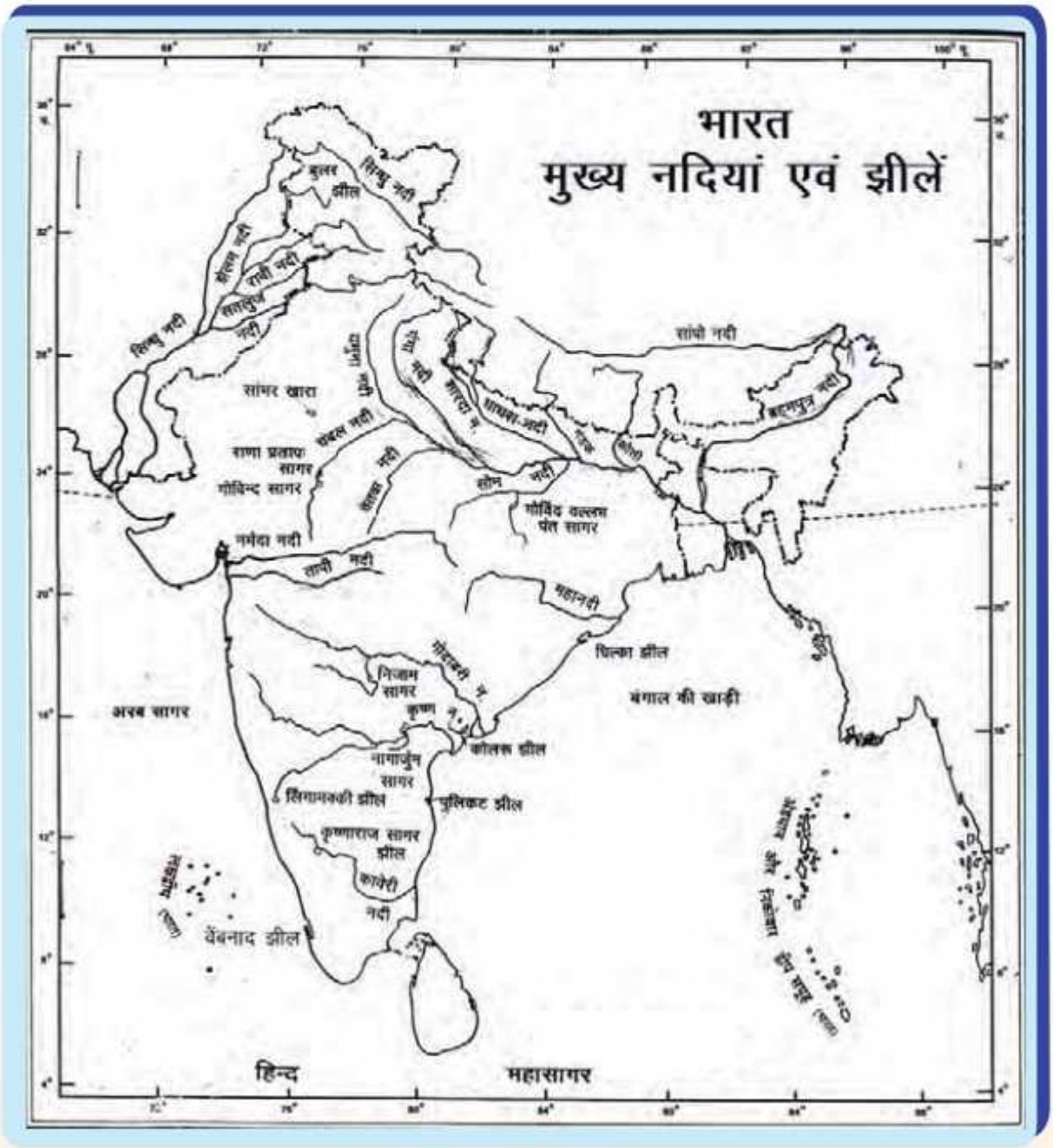

भारतः मुख्य नदियाँ और झीलें

भारत की नदियाँ–

असदः भईया, ये तो बहुत सारी नदियाँ हैं। इनको कैसे ध्यान रखा जाता है ?

रोहितः देखो, भारत की नदियों को हम दो भागों में बाँटते हैं।

1. उत्तर भारत की नदियाँ।
2. दक्षिणी भारत की नदियाँ।

अब सबसे पहले उत्तर भारत की नदियों के बारे में जानते हैं। इनमें तीन मुख्य नदियाँ है:

1. सिन्धु 2. गंगा 3. ब्रह्मपुत्र

सिन्धु नदी का उद्‌गम स्थान मानसरोवर झील के निकट है। सतलुज, ब्यास, रावी, चिनाब व झेलम इसकी सहायक नदियाँ हैं। यह भारत के पश्चिमी भाग में बहती है। इसी प्रकार गंगा नदी गंगोत्री से निकलती है। इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ यमुना, घाघरा, गंडक व कोसी हैं, दक्षिण से सोन नदी इसमें आकर मिलती है। ब्रह्मपुत्र नदी भी मानसरोवर झील से निकलती है और दिबाँग, लोहित इसकी सहायक नदियाँ हैं।

दक्षिण भारत में गोदावरी, महानदी, कृष्णा, कावेरी नदियाँ हैं। ये बंगाल की खाड़ी में जा मिलती हैं। जबकि नर्मदा व ताप्ती नदियाँ अरब सागर में मिलती हैं। गोदावरी नदी को दक्षिण की गंगा कहा जाता है।

असदः अच्छा भईया, अब अगले हफ्ते मैं गांव से आकर आपसे भारत के विषय में और जानकारी प्राप्त करूँगा। मैं अपने गाँव में अपने दोस्तों को ये सारी जानकारी भी दूँगा।

रोहितः ठीक है असद। गाँव से लौटकर जल्द आओ। मैं तुम्हारा दाखिला पास के स्कूल के कक्षा 7 में कराता हूँ। फिर तुमको इन सब बातों के लिए किसी से पूछना नहीं पड़ेगा। तुम्हारे अध्यापक सब बातें बताएंगे।

कार्यपत्रक

1. मुख्य नदियाँ –	1.	2.	3. .....
2. मुख्य पर्वत	1.	2.	3. .....
3. मुख्य झीलें	1.	2.	3. .....

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए–
   1. भारत में कितने केन्द्र शासित प्रदेश हैं?
   2. भारत के दो द्वीपीय पड़ोसी देशों के नाम बताइए।
   3. गंगा की दो सहायक नदियों के नाम लिखिए।
   4. भारत की मानक देशान्तर 82°30' पूर्वी देशान्तर को बनाने के पीछे क्या कारण हैं?
   5. भारत का क्षेत्रफल कितना है?

2. निम्नलिखित का उचित मिलान कीजिए–

	कालम (क)	कालम (ख)
1.	कर्क रेखा	एक केन्द्र शासित प्रदेश
2.	हिमाद्री	दक्षिणी भारत की एक नदी
3.	भूटान	हिमालय पर्वत की एक श्रृंखला
4.	कावेरी	भारत का एक पड़ोसी देश
5.	लक्षद्वीप	23°30' उत्तरी अक्षांश

3. निम्नलिखित रिक्त स्थानों को पूरा कीजिए–
   1. क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य ———— है।
   2. क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे छोटा राज्य ———— है।
   3. भारत की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला ———— है।
   4. ———— नदी को दक्षिण भारत की गंगा कहा जाता है।
   5. भारत की राजधानी ———— है।

4. स्वंय करके सीखें।
   1. भारत की नदियों को एक मानचित्र में दर्शाइए।
   2. भारत के प्रमुख राज्यों की राजधानियों की सूची बनाइए।

5. चर्चा करें–
   1. यदि भारत के उत्तर में विशाल हिमालय पर्वत न होता तो उसका हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता?
   2. उत्तर भारत की अधिकतर नदियाँ बारह मास बहती रहती हैं जबकि दक्षिण भारत की नहीं। ऐसा क्यों?

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	_____			
2	_____			
3	_____			
4	_____			
5	_____			
6	_____			
7	_____			
8	_____			
9	_____			
10	_____			

13 भारत : जलवायु

प्रस्तावना

हम जानते हैं कि एक वर्ष में कई ऋतुएं होती हैं। कभी गर्मी, कभी सर्दी और कभी वर्षा होती है। ऋतु के अनुसार ही हम सब अपने कपड़े, रहन–सहन, आवास, खान–पान व अन्य क्रियाकलाप करते हैं।

अधिगम उद्देश्य

इस पाठ से हम प्राप्त करेंगे–

- मौसम व जलवायु के तत्वों की जानकारी।
- भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों की जानकारी।
- भारत की ऋतुओं की जानकारी।
- भारत में मानसून की जानकारी।
- भारत के विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा के वितरण की जानकारी।

मौसम व जलवायु के तत्व

किसी स्थान या क्षेत्र की वायुमण्डलीय दशाओं के आधार पर मौसम व जलवायु का निर्धारण किया जाता है। इसमें मुख्यतः तापमान, वर्षा, वायुदाब, पवनें, आर्द्रता, बादलों की स्थिति आदि को शामिल किया जाता है। दिए गए चित्र में मौसम व जलवायु के तत्वों का अवलोकन कीजिए।

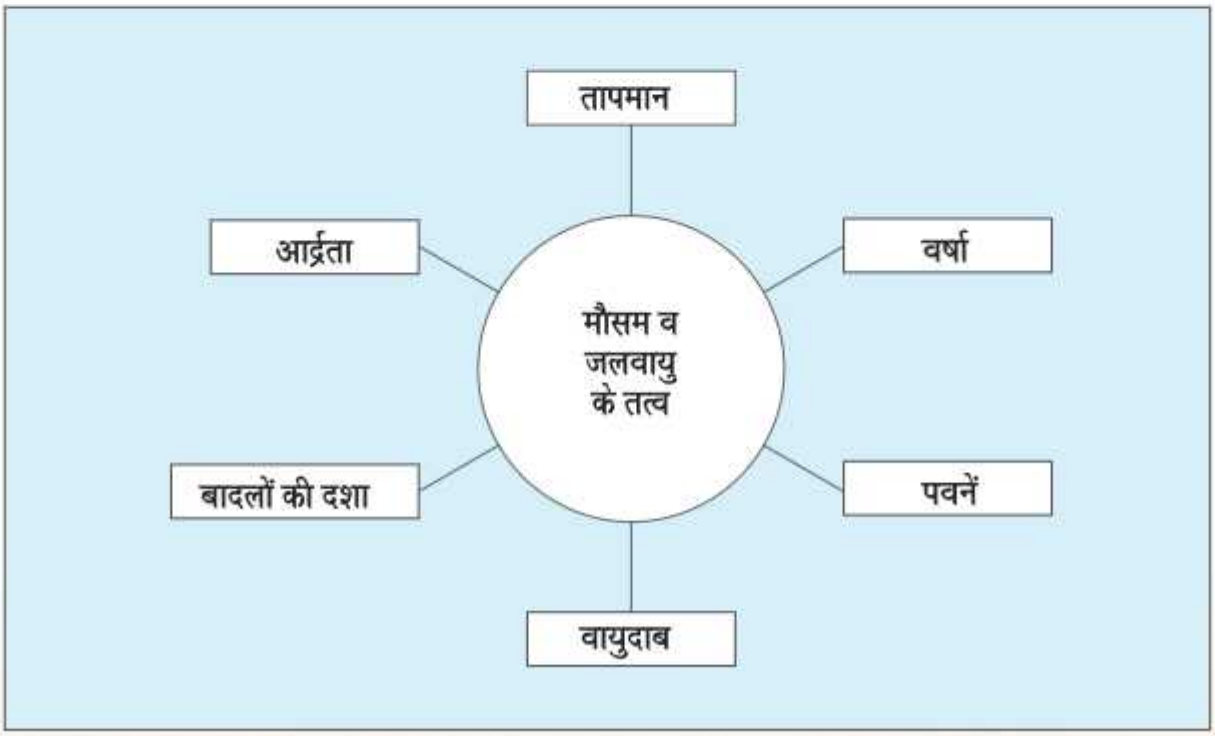

मौसम, ऋतु एवं जलवायु

मौसम, ऋतु एवं जलवायु का सम्बन्ध वायुमण्डलीय दशाओं से है। इनमें अन्तर केवल अवधि एवं क्षेत्र के आधार पर है। मौसम, ऋतु एवं जलवायु का अन्तर समझने के लिए दिए गए चित्र का ध्यान पूर्वक अवलोकन कीजिए।

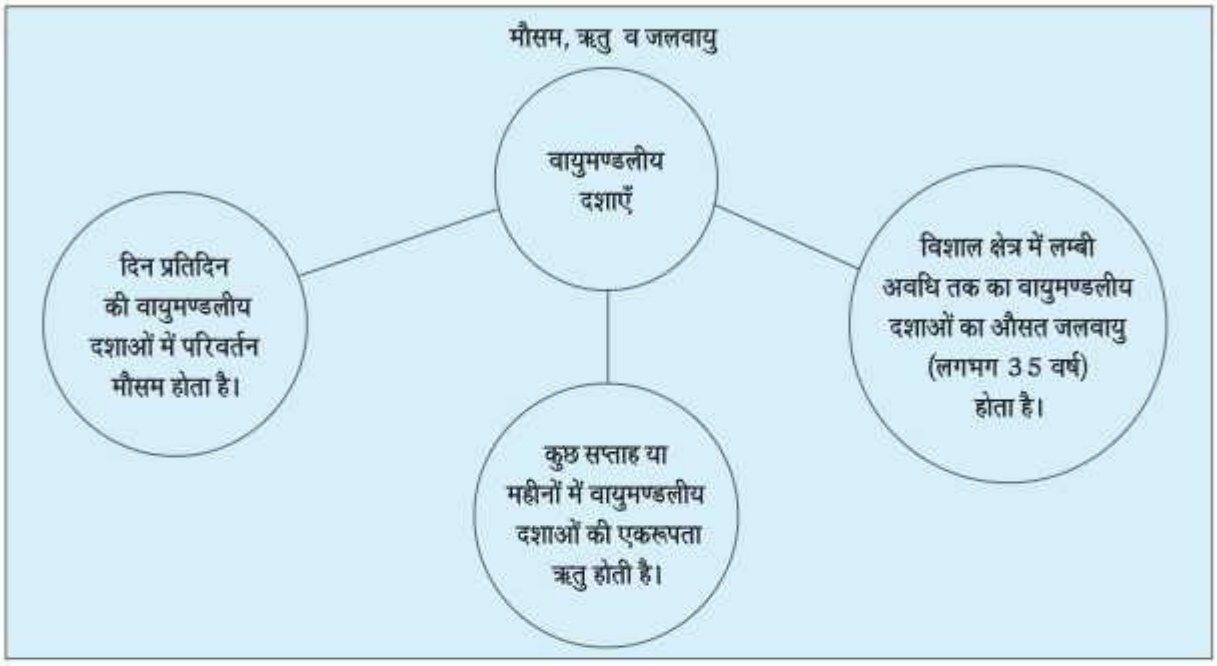

13.1 पाठगत प्रश्न

1. निम्नलिखित खाली स्थानों को भरिये –
   1) दिन–प्रतिदिन बदलने वाली वायुमण्डलीय दशाओं को ———— कहते हैं।
   2) कई सप्ताह या महिनों तक एक तरह की दशाओं को ———— कहते हैं।
   3) विशाल क्षेत्र में एक लम्बी अवधि के औसत को ———— कहते हैं।
2. अपने क्षेत्र के पिछले एक महीने के मौसम का अवलोकन करें और बताएँ कि उसमें आपने किस–किस तरह के बदलाव महसूस किए हैं?

भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक

भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक निम्नलिखित हैं।

अक्षांशीय स्थिति

भारत भूमध्य रेखा के उत्तर में स्थित एक विशाल देश है। यह लगभग 30° अक्षांशों के विस्तार में फैला हुआ है। कर्कवृत्त (23½° उ0) भारत के लगभग मध्य से होकर गुजरता है। यह भारत को उष्ण तथा शीतोष्ण कटिबन्धों में विभाजित करता है। भारत में भूमध्य रेखा (विषुवत वृत्त) व कर्क वृत्त के मध्य स्थित भाग में सूर्य की किरणें अपेक्षाकृत सीधी पड़ती हैं जिससे इस भाग में वर्ष भर ऊँचा तापमान रहता है। कर्क वृत्त के उत्तर का भाग शीतोष्ण कटिबन्ध में पड़ता है, यहाँ पर सर्दियों में अधिक सर्दी व गर्मियों में अधिक गर्मी पड़ती है। इसे विषम जलवायु भी कहा जाता है।

समुद्र से दूरी

भारत का दक्षिणी भाग तीन ओर से समुद्र से घिरा है। इसी कारण समुद्री आर्द्र पवनों के प्रभाव में रहता है इससे वहाँ पर वर्ष भर एक सा मौसम बना रहता है। समुद्र के निकटवर्ती क्षेत्रों में गर्मियों में न अधिक गर्मी व सर्दियों में न अधिक सर्दी पड़ती है। इस प्रकार की जलवायु को 'सम जलवायु' भी कहते हैं।

समुद्र तल से ऊँचाई

समुद्र तल से ऊँचाई बढ़ने के साथ–साथ तापमान कम होता जाता है। इसी कारण एक ही अक्षांश पर पाए जाने वाले पर्वतीय भाग ठन्डे व मैदानी भाग अपेक्षाकृत गर्म होते हैं। भारत में लुधियाना व शिमला एक ही अक्षांश पर स्थित हैं। इन दोनों स्थानों के मौसम में अन्तर स्थापित कीजिए एवं अपनी पुस्तिका में लिखिए।

क्या आप जानते हैं?

समुद्र तल से प्रति 165 मीटर की ऊँचाई पर तापमान 1°सेल्सियस कम हो जाता है।

हिमालय पर्वत

भारत के उत्तर में स्थित हिमालय पर्वत जलवायु विभाजक का कार्य करता है। यह साईबेरिया से आने वाली ठन्डी व बर्फीली हवाओं से भारत को बचाता है इस कारण भारत के उतरी मैदानों में शीत ऋतु का तापमान बहुत नीचे नहीं आ पाता। इसके अतिरिक्त हिमालय पर्वत समुद्र की ओर से आने वाली आर्द्र मानसूनी पवनों को भी रोकता है, इसके कारण समस्त उतर भारत में वर्षा ज्यादा होती है।

13.2 पाठगत प्रश्न

निम्न स्तम्भों को मिलाकर सही जोड़े बनाइए–

क	ख
1. कर्क वृत्त के उतर में स्थित जलवायु	सम जलवायु
2. कर्क वृत्त के दक्षिण में स्थित भारत की जलवायु	विषम जलवायु
3. समुद्र तट से दूर स्थित दिल्ली	शीतोष्ण कटिबन्ध
4. समुद्र तट के निकट त्रिवेंद्रम	उष्ण कटिबन्ध

चर्चा करें–

दिल्ली में गर्मियों में अधिक गर्मी व सर्दियों में अधिक सर्दी पड़ती है जबकि मुम्बई में ऐसा नहीं होता। क्यों?

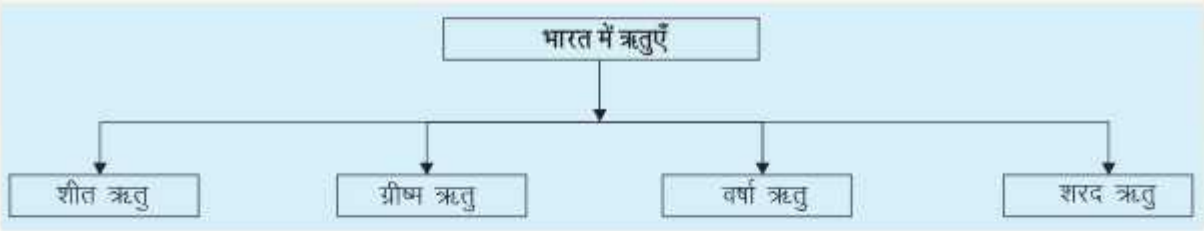

शीत ऋतु– (दिसम्बर से फरवरी तक)

यह ऋतु उत्तर भारत में दिसम्बर से प्रारम्भ होकर फरवरी तक रहती है। इस ऋतु में सूर्य की किरणें दक्षिण गोलार्द्ध में सीधी पड़ती हैं। इसके कारण दक्षिणी गोलार्द्ध में तापमान अधिक होता है एवं इसके विपरीत उत्तरी गोलार्द्ध में तापमान कम है। जनवरी इस ऋतु का सबसे ठंडा महीना होता है। उत्तर भारत के अधिकांश भागों में औसत दैनिक तापमान 21°से० से नीचे रहता है। स्वच्छ आकाश, ठंडा मौसम, निम्न तापमान, धुन्ध तथा कोहरा इस ऋतु की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इसके विपरीत दक्षिण भारत में तापमान प्रायः अधिक होता है इसके कारण बंगाल की खाड़ी व अरब सागर में निम्न वायुदाब स्थापित हो जाने से हवाओं की दिशा में परिवर्तन हो जाता है। उत्तरी पूर्वी मानसूनी पवनों से भारत के दक्षिणी पूर्वी तट पर खूब वर्षा होती है। उत्तर भारत में विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पश्चिमी विक्षोभों से वर्षा होती है। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात होना एक सामान्य बात है, इससे उत्तर भारत के मैदानों मे शीत लहर/ ठिठुरन पैदा कर देती है।

ग्रीष्म ऋतु– (मार्च से मई तक)

उत्तरी भारत के मैदानों में ग्रीष्म ऋतु मार्च से मई तक रहती है। इस समय सूर्य की किरणें अपेक्षाकृत विषुवत वृत्त के उत्तर में उत्तरी गोलार्द्ध में सीधी पड़ती हैं इसके कारण भारत में तापमान अधिक होता है। मई के अंत तक तापमान 40°से0 से 45°से0 तक पहुँच जाता है। इससे उत्तर भारत में निम्न वायुदाब स्थापित हो जाता है। भीषण गर्मी, धूल भरी आंधियाँ तथा शुष्क एवं गर्म पवनें इस ऋतु की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस ऋतु में दक्षिणी भारत की प्रायद्वीपीय स्थिति होने के कारण समुद्री प्रभाव से भारत के दक्षिणी भाग में उत्तर भारत की अपेक्षा तापमान कम होता है। वायुदाब भी अपेक्षाकृत अधिक होता है। उत्तरी भारत में अप्रैल व मई में छिट–पुट वर्षा होती है। दक्षिणी भारत में केरल व कर्नाटक के तटीय भागों में भी वर्षा होती है जिसे "आम्रवृष्टि" कहते हैं। यह आम के फलों को पकाने में सहायक होती है। इसी प्रकार असम व पश्चिमी बंगाल में इस ऋतु में होने वाली तूफानी वर्षा को "काल वैसाखी" कहते हैं।

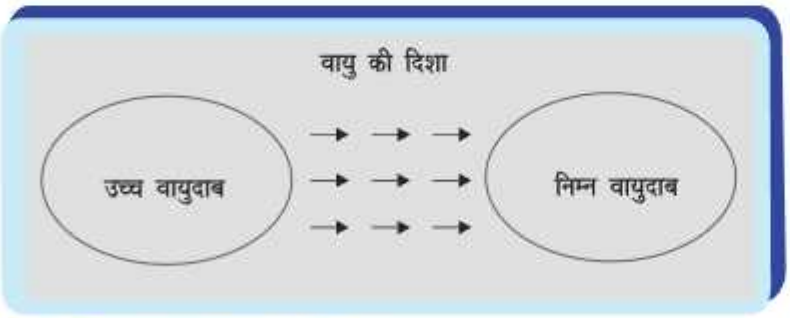

क्या आप जानते हैं?
एक वर्ग से0मी0 क्षेत्रफल पर पड़ने वाले वायु के दवाब को वायुदाब कहते हैं। वायुदाब को मिलीबार में मापा जाता है। समुद्र तल पर वायुदाब सर्वाधिक पाया जाता है।

वर्षा ऋतु– (जून से सितम्बर तक)

इस ऋतु को 'दक्षिण–पश्चिम मानसून' की ऋतु भी कहते हैं। जून माह के आते–आते उत्तर भारत के स्थलीय भाग तप जाते हैं। इससे यहाँ निम्न वायुदाब स्थापित हो जाता है। दक्षिणी भारत में अपेक्षाकृत कम तापमान होने के कारण हिन्द महासागर पर उच्च वायुदाब पाया जाता है। परिणाम स्वरूप समुद्र के उच्च वायुदाब से स्थल के निम्न वायुदाब की ओर पवनें चलने लगती हैं। इन्हें दक्षिणी पश्चिमी मानसूनी पवनें कहते हैं। समुद्र की ओर से आने वाली ये आर्द्र पवनें देश के अधिकांश भागों में खूब वर्षा करती हैं।

शरद ऋतु– (अक्टूबर से नवम्बर तक)

इस ऋतु को 'पीछे हटते हुए मानसून' की ऋतु भी कहते हैं। सितम्बर मध्य से दक्षिण–पश्चिम मानसून उत्तर भारत से पीछे हटने लगता है। इस समय सूर्य का धीरे–धीरे दक्षिणायन होने के कारण उत्तर भारत में तापमान कम होने लगता है। इससे उत्तर भारत में वायुदाब बढ़ने लगता है और उच्च वायुदाब का केन्द्र स्थापित हो जाता है। इसके विपरीत दक्षिण भारत में अपेक्षाकृत तापमान अधिक होने के कारण हिन्द महासागर व बंगाल की खाड़ी पर निम्न वायुदाब का केन्द्र बन जाता है। परिणाम स्वरूप पवनें उत्तर–पूर्व से दक्षिण–पश्चिम की ओर चलने लगती हैं। इसे उतरी–पूर्वी मानसून भी कहते हैं। ये पवनें बंगाल की खाड़ी से आर्द्रता ग्रहण करते हुए तमिलनाडु व आन्ध्र प्रदेश के तटीय भागों में खूब वर्षा करती हैं। उतर भारत में स्वच्छ आकाश तथा शीतल मन्द समीर इस ऋतु की विशेषता है। दिन में तापमान अधिक व रातें सुहावनी व शीतल होती हैं।

पीतकालीन वर्षा

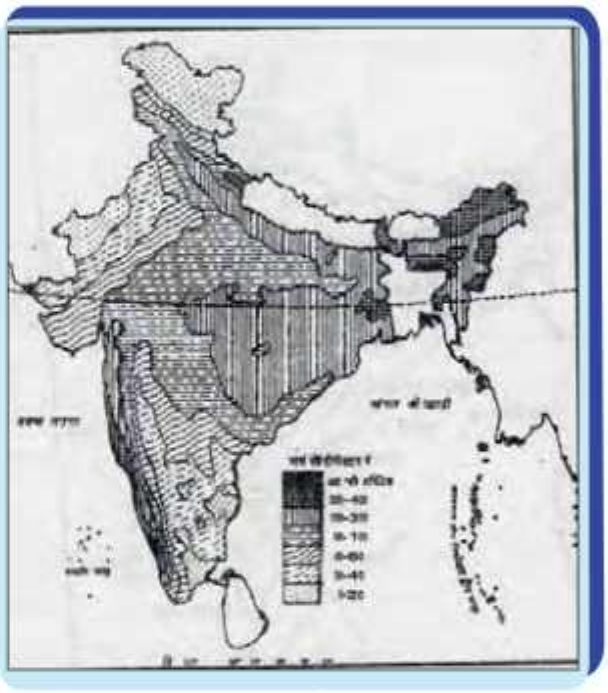

दक्षिणी–पश्चिमी मानसूनी वर्षा

13.3 पाठगत प्रश्न

1. पूरा करें।

ऋतु	अवधि	तापमान (डिग्री सेल्सियस में)
1. सर्दी		
2. गर्मी		
3. वर्षा		
4. शरद		

2. भारत में शीतकालीन वर्षा वाले दो क्षेत्रों के नाम बताइए।

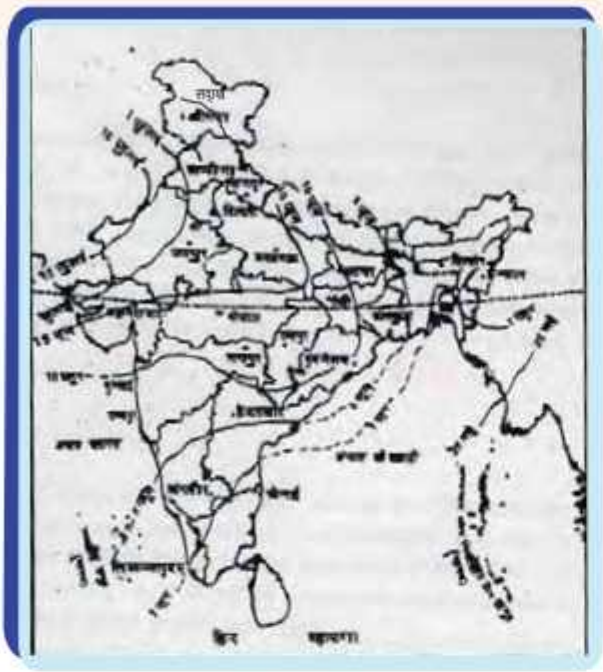

मानसून के आगमन की सामान्य तिथियां

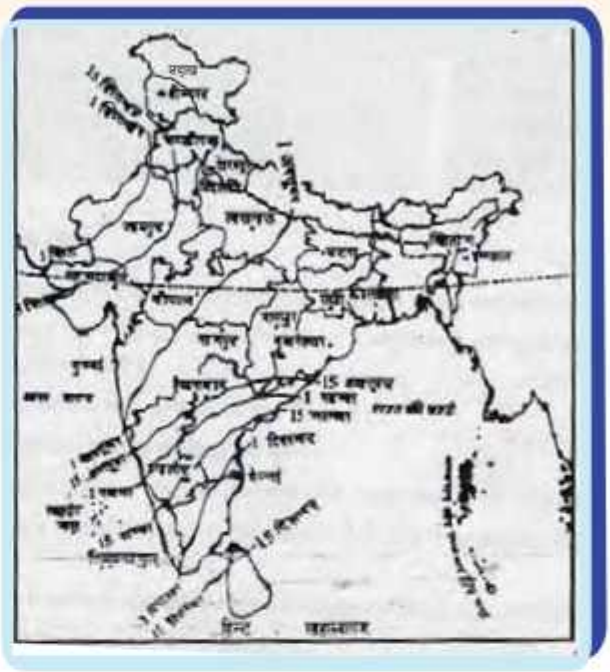

द.९ मानसून के लौटने की सामान्य तिथियां

भारतीय मानसून का रचना तन्त्र

मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के मौसिम शब्द से हुई है। इसका अर्थ मौसम होता है। अर्थात जो पवनें मौसम के अनुसार अपनी दिशाएँ पूर्णतया बदल लेती हैं, मानसूनी पवनें कहलाती हैं। ग्रीष्म ऋतु में उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुका होता है जिसके कारण उत्तरी गोलार्द्ध में सूर्य की किरणों का तिरछापन कम हो जाता है, दिन की अवधि लम्बी होने के कारण अधिक ताप की प्राप्ति होती है। तापमान अधिक होने के कारण उत्तर भारत में हवाएँ गर्म होकर ऊपर उठ जाती हैं, जिससे निम्न वायुदाब बन जाता है। इसके विपरीत हिन्द महासागर में समुद्र के प्रभाव के कारण तापमान अपेक्षाकृत कम होते हैं। इससे समुद्र पर उच्च वायुदाब बना रहता है। फलतः समुद्र के उच्च वायुदाब से स्थल के निम्न वायुदाब की ओर हवाएँ चलने लगती हैं। समुद्र की ओर से आने के कारण ये हवाएँ आर्द्रता से भरी होती हैं। अतः ऊँचे स्थलीय भागों से टकराकर देश के अधिकांश भागों में वर्षा करती हैं। इन्हीं पवनों को भारत में दक्षिणी–पश्चिमी मानसूनी पवनों के नाम से जानते हैं। इन हवाओं का प्रभाव भारत में जून से सितम्बर तक बना रहता है, जिसे "आगे बढ़ता हुआ मानसून" या वर्षा ऋतु कहते हैं। दिए गए मानचित्रों का अवलोकन कीजिए।

मानसून का लौटना

सितम्बर के मध्य से दक्षिणी–पश्चिमी मानसून उत्तर भारत से पीछे हटना आरम्भ कर देता है। ऐसा इसलिए होता है कि उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य से दूर होने लगता है इससे धीरे–धीरे तापमान घटने के कारण देश के उत्तरी पश्चिमी भागों में बना निम्न वायुदाब धीरे–धीरे समाप्त हो जाता है। वायुदाब बढ़ने लगता है, इसके विपरीत निम्न वायुदाब का केन्द्र दक्षिण की आरे बनने लगता है। परिणाम स्वरूप हवाओं की दिशा पूर्णरूप से परिवर्तित हो जाती है। अब ये हवाएँ उत्तर पूर्व से (स्थल) दक्षिण पश्चिम की ओर बहने लगती हैं। बंगाल की खाड़ी को पार करने वाली ये पवनें आर्द्रता ग्रहण कर लेती हैं। भारत के दक्षिणी पूर्वी तट पर वर्षा करती हैं। इन्हीं पवनों को 'उत्तरी पूर्वी मानसून' के नाम से जाना जाता है।

13.4 पाठगत प्रश्न

खाली स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों द्वारा कीजिए–

1. तापमान बढ़ने के साथ–साथ वायुदाब ——— होता है (कम, अधिक)
2. भारत में अधिकांश वर्षा ——— से होती है। (उत्तरी पूर्वी मानसून, दक्षिणी पश्चिमी मानसून)

क्या आप जानते हैं?

आर्द्र हवाओं के सामने पड़ने वाले पर्वतीय ढाल अधिक वर्षा प्राप्त करते हैं जबकि विपरीत दिशा में पड़ने वाले ढाल बहुत कम वर्षा प्राप्त करते हैं। ऐसे प्रदेशों को 'वृष्टिछाया प्रदेश' कहते हैं। भारत में ऐसे क्षेत्रों का पता लगाइए।

जानने योग्य कुछ भौगोलिक तथ्य

- **मानसून:** 'मानसून' शब्द अरबी भाषा के मौसिम शब्द से बना है। इसका अर्थ ऋतु के अनुसार पवनों का पूर्णरूप से विपरीत दिशा में परिवर्तन से है।
- **पश्चिमी विक्षोभ:** भूमध्य सागर से उत्पन्न होने वाले चक्रवात जिनसे भारत के पश्चिमोत्तर भाग में नवम्बर से फरवरी तक शीतऋतु में वर्षा हो जाती है जो रबी की फसलों के लिए लाभकारी होती है।
- **लू:** ग्रीष्म ऋतु में उत्तर भारत के मैदानों में चलने वाली गर्म एवं शुष्क तीव्र हवाएँ।
- **मानसून विस्फोट:** मानसून पवनों द्वारा अचानक पहले वर्षा।
- **तापान्तर:** किसी स्थान के सर्वाधिक तापमान व सबसे कम तापमान में अन्तर। इसकी गणना दैनिक, मासिक व वार्षिक रूप में भी की जा सकती है।
- **भारत में सबसे अधिक व सबसे कम तापमान वाले स्थान:** राजस्थान में जैसलमेर व बाड़मेर तथा सबसे कम तापमान कश्मीर में कारगिल व द्रास।
- **भारत में सबसे अधिक व सबसे कम वर्षा वाले स्थान:** मेघालय में चेरापूँजी व मौसिनराम तथा सबसे कम वर्षा राजस्थान में जैसलमेर।
- **प्रायद्वीप:** स्थल का वह भाग जो तीन ओर से जल से घिरा हुआ होता है।
- **दक्षिण पश्चिम मानसून:** आर्द्रता से लदी हुई वे पवनें जो भारत में दक्षिण पश्चिम दिशा से ग्रीष्म ऋतु में प्रवेश करती हैं और पूरे भारत में वर्षा करती हैं।
- **उत्तरी पूर्वी मानसून:** उत्तर पूर्व से बंगाल की खाड़ी को पार करते हुए भारत के दक्षिण पूर्वी तट पर वर्षा करने वाली पवनें।

अभ्यास

1. उचित शब्दों द्वारा खाली स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. शीत ऋतु में हम ———— कपड़े पहनते हैं।
2. भारत के उत्तर में स्थित ———— पर्वत है।
3. मार्च से मई तक ———— ऋतु होती है।
4. भारत में ———— जलवायु पायी जाती है।

2. सही उत्तर चुनिए।

1. भारत के लगभग मध्य से कौन सा अक्षांश वृत्त गुजरता है?
   क. मकर वृत्त ख. विषुवत वृत्त ग. कर्क वृत्त
2. जिन स्थानों पर वर्षभर एकसा मौसम बना रहता है उसे कौन सी जलवायु कहते हैं?
   क. विषम जलवायु ख. सम जलवायु ग. मानसूनी जलवायु
3. विश्व में सबसे अधिक वर्षा वाला स्थान कौन सा है?
   क. मुम्बई ख. मौसिनराम ग. हैदराबाद

3. निम्न कथनों में सत्य और असत्य बताइए।

1. अगर किसी वर्ष मानसूनी वर्षा कम हो तो गर्मी का मौसम लम्बा होगा। (सत्य, असत्य)
2. सबसे अधिक आर्द्रता शीत ऋतु में होती है। (सत्य, असत्य)
3. उत्तर भारत में ग्रीष्म काल में चलने वाली गर्म व शुष्क हवाओं को 'लू' कहते हैं। (सत्य, असत्य)
4. ग्रीष्म ऋतु में मानसूनी पवनें उच्च वायुदाब से निम्न वायुदाब की ओर चलती है। (सत्य, असत्य)

4. निम्नलिखित स्तम्भों को मिलाकर सही जोड़े बनाइए–

क.	ख.
1. वर्षा	(क) से ध्रुवों की ओर सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं।
2. समुद्र तल	(ख) जिसका अर्थ ऋतुओं के अनुसार पवनों की दिशा में पूर्ण परिवर्तन से होता है।
3. भूमध्यवृत्त	(ग) मिली मीटर या सेन्टी मीटर में मापी जाती है।
4. मानसून	(घ) से ऊँचाई की ओर वायुमण्डल में तापमान कम होता जाता है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए।

1. मौसम और जलवायु के तत्व कौन कौन से हैं?
2. भारत के सबसे अधिक गर्म व सबसे अधिक ठन्डे स्थानों के नाम बताइए।
3. विषम जलवायु किसे कहते हैं?
4. मानसून का विस्फोट या फटना किसे कहते हैं?
5. समुद्रतल पर वायुदाब ज्यादा क्यों होता है?

6. भारत के रेखा मानचित्र पर निम्न तथ्यों को दर्शाइए।

1. शीतकालीन वर्षा वाले क्षेत्र।
2. सबसे अधिक व सबसे कम वर्षा वाले स्थान।

14 प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्यजीव

प्रस्तावना

वनस्पति धरातल पर सबसे पहले उत्पन्न जीव के रूप में मानी जाती है। इसी के पश्चात विभिन्न प्रकार के पशु तथा मानव का उद्भव हुआ। वनस्पति एक विशेष प्रकार का जीव है जो सूर्य से प्राप्त ऊर्जा को खाद्य ऊर्जा में परिवर्तित करती है। विभिन्न प्रकार के जीव, जीवित रहने के लिए वनस्पति पर आश्रित रहते हैं। अतः किसी भी जीवधारी के जीवन के लिए वनस्पति मूलाधार है।

पृथ्वी के धरातल पर मृदा, जल तथा ऊष्मा आदि की विविधता के कारण अनेक प्रकार की वनस्पति पायी जाती है।

अधिगम उद्देश्य

पाठ के अध्ययन के पश्चात् आप जान सकेंगे–

- वन एवं वनस्पति का अर्थ।
- वनों के प्रकार।
- वनों का महत्व।
- वनों के ह्रास होने के कारण एवं परिणाम।
- वनों का संरक्षण एवं उसका महत्व।
- वन्य जीव एवं उनका महत्व।
- विलुप्त होते वन्यजीवों को।
- वन्यजीव संरक्षण एवं वन्यजीव आरक्षित क्षेत्रों को।
- घास के मैदानों में जीवन को।

वनों के प्रकार

वनों के प्रकार	विस्तार	मुख्य वृक्ष	विशेषताएँ
1. उष्ण कटिबंधीय सदाबहार एवं अर्द्ध सदाबहार वन	• पश्चिमी घाटों के अधिक वर्षा वाले पश्चिमी ढ़लानों पर, उत्तर पूर्वी भारत, पश्चिम बंगाल एंव तटीय उड़ीसा • लक्षद्वीप एवं अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह।	• महोगनी, एबोनी, रोजवुड	• ये 200 से.मी.से. अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में मिलते हैं। • इन क्षेत्रों में छोटी शुष्क ऋतु पायी जाती है। • इन वनों में 60 मीटर या उससे अधिक ऊँचाई वाले वृक्ष पाये जाते हैं। • वृक्षों की अनेक प्रजातियाँ इन वनों में पायी जाती हैं। • इन वनों में वृक्ष अलग–अलग समय में अपनी पत्तियाँ गिराते हैं। अतः ये वर्षभर हरे रहते हैं। इसीलिए इन्हें सदाहरित वन कहते हैं। • ये अधिक घने होते हैं। अधिकांश भागों में सूर्य का प्रकाश भी जमीन तक नहीं पहुँच पाता है।
2. उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन	• मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड, उड़ीसा तथा महाराष्ट्र	• साल, सागौन, पीपल, नीम, शीशम, पलास, अर्जुन, चंदन, बाँस आदि	• इनको मानसूनी अथवा पतझड़ वाले वन भी कहते हैं। • ये 70 से 100 से. मी. वर्षा वाले क्षेत्रों में मिलते हैं। • ये वर्ष के एक निश्चित समय में अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। • इन वनों से फर्नीचर, यातायात एवं निर्माण आदि के लिए लकड़ी प्राप्त होती है।

वनों के प्रकार	विस्तार	मुख्य वृक्ष	विशेषताएँ
3. झाड़ियाँ	• देश के उत्तरी–पश्चिमी भागों में मिलते हैं • गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, तथा पश्चिमी घाट के पूर्वी ढालों पर	• कैक्टस, खैर, बबूल कीकर, खजूर आदि	• 70 से.मी. से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं। • इन वनों में वृक्ष छितरे होते हैं। • इनका विस्तार शुष्क प्रदेशों में है। • इनकी पत्तियों में काँटे होते हैं।
4. पर्वतीय वन	पर्वतीय क्षेत्र	चीड़, देवदार, स्प्रूस, सिल्वर, फर, ओक, लॉरिल, पेपल, चिनार आदि	• ऊँचाई के अनुसार वनस्पतियों के विभिन्न प्रकार मिलते हैं। • ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान में कमी आती है। परिणामस्वरूप वृक्षों का आकार शंक्वाकार होता जाता है। • अधिक ऊँचाई पर टुण्ड्रा वनस्पति पायी जाती है। • भारत में इन वनों को दो भागों में बाँटा जाता है– उत्तरी पर्वतीय वन एवं दक्षिणी पर्वतीय वन।
5. मैंग्रोव वन/ वेलांचल व अनूप वन	पश्चिम बंगाल के सुन्दरवन, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूहों, महानदी कृष्णा नदी के डेल्टाई भाग	सुंदरी वृक्ष आदि	• मैंग्रोव खारे पानी में विकसित होते हैं। • ये पंख मैदानों एवं ज्वारनदमुख के तटीय क्षेत्रों में उगते हैं। • इन वनों में अतिक्रमण की समस्या अधिक है। अतः इनका संरक्षण अति आवश्यक है।

प्राकृतिक वनस्पति क्षेत्र

14.1 पाठगत प्रश्न

1. उष्ण कटिबंधीय सदाहरित अर्द्ध सदाहरित वनों की किन्हीं दो विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. उष्ण कटिबंधीय पर्णपाटी वनों के अन्तर्गत प्रमुख वृक्षों का नाम लिखिए।
3. उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वनों को पतझड़ वन क्यों कहते हैं?

स्वामित्व के आधार पर वनों का वर्गीकरण

1952 की राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार भारत में वनों को तीन भागों में बाँटा गया है:

1. **आरक्षित वनः** इस प्रकार के वनों की स्वामी सरकार है। सरकार के आदेश के बिना इन वनों मे किसी भी तरह की गतिविधि नहीं की जा सकती। आरक्षित वन कुल वन क्षेत्र का लगभग 52% है।
2. **संरक्षित वनः** उन वनों को कहते हैं जिसमें सरकार व्यक्तियों की गतिविधियों को नियंत्रित कर सकती है। स्थानीय निवासियों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरकार इन वनों का उपयोग करने देती है। संरक्षित वन कुल वन क्षेत्र का लगभग 32% है।
3. **ग्रामीण वनः** इस प्रकार के वन सरकारी नियंत्रण से मुक्त होते हैं। ग्रामीण लोग अपनी आवश्यकता हेतु इनका उपयोग करते हैं। कोई व्यक्ति विशेष इन वनों को काट नहीं सकता। ये वन देश के कुल वन क्षेत्र के 16% भाग पर मिलते हैं।

क्रिया कलाप

1. भारतः मृदा के प्रकार, औसत वार्षिक वर्षा वितरण तथा वनस्पति के प्रकार वाले तीनों मानचित्रों का अध्ययन कीजिए। आप इन तीनों मानचित्रों में जरूर कोई संबंध पाएँगे। इस संबंध पर एक पैराग्राफ लिखिए।
2. आरक्षित, संरक्षित एवं ग्रामीण वनों के विस्तार का एक पाई आरेख बनाइये।

वनों के लाभ एवम् उपयोगिताः वनों से हमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रकार के लाभ होते हैं–,

प्रत्यक्ष लाभ–

1. हम अपने भोजन के लिए वनों पर निर्भर हैं।
2. वनों से कई सारे उद्योगों को कच्चा माल प्राप्त होता है।
3. वन, फर्नीचर और ईंधन के लिए लकड़ियों का महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
4. वनों से अनेक प्रकार की जड़ी–बूटियाँ प्राप्त होती हैं।
5. वनों से पशुओं के लिए चारा भी प्राप्त होता है।
6. वनों से हमें 'ऑक्सीजन' प्राप्त होती है। इत्यादि।

अप्रत्यक्ष लाभ–

1. वन, मृदा अपरदन पर नियन्त्रण में सहायक हैं।
2. वन, बाढ़ों की रोकथाम में सहायक हैं।
3. वन, पत्तियाँ गिराकर भूमि को उपजाऊ बनाए रखते हैं।
4. वन, बारिश कराने में भी सहायक हैं, इत्यादि।

वनों की आवश्यकता

वन, वन्य जीव तथा अन्य सभी जीवधारी परस्पर संबंधित हैं। ये एक दूसरे पर निर्भर रहकर पारितंत्र का निर्माण करते हैं। वनों से हमें अनेक लाभ हैं। पेड़–पौधे वायुमंडल में ऑक्सीजन निर्गत/उत्सर्जित करते हैं और कार्बनडाई ऑक्साइड ग्रहण करते हैं। इससे वायुमंडल में विद्यमान विभिन गैसों का संतुलन बना रहता है। पेड़ पौधों की जड़ें मृदा को जकड़े रखती हैं,। जिससे मृदा अपरदन नियंत्रित रहता है। इसके अतिरिक्त वनों से फल–फूल, इमारती लकड़ी, ईंधन, चारा, औषधीय पौधे, गोंद, तारपीन का तेल, लाख, शहद आदि असंख्य उपयोगी वस्तुएं प्राप्त होती हैं। अतः हम कह सकते हैं कि वन हमारे लिए अत्यन्त उपयोगी हैं।

14.2 पाठगत प्रश्न

1. वनों से होने वाले किन्हीं पाँच लाभों को लिखिए।
2. अपने आस–पास पाए जाने वाले किन्हीं 10 प्रकार के वृक्षों के नाम लिखिए।
3. वनों के संरक्षण के उपायों का वर्णन कीजिए।

क्रिया कलाप

विद्यालय में आयोजित वन महोत्सव के अवसर पर एक पौधा लगाइये/वर्ष भर उसकी देखभाल एवं सुरक्षा कीजिए। इस पौधे में हुए विकास पर एक पैराग्राफ लिखिए।

वनों का संरक्षण

बढ़ती हुई जनसंख्या के आवास, कृषि जैसी अन्य आवयकताओं को पूरा करने के लिए पेड़ पौधों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है। इससे जहाँ एक ओर पारिस्थितिक तंत्र के संतुलन को खतरा हो रहा है, वही अनेक प्रकार की बहुमूल्य वनस्पतियाँ या तो समाप्त हो गयी हैं, अथवा समाप्त हाने के कगार पर हैं। इससे बढ़ती हुई जनसंख्या की वन संबंधी उत्पाद की आवश्यकताओं को पूरा करना कठिन हो जाएगा। इस गंभीर समस्या के निदान हेतु सरकार को नीति बनाकर वन क्षेत्र में वृद्धि करनी चाहिए। लोगों को वृक्षों के महत्व की जानकारी के साथ अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। स्कूल, कॉलेज तथा अन्य संस्थानों में वन महोत्सव जैसे आयोजनों में अधिक से अधिक लोगों को शामिल करके पृथ्वी को हरा भरा बनाने का प्रयास करना चाहिए।

वन्य जीवन

वनों की भाँति वनों में पाये जाने वाले जीव भी पारिस्थितिक तंत्र के महत्वपूर्ण अंग हैं। भारत में पशु–पक्षियों, रेंगने वाले जीव, कीड़े–मकोड़े, जलीय जीवों, आदि की हजारों प्रजातियाँ पायी जाती हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के सरीसृप, अभयचर पक्षी, कीट, आदि की भी अनेक प्रजाति वनों में मिलती हैं। हमारा देश पशु संसाधनों में धनी है। भारत में हाथी, शेर, बाघ, एक सींग वाला गैंडा, भालू, तेंदवा, हिरन आदि वन्य पशु, मोर, गरूड़, बाज, कंठफोड, फेजेंट (चेड), तोता, आदि पक्षी, कोबरा, करैत, अजगर, घड़ियाल, छिपकली आदि रेंगने वाले जन्तु मिलते हैं। बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु तथा मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। वन सभी पशु पक्षियों का प्राकृतिक अधिवास है।

वन्य जीव संरक्षण

वर्तमान में बढ़ती जनसंख्या, नगरीकरण, औद्योगीकरण, वन्य जीवों से बने उत्पाद के आकर्षण, जिससे पशुओं के शिकार को बढ़ावा मिलता है, आदि के कारण अनेक पशु पक्षियों की प्रजातियाँ कम होती जा रही हैं। कुछ तो विलुप्त होने के कगार पर हैं जो निरन्तर पारिस्थितिकी तंत्र के असंतुलन का कारण बनती जा रही हैं।

इस समस्या के समाधान के लिए:

- वनों के अन्तर्गत क्षेत्रफल को बढ़ाना चाहिए ताकि वन्य जीवों के प्राकृतिक अधिवास की रक्षा हो सके।
- अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए।
- शिकार पर पूरी तरह रोक लगानी चाहिए
- वन्य पशुओं की हड्डियों, दाँत, सींग, बाल आदि से बनने वाले सामानों के प्रति आकर्षण को कम करने के लिए अभियान चलाने चाहिए।
- विलुप्त होती प्रजातियों के प्रजनन को बढ़ावा देकर उनकी सुरक्षा करनी चाहिए।
- पशु–पक्षियों के संरक्षण के लिए संरक्षित वनों के क्षेत्रफल को बढ़ावा देना चाहिए।

वन्य जीव संरक्षण के लिए सरकार द्वारा किए गये प्रयास:

- भारत सरकार ने राष्ट्रीय वन जीव कार्य योजना (1983) के अन्तर्गत संरक्षित वनों में 88 राष्ट्रीय उद्यान तथा 490 अभ्यारण्य बनाए।
- अप्रैल 1973 में बाघों के संरक्षण तथा उनकी संख्या को बढ़ाने के लिए 'बाघ परियोजना' आरंभ की। इसके अन्तर्गत 27 बाघ और शेर अभ्यारण्य बनाये गये ।
- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम (1972) के अन्तर्गत वन्य जीवों का शिकार करना कानूनी तौर पर दण्डनीय अपराध बनाया गया।

भारत वन्य प्राणी अभ्यारण्य

14.3 पाठगत प्रश्न

1. बाघ परियोजना क्या है?
2. बाघ परियोजना को कब प्रारंभ किया गया?
3. बाघ परियोजना के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।
4. वन्य जीव कार्य योजना (1983) के अन्तर्गत भारत में कितने राष्ट्रीय उद्यान तथा अभ्यारण्य बनाये गये हैं?

घास भूमियों में जीवन

शीतोष्ण महाद्वीपीय जलवायु वाले उन प्रदेशों में जहाँ वर्षा की मात्रा कम होती है, वहाँ बड़े पेड़ नहीं उग पाते हैं। इन स्थानों पर प्राकृतिक वनस्पति के रूप में घास की अधिकता होती है। इस प्रकार के स्थानों को 'घास स्थल' अथवा 'घास भूमि' कहते हैं। घास स्थलों के निर्माण में जलवायु की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। घास स्थलों को मुख्यतः दो श्रेणियों में बाँटा जाता है:

1. शीतोष्ण प्रदेश के घास स्थल।
2. उष्ण कटिबंधीय प्रदेश के घास स्थल।

यहाँ शीतोष्ण प्रदेश के घास स्थलों में प्रेअरी तथा उष्ण कटिबंधीय प्रदेश के घास स्थलों में वेल्ड का वर्णन तालिका द्वारा किया जा रहा है।

घास भूमियों में जीवन

घास भूमि का नाम	विस्तार	जलवायविक दशाएं	वनस्पति एवं प्राणि जात	मानवीय क्रिया कलाप
1. शीतोष्ण कटिबंधीय घास स्थल–प्रेअरी	एटलस की सहायता से उत्तरी अमेरिका के मानचित्र को देखिए आप पाएंगे: • प्रेअरी का विस्तार पश्चिम में रॉकी पर्वत तथा पूर्व में ग्रेट लेक के मध्य हैं। प्रेअरी संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा के मध्य में स्थित है।	• शीतोष्ण महाद्वीपीय चरम तापमान वाली जलवायु। • ग्रीष्मकाल में तापमान 20° से., शीतकाल में –20° से.। • वर्षा 25 से.मी. जो घास के विकास के लिए उपयुक्त है। • यहाँ चिनूक नामक स्थानीय पवन बहती है।	• प्रेअरी के अधिकांश भागों में पेड़ कम और घास अधिक होती है। • घास समतल मंद ढाल या पहाड़ी वाले प्रदेशों में उगती है। • प्रेअरी को घास का सागर कहा जाता है। • प्रेअरी में 2 से.मी. से अधिक ऊँची घास उग जाती है। • निचले मैदानों के निकट नदी घाटियों में वन भी पाये जाते हैं। • इन घास मैदानों मे बाइसन (अमेरिकन भैंस) प्रमुख रूप से मिलती है। • अन्य जीवों में खरगोश, काइयोट, गोफर एवं प्रेअरी कुत्ता प्रमुख हैं।	• प्रेअरी के लोग कृषि कार्य करते हैं। • प्रेअरी उत्तरी अमेरिका का सबसे बड़ा खाद्यान्न उत्पादक क्षेत्र बन गया है। प्रेअरी को विश्व का अन्नगार भी कहते हैं। • दुग्ध उद्योग प्रमुख उद्योग है। • ग्रेट लेक के पूर्व में अटलांटिक तट तक डेयरी क्षेत्र फैला है। • दुग्ध उत्पादन एवं व्यापक स्तर पर खेती से खाद्य प्रक्रमण उद्योग भी विकसित हुए हैं। • यह कोयला, लोहे के विशाल भंडार, सडकों, रेलों, नहरों के जाल के कारण विश्व का बड़ा औद्योगिक क्षेत्र है
2. उष्ण कटिबंधीय: घास स्थल–वेल्ड	एटलस की सहायता से अफ्रीका के मानचित्र को देखिए– • अफ्रीका में वेल्ड डैकेंस्बर्ग पर्वत के पश्चिम में आरेंज एवं लिम पोपों नदी की सहयक नदियां से सिंचित प्रदेश में मिलते हैं।	• शीत ऋतु में तापमान 5° सेंटीग्रेड से 10° सेंटीग्रेड होता है। • ग्रीष्म ऋतु में तापमान 20° सेंटीग्रेड के आस पास होता है। • हिन्द महासागरीय प्रभाव के कारण जलवायु नम, शीत ऋतु ठण्डी व लम्बी होती है। • यहाँ वर्षा नवम्बर से फरवरी के मध्य होती है। • ग्रीष्म कालीन महीनों में वर्षा 25 से. मी. से 50 से. मी. के मध्य होती है।	• वेल्ड में अधिकांश स्थल घास से ढके रहते हैं। • यहाँ पेड़–पौधे विरल पाये जाते हैं। • लाल घास वेल्ड की झाड़ियों में पैदा होती है। • यहाँ बबूल एवं मारोला भी मिलते हैं। • वेल्ड में मुख्य रूप से शेर, तेंदुआ, चीता एवं कुदु आदि जंगली जानवर मिलते हैं।	• वेल्ड क्षेत्र में पशुपालन एवं खनन कार्य प्रमुखता से किया जाता है। • जहाँ मिट्टी उपजाऊ है वहाँ मक्का, गेहूँ, ज्वार, अखरोट एवं आलू आदि की खेती होती है। • तम्बाकू, गन्ना एवं कपास आदि नकदी फसल उगायी जाती है। • वेल्ड क्षेत्र में भेड़ पालन मुख्य व्यवसाय है। • भेड पालन मुख्यतः ऊन के लिए किया जाता है। मेरिनो भेड़ यहाँ की लोकप्रिय प्रजाति है। • पशुपालन गर्म एवं नम स्थानों में किया जाता है। मक्खन, चीज एवं अन्य दुग्ध से निर्मित उत्पाद घरेलू खपत तथा निर्यात के लिए होते हैं। • सोना व हीरे का खनन यहाँ विश्व प्रसिद्ध है। • किंबरले हीरे की खान के लिए प्रसिद्ध है।

गर्म और ठण्डे मरुस्थल

मरुस्थल/रेगिस्तान शब्द सुनते ही हमें गर्म स्थान का आभास होने लगता है। पर, क्या आप जानते हैं कि मरुस्थल ठण्डे व गर्म दोनों प्रकार के होते हैं।

गर्म मरुस्थल	ठण्डे मरुस्थल
1. गर्म मरूस्थल में तेज धूप होती है।	1. ठण्डे मरूस्थल में जमीन पर बर्फ जमी होती है।
2. गर्म मरुस्थल भूमध्य वृत्त के करीब होते हैं।	2. ठण्डे मरुस्थल उत्तरी ध्रुव, दक्षिणी ध्रुव के आस–पास होते हैं।
3. यहाँ तापमान अधिक होता है।	3. यहाँ तापमान कम होता है।
4. औसत वार्षिक वर्षा 250 मिमी से कम होती है।	4. औसत वार्षिक वर्षा 15 से 26 से.मी. होती है।
5. गर्म मरुस्थल लाल या नारंगी रंग के होते हैं	5. ठण्डे मरुस्थल भूरे रंग के होते हैं
6. प्रमुख जानवर–ऊँट होता है।	6. प्रमुख जानवर–ध्रुवीय भालू और हिरण होते हैं।
7. विश्व में कुछ गर्म मरुस्थलों के उदाहरण– थार, सहारा, कालाहारी, आदि।	7. विश्व में कुछ ठण्डे मरुस्थलों के उदाहरण– ग्रीनलैंड, तुर्केस्तान, अंटार्कटिक, आदि।

14.4 पाठगत प्रश्न

1. प्रेअरी घास स्थल का विस्तार बताइये।
2. प्रेअरी प्रदेश में शीलकाल में औसत तापमान कितना रहता है?
3. वेल्ड क्षेत्र किन नदियों द्वारा सिंचित होता है।

क्रिया कलापः

दिल्ली में स्थित मदर डेयरी का भ्रमण कीजिए और दुग्ध से निर्मित उत्पादों की प्रक्रिया का अवलोकन कीजिए।

इन्हें भी जाने

पारिस्थितिकी संतुलन

किसी पारितंत्र या आवास में जीवों के समुदाय में परस्पर गतिक समानता की अवस्था पारिस्थितिक संतुलन कहलाता है।

पारितंत्र

किसी क्षेत्र विशेष में किसी विशेष समूह के जीवधारियों का अजैविक तत्वों (भूमि,जल अथवा वायु) से अन्तर्सम्बन्ध, जिसमें ऊर्जा प्रवाह व पोषण श्रृंखलाएं स्पष्ट रूप से समायोजन करती हैं, पारितंत्र कहलाता है।

राष्ट्रीय उद्यान

वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लिए एक से अधिक पारितंत्रों की पारिस्थितिक एकता की रक्षा के लिए नामित प्राकृतिक क्षेत्र।

प्रोजेक्ट टाईगर

प्रोजेक्ट टाईगर 1973 से चलाया जा रहा है। इसका मुख्य उदेश्य भारत में बाघों की संख्या का स्तर बनाये रखना है। जिससे वैज्ञानिक सौन्दर्यात्मक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक मूल्य बनाए रखे जा सकें।

चिनूक

एक स्थानीय गर्म हवा का नाम है, जो उत्तरी अमेरिका के प्रेअरी क्षेत्र में शीत ऋतु में बहती है।

काओबॉय

मवेशी फार्म (रैंच) की देखभाल करने वाले को कहते हैं।

कंबाइन

एक मशीन जो बुआई, जुताई एवं थ्रेशर तीनों कार्य कर सकती है।

रैंच

विशाल मवेशी फार्म।

अभ्यास

1. निम्नलिखित का उचित विकल्प चुनकर लिखिए–

क. महोगनी एवं रोजवुड वृक्ष पाए जाते हैं:

1. मैंग्रोव वनों में 2. उष्ण कटिबंधीय पतझड़ वन
3. उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन 4. पर्वतीय वन

ख. कँटीली झाडियों वाले वन मुख्यतः पाये जाते हैं:

1. उत्तराखंड 2. हिमालय प्रदेश
3. राजस्थान 4. केरल

ग. प्रोजेक्ट टाईगर भारत में कब से चलाया जा रहा है:

1. 1950 2. 1973
3. 1980 4. 1985

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए।

क. सदाबहार वन तथा पतझड़ वन में क्या अन्तर है?

ख. वनों की आवश्यकता क्यों है?

ग. वन्य जीव संरक्षण के लिए सरकार द्वारा किए गये उपायों का वर्णन कीजिए।

घ. वन्य जीव संरक्षण क्यों आवश्यक है?

ड. उत्तरी–अमेरिकी शीतोष्ण घास स्थल को क्या कहते हैं?

च. दक्षिण अफ्रीकी घास स्थल के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या है?

3. निम्नलिखित स्तम्भों को मिलाकर सही जोड़े बनाइये।

क. काओवोय	(i) गर्महवा
ख. सोना	(ii) प्रेअरी
ग. कुडू	(iii) वेल्ड
घ. चिनूक	(iv) जोहांसबर्ग

4. मानचित्र कार्य:

क. भारत के रेखा मानचित्र में निम्नलिखत को दर्शाइये–

(i) कँटीली झाड़ी वाले वन (ii) मैंग्रोव वन
(iii) कारबेट (iv) कान्हा किसली
(v) सरिस्का (vi) बांदीपुर

ख. उत्तरी अमेरिका के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित को दशाईये–

क. रॉकी पर्वत ख. प्रेअरी घास के मैदान ग. मिसीसिपी नदी

ग. अफ्रीका के रेखा मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइये

क. वेल्ड क्षेत्र ख. डेकेन्स बर्ग ग. किंबरले

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	_____			
2	_____			
3	_____			
4	_____			
5	_____			
6	_____			
7	_____			
8	_____			
9	_____			
10	_____			

15 स्थानीय शासन एवं प्रशासन

भूमिका

जिस प्रकार देश का शासन चलता है, स्थानीय स्तर पर इसकी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए स्थानीय शासन एवं प्रशासन कार्य करता है। चानू शहर में रहती है। गर्मी की छुटियों में वह अपने मामा के गाँव गयी उसने देखा कि गाँव की सड़कें, नालियाँ शहरों की तरह पक्की तथा साफ हैं।

गाँव का चित्र

जब चानू ममेरे भाई भोलू के साथ खेत देखने के लिए गयी तो उसने देखा कि तालाब भी अच्छी तरह निर्मित है तथा स्वच्छ जल से भरा है और चारों तरफ हरियाली है।

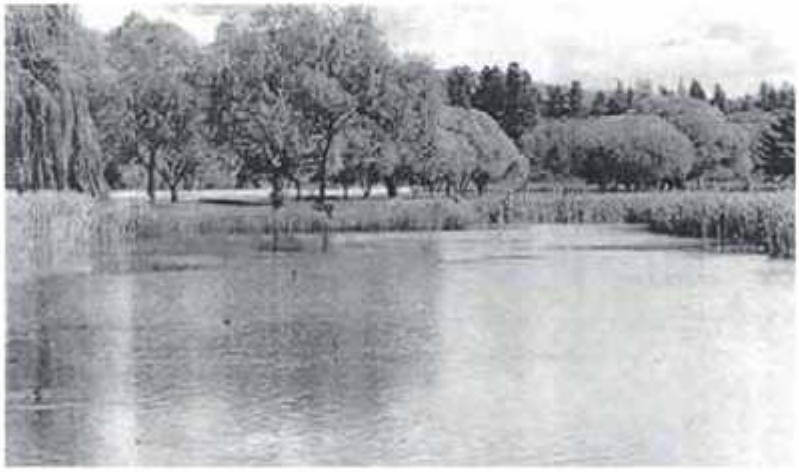

तालाब का चित्र

इस पाठ को पढ़ने के बाद हम जानेंगे –

- गाँव का शासन कैसे चलता है।
- शहरों में विकास के कार्य कौन करता है।
- राजस्व विभाग क्या कार्य करता है।
- पुलिस किस प्रकार कार्य करती है।

चानू– अरे! भोलू गाँव में ये सब कार्य कौन करवाता है।

भोलू– इसका तो मुझे भी पता नहीं है चलो माता जी से पूछते हैं दोनों माता जी के पास जाते हैं।

भोलू – माता जी, चानू पूछती है कि गाँव की सड़कें कौन बनवाता है? सफाई कौन करवाता है? तालाब का निर्माण किसके द्वारा करवाया गया है?

माती जी – बच्चें इन कार्यों को गाँव के लोगों द्वारा ही करवाया जाता है, जिसमें गाँव की पंचायत का योगदान होता है।

चानू– मामी जी ये पंचायत होती क्या है? यह कैसे बनती है?

भोलू की माता जी – बेटी पंचायत का मतलब है पाँच या उसे अधिक व्यक्तियों का ऐसा समूह जो ग्राम सभा के सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं।

ग्राम पंचायत के सदस्यों का चित्र तथा अन्य ग्रामीण

पंचायत से पहले ग्रामसभा बनती है। इसमें गाँव के वे लोग शामिल होते हैं जो 18 वर्ष या इससे ज्यादा आयु के हैं। ये सभी ग्राम पंचायत के सदस्यों तथा ग्राम प्रधान को अपना वोट देकर चुनते हैं। एक गाँव को या दो गाँवों को मिलाकर एक पंचायत बनती है। गाँव को जनसंख्या के हिसाब से वार्डों में बांटते हैं।

प्रत्येक वार्ड से एक सदस्य का चुनाव होता है, इस प्रकार एक ग्राम पंचायत में पाँच, सात, नौ तथा पन्द्रह आदि सदस्य हो सकते हैं। इनके साथ ही गाँव के प्रधान का भी चुनाव किया जाता है।

चानू– क्या ग्राम प्रधान केवल पुरूष ही होते हैं?

भोलू की माँ– नहीं–नहीं महिलाएँ भी होती है, अब तो सरकार ने 100 स्थानों में से 33(1/3) स्थान महिलाओं के लिए आरक्षित किये हैं।

आओ करें

अध्यापिका कक्षा का चार समूहों में बाटें– एक समूह ग्राम सभा, दूसरा समूह ग्राम पंचायत, तीसरा समूह जिला पंचायत और चौथा समूह वार्ड। प्रत्येक समूह इनके चुनाव एवं कार्यों के बारे में चर्चा करें। प्रत्येक समूह से एक विद्यार्थी कक्षा के सामने चर्चित बिंदुओं को प्रस्तुत करें।

15.1 आओ जानें–

1. ग्राम सभा के सदस्यों को चुनने की न्यूनतम आयु क्या होती है?
   क.15 वर्ष ख. 18 वर्ष ग. 20 वर्ष घ. 25 वर्ष
2. पंचायत में कम से कम कितने सदस्य होते हैं?
   क. 2 ख. 3 ग. 4 घ. 5
3. गाँव के विकास के लिए किसे चुना जाता है?
   क. ग्राम सभा ख. ग्राम पंचायत ग. संसद घ. प्रधानमन्त्री
4. महिलाओं के लिये ग्राम पंचायत में कितनी सीटे आरक्षित की गई हैं?
   क. 1/3 ख. 1/4 ग. 1/2 घ. 1/5

चानू– ग्राम सभा तथा ग्राम पंचायत कैसे काम करती है?

भोलू की माता जी – मेरे प्यारे बच्चें, मैं गाँव की पंचायत की सदस्य रह चुकी हूँ इसलिए मैं तुम्हें बता सकती हूँ, ग्राम सभा की एक वर्ष में कम से कम दो बार बैठकें होती हैं।

ये बैठकें है, रबी की बैठक और खरीफ की बैठक । इनके नाम फसलों के नाम पर रखे गए हैं। प्रत्येक बैठक में पिछले 6 माह की आय और व्यय तथा आगे होने वाले विकास कार्यो और खर्चो पर चर्चा होती है। गाँव के एक हिस्से में नालियों की व्यवस्था नहीं है। सड़क का नदी के पास वाला हिस्सा टूटा हुआ है जिसका निर्माण कार्य होना है। ऐसे ही अनेक कार्यो पर चर्चा होती है।

श्यामू बहुत गरीब है, उसके घर में शौचालय नहीं है। गांव के सभी लोग आश्चर्य चकित हैं कि गाँव के सचिव ने उसका नाम क्यों नहीं लिखा सभी गाँव के लोग पंचायत में इसका विरोध करते हैं और श्यामू के घर में शौचालय बनवाने का वचन दिया जाता है।

आओ समझें

सवाल– भोलू की माताजी साल में कब–कब ग्राम सभा की बैठक करती हैं, इन बैठकों में किन–किन मुद्दों पर चर्चा होती है?

ग्राम पंचायत के कार्य

1. स्वच्छ पानी की व्यवस्था करना।
2. शौचालयों का निर्माण करवाना।
3. प्राथमिक विद्यालय स्थापित करना।
4. सड़कों का निर्माण करवाना।
5. पशुओं को बीमारी से बचाने के उपाय करना आदि।

भोलू, माँ ग्राम पंचात से बड़ी भी कोई पंचायत होती है। बेटा, होती तो है, पर मुझे इसकी ज्यादा जानकारी नहीं है पड़ोस में रफीक चाचा रहते हैं, वे अध्यापक हैं, उन्हें जानकारी होगी। आप उनसे पूछ सकते हैं। चानू और भोलू रफीक चाचा के घर जाते हैं।

भोलू– रफीक चाचा, क्या गाँव की पंचायत से भी बड़ी पंचायत होती है।?

रफीक चाचा – देखो बच्चों, पंचायत के तीन स्तर है

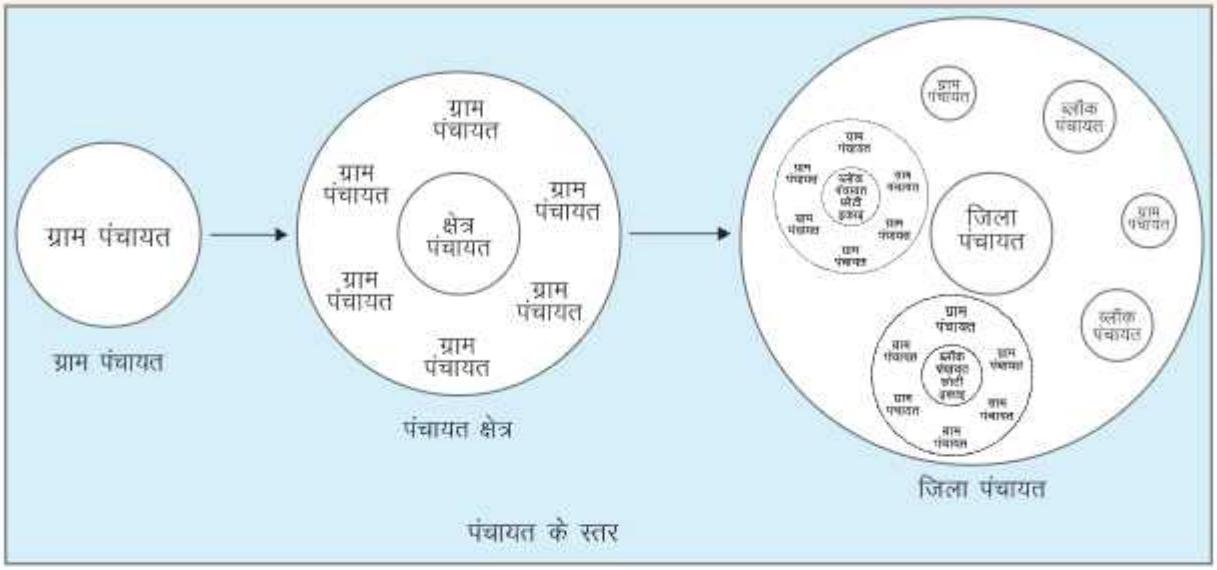

अब हम ब्लॉक या खण्ड स्तर की पंचायत के बारे में जानेंगे–

प्यारे बच्चों गाँव की पंचायत एक छोटी इकाई है। जो ग्राम सभा के प्रति उत्तरदायी है और केवल अपने पंचायत क्षेत्र के विकास कार्यों को करती है किन्तु कई गाँवों के विकास कार्यो के लिए ब्लॉक या खण्ड स्तर पर एक पंचायत होती है जिसे पंचायत समिति कहते हैं जो ग्राम पंचायत जिला परिषद से बड़ी तथा जिला पंचायत से छोटी होती है। इसका मुखिया ब्लॉक प्रमुख होता है। इसके सदस्यों का चुनाव मतदाताओं द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है उस क्षेत्र के गाँवों के प्रधान भी इसके सदस्य होते हैं। यह सभी राज्यों में नहीं होती है।

ब्लॉक पंचायत या पंचायत समिति के गठन

सदस्य	चुनाव
ब्लॉक प्रमुख	मतदाताओं द्वारा प्रत्यक्ष चुनाव
पंचायत समिति के अन्य सदस्य	मतदाताओं द्वारा प्रत्यक्ष चुनाव
गाँवों के प्रधान	मतदाताओं द्वारा पहले से निर्वाचित
खंड विकास अधिकारी	सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारी
क्षेत्र के विधायक, सांसद राज्य सभा आदि के सदस्य	पदेन सदस्य

ब्लॉक पंचायत या खण्ड पंचायत या पंचायत समिति के कार्य

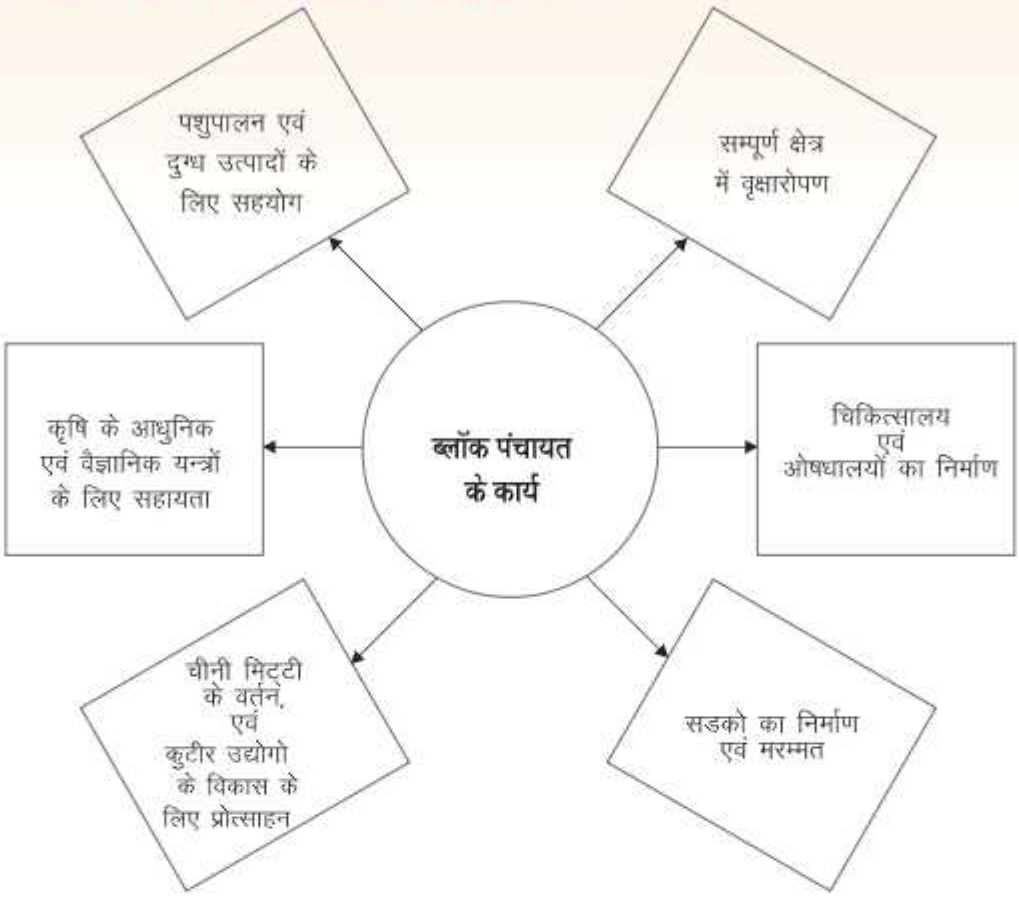

पंचायत समिति के आय के साधन

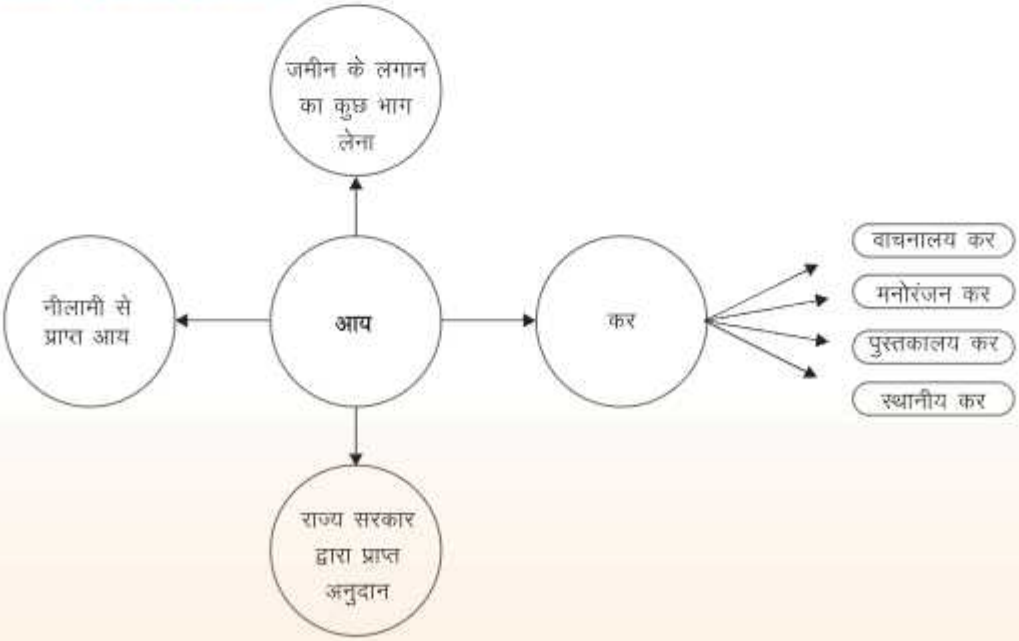

अब सबसे बड़ी पंचायत जिला पंचायत के विषय में जानेंगे–

जिला परिषद् जिला पंचायत की रचना–

जिला परिषद् की विभिन्न शाखाएँ एवं अंग एक वृक्ष की भाँति–

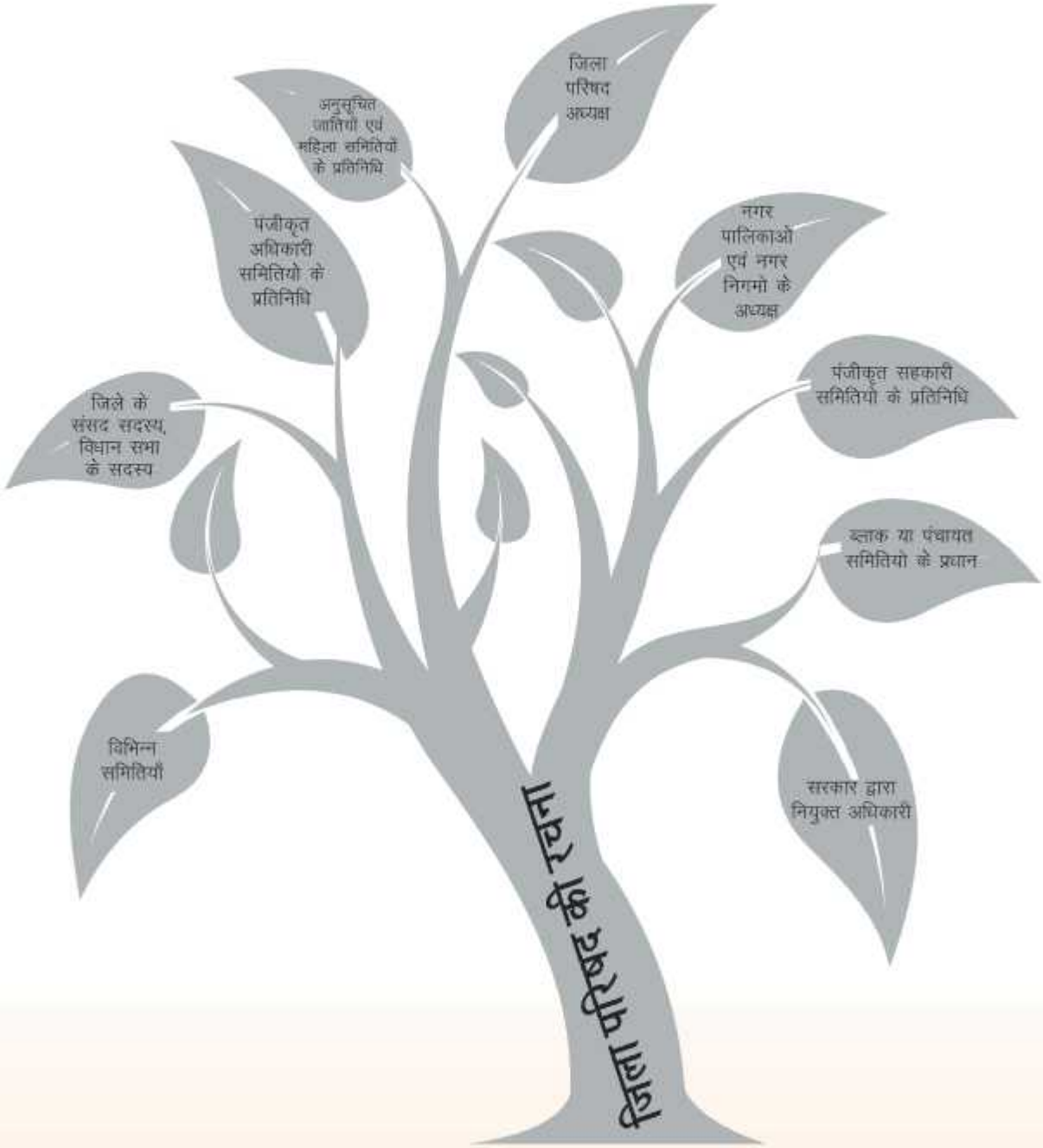

इसे भी जानेंगे

भारत में लगभग 550 जिला परिषद है जिनके माध्यम से 6000 पंचायत समितियाँ तथा 2,50,000 से अधिक ग्राम पंचायतों द्वारा शासन किया जाता है।

यह भी जानेंगे

73 वें संविधान संशोधन द्वारा ग्राम पंचायतों को संविधान में प्रमुख स्थान दिया गया है। अनुसूचित जाति को उनकी जनसंख्या के हिसाब से तथा महिलाओं के लिए 1/3 आरक्षण की व्यवस्था है।

15.2 आओ समझें

1. गाँव की पंचायत कौन सा कार्य नहीं करती है।

   क. सड़क बनवान ख. पेड़ लगवाना ग. पुलिस की भर्ती करना घ. तालाब बनवाना

2. इनमें से कौन सा स्तर ग्राम पंचायत का नहीं है:

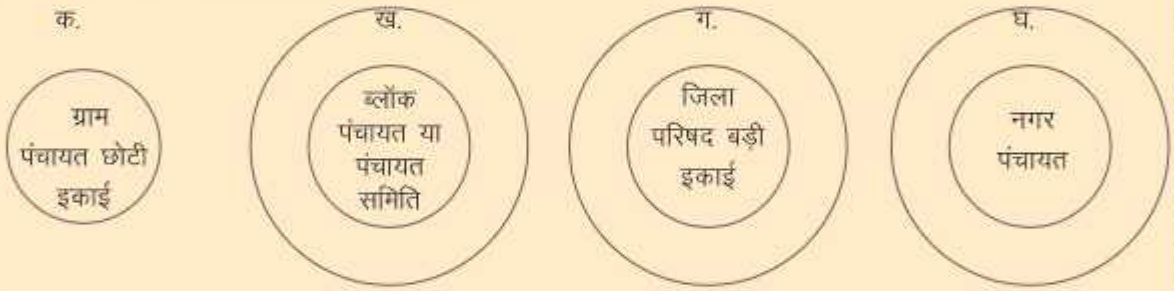

3. गाँव का मुखिया ———— होता है?
4. ग्राम पंचायत की सबसे बड़ी इकाई ———— है?

अब हम शहरी प्रशासन को जानेंगे–

इन सब प्रश्नों के बाद भोलू ने आश्चर्य से कहा कि ग्राम पंचायत से हम अपना विकास स्वयं कर सकते हैं और सभी लोग एक स्थान पर एकत्रित होकर अपनी समस्याओं को सुलझा सकते हैं। परन्तु चानू आपके शहर तो बहुत बड़े हैं वहाँ के लोग कैसे अपने विकास कार्य करते होंगे और कैसे एकत्रित होते होंगे।

चानू इसे भी हमें रफीक काका से ही पूछना होगा क्योंकि हमारे शहर में तो बड़े–बड़े पार्क, पानी की टंकियाँ, बड़े–बड़े पुल है, उनका निर्माण कौन कराता होगा

भोलू– रफीक काका शहर तो बहुत बड़े–बड़े होते हैं वहाँ का शासन कैसे व कौन चलाता होगा?

रफीक काका– बच्चों शहरी स्थानीय निकाय और ग्रामीण स्थानीय निकाय में कोई खास अन्तर नहीं है। शहरों के विकास के लिए भी तीन निकाय काम करते हैं:–

1. नगर निगम 2. नगर पालिका 3. नगर पंचायत

शहरों के विकास के लिए उन्हें भी वार्डों में बाँटा जाता है।

वार्ड–1	वार्ड–2	वार्ड–3	वार्ड–4
वार्ड–16	वार्ड–15	वार्ड–14	वार्ड–5
वार्ड–11	वार्ड–12	वार्ड–13	वार्ड–6
वार्ड–10	वार्ड–9	वार्ड–8	वार्ड–7

शहर के प्रशासन के लिए विभिन्न वार्डों में बाँटना

बच्चों प्रत्येक वार्ड से एक पार्षद चुना जाता है। जिसे वहाँ के मतदाता चुनते हैं। सभी पार्षदों के चुने जाने के पश्चात वे पार्षद अपना एक मेयर (महापौर) और डिप्टी मेयर (उपमहापौर) चुनते हैं।

ऊपर वाले शहर में 16 पार्षद पाँच वर्ष के लिए चुने जाएँगे वे एक महापौर और एक उपमहापौर चुनेंगे।

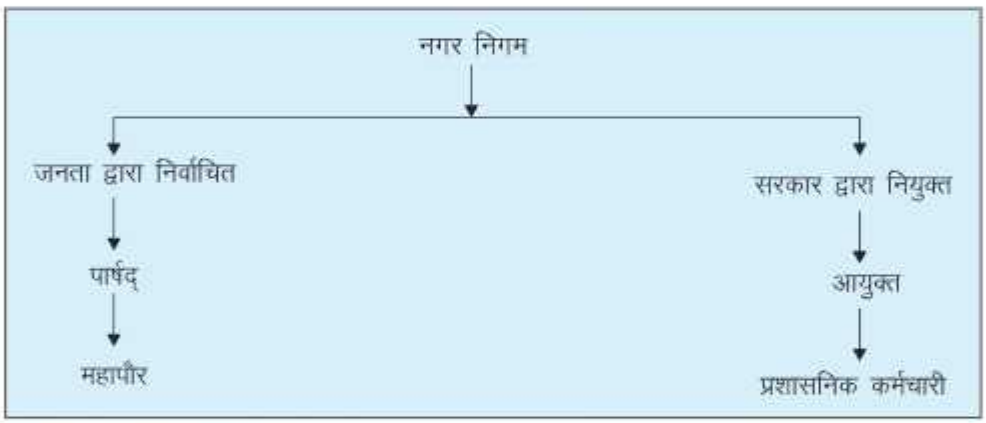

नगर निगम क्या–क्या कार्य करती है–

1. औषधालयों का निर्माण करवाना।
2. प्राथमिक विद्यालय बनवाना।
3. स्ट्रीट लाइटें लगवाना।
4. सड़क निर्माण तथा सफाई की व्यवस्था करना।
5. स्वच्छ जल की व्यवस्था करना।
6. पार्कों का निर्माण करना।
7. नागरिकों के लिए मनोरंजन की व्यवस्था करना।

आओ करें

नगर निगम के कार्यों का चित्र बनाए।

हर एक विद्यार्थी अपने–अपने इलाके में हुए विकास कार्यों की चर्चा करें।

यदि शहर के नागरिकों की कोई सार्वजनिक समस्या है, तो सभी नागरिक अपने अपने वार्ड के पार्षदों को अपनी समस्या बता सकते हैं।

सभी पार्षद एक स्थान पर मिलकर शहर के विकास के लिए बजट बनाते हैं। यही बजट नर निगम और पार्षदों द्वारा वार्ड के सार्वजनिक कार्यो के लिए खर्च किया जाता है।

चानू और भोलू – रफीक काका बजट क्या होता है, और कैसे कितना पैसा खर्च करना है यह किस प्रकार तय होता है?

नगर निगम के कार्य एवं खर्च

रफीक काका– प्यारे बच्चों यदि 100 रू. का बजट है तो उसे महत्वपूर्ण कार्यो के लिए बाँटा जाता है।

कार्य का नाम	बजट का हिस्सा
सड़क निर्माण	15 रूपये
यातायात व्यवस्था	20 रूपये
सफाई	10 रूपये
अस्पताल	10 रूपये
स्कूल या शिक्षा	15 रूपये
पीने का पानी	10 रूपये
खेल	10 रूपये
अन्य	10 रूपये
कुल	100 रूपये

चानू और भोलू – रफीक काका नगर निगम इतने काम करता कैसे है। रफीक काका बच्चें हर कार्य के लिए समिति बनायी जाती है। जो कार्यो का सुचारू रूप से करती है।

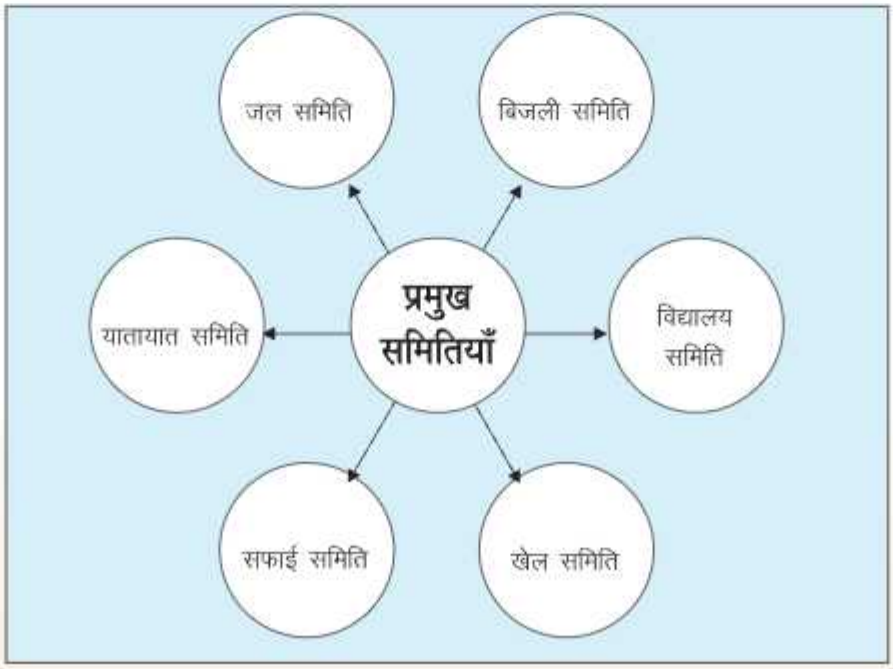

आय के साधन

चानू और भोलू– रफीक काका इतने कामों के लिए इतना पैसा नगर निगम के पास कहाँ से आता है।

रफीक काका– तुम दोनों बड़े भोले हो जाओ और अपने माता पिता से पूछो कि ये कौन–कौन सा टैक्स देते हैं।

आओ जानें

शिक्षक कक्षा के बच्चों से जानकारी एकत्रित करवाएं कि उनके माता–पिता नगर निगम को कौन–कौन सा टैक्स देते हैं। उन्हें नीचे लिखिए।

1. ..... 2. .....

3. ..... 4. .....

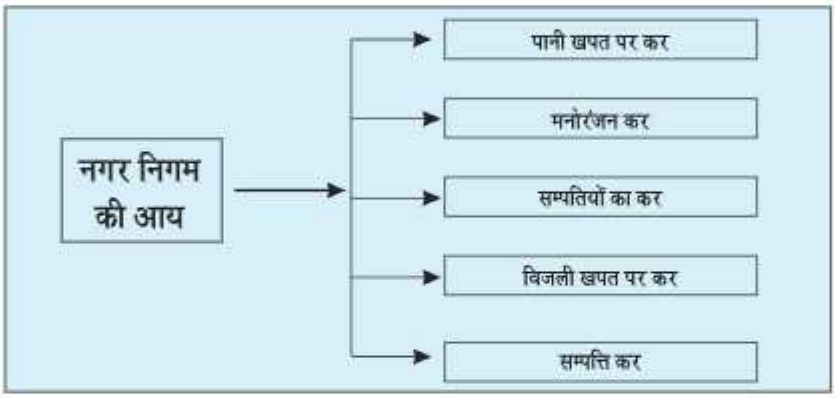

चानू और भोलू– रफीक काका ये नगरपालिका, नगर पंचायत क्या होती है और कैसे काम करती है। भोलू दास ये सब लोगों की संख्या का खेल है जिन शहरों की आबादी लगभग तीन लाख से अधिक है उनमें नगर निगम, 20 हजार से 3 लाख तक है उनमें नगर पालिका तथा पाँच हजार से 20 हजार तक नगर पंचायत होती है। सभी के गठन, कार्य व आय के संसाधन लगभग समान है।

अब हम राजस्व विभाग के कार्यो को जानेंगे–

चानू– परन्तु भोलू गाँव में ये कैसे पता लगेगा कि कौन किस खेत का मालिक है यदि एक व्यक्ति दूसरे के खेत को अपना कहने लगे तो झगड़ा हो जायेगा और इसका फैसला कैसे होगा, फिर क्या किसान भी टैक्स देते होंगे और टैक्स कहाँ जमा होता होगा?

भोलू– अरे यह पूछना तो हम भूल ही गये चलो रफीक काका से दुबारा पूछते हैं।

रफीक काका– अरे इसे जानकर क्या करोगे? तुम्हें कोई किसान बनना है।

चानू– नहीं हम इसे जरूर पूछेंगे।

रफीक काका– बच्चों, भारत को शासन संचालन के लिए कितने प्रान्तों में बाँटा गया है। श्रीमान पता नहीं, चलो मैं बताता हूँ।

रफीक काका– राज्य केन्द्रशासित प्रदेश कुल

28 + 8 = 36

जिले का सबसे बड़ा अधिकारी जिला अधिकारी होता है जो कलैक्टर का भी काम करता है। राजस्व इकट्ठा करने के लिए तथा राजस्व सम्बन्धी अन्य कार्यों के लिए जिले को अनेक उपखण्डों में बाँट दिया जाता है। प्रत्येक उपखण्ड को तहसील, ब्लाक आदि कहा जाता है इसमें जो अधिकारी काम करते हैं उनका क्रम इस प्रकार है।

प्रशासन

जिला अधिकारी → मुख्य विकास अधिकारी

सहायक जिला अधिकारी → जिला विकास अधिकारी

उपजिला अधिकारी → सहायक विकास अधिकारी

तहसीलदार → खंड विकास अधिकारी

नायब तहसीलदार → ग्राम विकास अधिकारी

कानूनगो

पटवारी

तहसील या उप खण्ड स्तर के अधिकारी

रफीक काका बच्चों की शंका का विस्तार पूर्वक समाधान करते हुए बताते हैं कि पटवारी वह कर्मचारी हैं जो अपने अधिकर क्षेत्र की सारी जमीन का लेखा जोखा खसरा आदि रजिस्टर में रखता है कौन सा खेत किस किसान का है किसकी सीमाएं कहाँ तक है तथा जमीन नापने के लिए एक विशेष जरीब (जमीन नापने का पैमाना) का प्रयोग करता है। पटवारी किसानों से लगान इकट्ठा करता है जो सरकारी राजस्व विभाग में जमा हो जाता है।

यदि कोई अपनी जमीन बेचता है या किसी से खरीदता है तो उसका लेखा जोखा रजिस्टार कार्यालय में रखा जाता है इसके लिए एक निश्चित फीस देनी होती है जो सरकार के राजस्व का भाग होती है।

पटवारी द्वारा प्रयुक्त खसरा या रजिस्टर

न.	क्षेत्र हेक्टेयर में	जमीन मालिक का नाम पिता/पति का नाम व पता	यदि बटाई पर है तो दूसरे किसान का नाम	इस साल जोती गई जमीन			परती जमीन	सुविधाएं
				फसल	क्षेत्र	अन्य		
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	0.57	रमेश वल्द उमेश राम गाँव– सलेमपुर	नहीं	गेहूँ	0.57 हेक्टेयर	–	25	कुआ चालू
2	2.00	काशीराम वल्द किशोरी लाल गाँव नलपुरा	नहीं	चावल	1.75	1.25	–	–

15.3 आओ जानें–

1. जिले में राजस्व एकत्रित करने वाला अधिकारी कौन होता है
   1. न्यायाधीश 2. पुलिस अधिकारी 3. कलैक्टर 4. तहसीलदार
2. किसानों की जमीनों का लेखा जोखा ———— रखता है
3. राजस्व के लिए जिले को कई भागों में बाँटा जाता है इनमे से कौन सा नहीं है।
   1. तहसील 2. तालुका 3. उपखण्ड 4. क्षेत्रिय परिषद

पुलिस प्रशासन

चानू और भोलू– रफीक काका यदि जमीन को लेकर झगड़ा हो जाए और मारपीट भी हो जाए तो पीड़ित पक्ष अपनी शिकायत कहा ले जाऐंगे।

रफीक काका– बच्चें जमीनों तथा अन्य कई कारणों से छोटे से लेकर बड़े विवाद भी होते रहते हैं तथा मारपीट भी हो जाती है सविता जो मेरे पड़ोस में रहती है गरीब है एक दिन वह पशु चराने के लिए गयी थी, उसके कुछ पशु बन्टी के खेत में पहुँच गए फिर क्या था बन्टी ने उसके पशु पकड़ लिए, जब सविता व उसके पति शम्भू नाथ उन्हें छुड़ाने गये तो उनके साथ मारपीट की गयी व पशु भी नहीं दिये, तभी आस पास के लोग इकट्ठा हुए व सविता व शम्भू को पुलिस के पास चलने के लिए कहा किन्तु शम्भू तो पुलिस के नाम से डरने लगा तब पड़ोसियों व मेरे सहयोग से वह चलने को तैयार हुआ कुछ लोगों ने कहा कि लोकल पुलिस वाले हमारी बात नहीं सुनेंगे हम जिले के सबसे बड़े पुलिस अधिकारी एस0पी0 (सुपरिन्टेन्डेन्ट ऑफ पुलिस) के पास चलते हैं किन्तु मैंने उन्हें सुझाव दिया कि पहले हमें पास के पुलिस थाने में एफ0 आई0 आर0 (फर्स्ट इन्फारमेशन रिपोर्ट) या प्रथमिक दर्ज करानी चाहिए यदि यहाँ सुनवाई नहीं होगी तब हम आगे सोचेंगे।

पुलिस थाने में होने वाला काम

सभी पास के थाने जाते हैं और एफ0 आई0 आर0 दर्ज कराते हैं, थानेदार दोंनों पक्षों अर्थात बन्टी और शम्भू को बुलाकर फैसला करता है, तथा सविता और शम्भु के पशु उन्हें दिए जाते हैं। इस प्रकार विवाद सुलझाया जाता है।

चानू और भोलू– रफीक काका जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अधिकारी कौन होता है। तथा पुलिस विभाग का पदानुक्रम कैसे होता है।

जिले में पुलिस विभाग की संरचना

एस.एस.पी. (सीनियर सुपरिन्टेन्डेण्ट ऑफ पुलिस)
↓
डी. एस. पी. (डिप्टी सुपरिन्टेन्डेण्ट ऑफ पुलिस)
↓
एस.पी. / सी.ओ.
↓
एस.एच.ओ.
↓
इन्सपैक्टर या थानेदार
↓
एस. आई. (सब इन्सपैक्टर)
↓
ए.एस.आई.
↓
सिपाही

आओ समझें–

1. इनमें से ग्राम सभा की कौन सी बैठक होती है।

   क. बरसात की बैठक ख. खरीफ की बैठक ग. जाड़े की बैठक घ. गर्मी की बैठक

2. ग्रमा पंचायत के सदस्यों को ——— चुनती है।

3. आपके हाथ में जितनी अंगुलियाँ है उतने सदस्य हो सकते हैं

   क. ग्राम पंचायत में ख. विधान सभा में ग. लोक सभा में

4. बड़े शहरों के लिए कौन शासन नहीं करता है।

   क. ग्राम पंचायत ख. नगर पंचायत ग. नगरपालिका घ. नगर निगम

5. आप शहर में रहते हैं आपकी गली में लाइट नहीं है आप जिससे शिकायत करेंगे उस पर निशान लगाइए–

   क. दरोगा ख. पार्षद ग. वकील घ. अध्यक्ष

6. जिला परिषद को एक वृक्ष की तरह दर्शाओ और उसकी दो पत्तियों पर दो अंगों के नाम लिखिए

7. किसानों की जमीन का लेखा जोखा पटवारी जिस रजिस्टर में रखता है। उसका नाम लिखिए

8. नगर निगम के कार्यों को पहचानो इनमें से कौन सा कार्य नहीं है।

   क. सड़क बनाना ख. पानी की टंकी का निर्माण ग. रेलवे लाइन बनाना

कार्यपत्रक

प्रश्न– नगरपालिका, नगर पंचायत और नगर निगम के गठन के लिए आवश्यक जनसंख्या को निम्न गोले में भरो–

नगर निगम जनसंख्या

.....

.....

नगर पालिका जनसंख्या

.....

.....

नगर पंचायत जनसंख्या

.....

.....

16 आजीविकाएँ

भूमिका

आजीविका से अभिप्राय है अपने भरण–पोषण के लिए किया गया काम जिससे आय प्राप्त हो।

पाठ पढ़ने के बाद हम जानेंगे –

- विभिन्न आजीविकाओं के बारे में,
- ग्रामीण एवं शहरी आजीविकाओं के बारे में अन्तर।

ऊपर दिए गए चित्रों को पहचान कर नाम लिखिए–

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....

विभिन्न कार्यों में लगे लोग अपनी आजीविका कमाते हुए

उपरोक्त चित्र में लोग विभिन्न प्रकार के कार्य कर रहे हैं। क्या आप इन कार्यों के नाम बता सकते हैं? आपके विचार से लोग कार्य क्यों करते हैं? क्या आप इनके कुछ अन्य कार्यों के नाम बता सकते हैं?

उपरोक्त चित्र में ये ऐसे कार्य दिखाये गये हैं जिनसे लोगों की रोजी–रोटी अर्थात आजीविका चलती है। अपना जीवन सुगमतापूर्ण यापन करने के लिए लोग विभिन्न कार्य करते हैं जिससे इन्हें धन प्राप्त होता है। इस धन से उन लोगों का जीवन यापन आसान हो जाता है अर्थात आजीविकाओं के द्वारा हमारा जीवन यापन सुगम हो जाता है।

आओ खोजें

पुस्तक में दिए गए चित्रों के अलावा आप अपने आस–पास और कौन–कौन से कार्य होते हुए देखते हैं? सूची बनाइए–

.....

.....

ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविकाएँ:

हमारे देश की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों अर्थात गांवों में निवास करती है। तथा ये लोग वहाँ विभिन्न प्रकार के कार्य करके अपना जीवन यापन करते हैं। चित्र को पुनः ध्यान से अवलोकन करें तथा इसमें से आप उन कार्यों की सूची बनाये जो ग्रामीण क्षेत्रों में किये जाते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग अनेकों कार्य करते हैं जिनमें खेती तथा पशुपालन मुख्य है। इसके अतिरिक्त लोग शिक्षक, बुनकर, नाई, साईकिल ठीक करने वाले मिस्त्री, लौहार, दुकानदार, खेतीहर मजदूर, राजमिस्त्री, मिट्टी के बर्तन बनाने का कार्य आदि का भी काम करके अपनी आजीविका कमाते हैं।

खेती

गांवों के अधिकांश व्यक्ति खेती तथा उससे जुड़े विभिन्न कार्यों को करते हैं खेती करने वाले लोगों को किसान कहा जाता है। ये किसान अपने खेतों में विभिन्न फसले उगाते हैं। जिनके उत्पाद हम भोजन के रूप में लेते हैं। जैसे गेहूँ, चावल (धान), मक्का बाजरा, चना, गन्ना, विभिन्न प्रकार की सब्जियां आदि।

इसके साथ–साथ किसान कुछ अन्य फसलें भी उगाते हैं जिनके उत्पाद हमारे पालतू पशुओं के भोजन के रूप में काम आते हैं जैसे – ज्वार, बरशिम, जई आदि। कुछ फसल जैसे कपास, जूट आदि हमारे विभिन्न कार्यों के लिए उपयोगी है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ किसान बागवानी का भी कार्य करते हैं। वे विभिन्न बागों से हमें आम, नारियल, सुपारी, संतरा, सेब आदि उत्पाद देते हैं। उपर्युक्त खेती के उत्पादों को बेचकर किसान अपनी आजीविका चलाते हैं।

खेतों में कठिन परिश्रम करने के बाद भी किसानों की आजीविका में अनेक समस्याऐं होती है। अधिकांश किसानों के पास खेती के लिए पर्याप्त भूमि नहीं है। जिससे उनका उत्पादन कम होता है। तथा किसान को आवश्यकतानुसार धन प्राप्त नहीं हो पाता है। इस कारण किसानों को फसल उत्पादन हेतु खाद, बीज तथा कीटनाशक खरीदने के लिए महाजनों या व्यापारियों से ऋण लेना पड़ता है। फसलों मे कीड़ा लगने या समय पर बारिश ना होने से कई बार फसलें खराब हो जाती है। जिससे किसान को पर्याप्त उपज प्राप्त नहीं होती।

हल चलाता किसान

धान की रोपाई करते खेतीहर मजदूर

फलस्वरूप वह ऋण के बोझ में दबता जाता है। अच्छी फसल का उत्पादन होने पर भी किसान को अपनी उपज कर्जदाता, महाजनों/व्यापारीयों को सस्ती दरों पर बेचनी पड़ती है जिससे उन्हें उचित लाभ प्राप्त नहीं होता है। कर्ज में डूबे किसान का भविष्य चिन्ताजनक होता है।

खेतीहर मजदूर

ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ लोगों के पास अपने खेत नहीं होते हैं। इस कारण वे दूसरे किसानों के खेतों में काम करते हैं। इस काम के बदले में मिली मजदूरी से अपना जीवन यापन करते हैं। परन्तु इन लोगों को वर्ष के सारे दिनों में काम नहीं मिलता है। केवल कुछ महीने ही इन्हें काम मिल पाता है जैसे फसल की बुआई या कटाई के समय। अतः सभी दिन मजदूरी न मिलने के कारण इनका जीवन यापन कठिन हो जाता है।

पशुपालन करता किसान

मछली पालन करते लोग

पशुपालन

ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत से लोग पशुपालन करके अपनी आजीविका कमाते हैं। ये मुख्यतया भेड़, बकरी, गाय, भैंस, ऊँट, मुर्गी आदि पशु पालते हैं इन पशुओं के उत्पादों को बेचकर ये धन प्राप्त करते हैं। इनके मुख्य उत्पाद ऊन, मांस, दूध आदि है। परन्तु विभिन्न बीमारियों या सूखे की चपेट में आकर इनके पशु कई बार मर जाते हैं। इससे उन्हें अत्यधिक हानि होती है। इन लोगों का जीवन यापन कठिन हो जाता है।

मत्सय पालन

समुद्र के किनारे स्थित ग्रामीण क्षेत्रों के कुछ लोग समुद्र से मछली पकड़ने का कार्य भी करते हैं। जिससे इनकी आजीविका चलती है। कुछ ग्रामीण अपने गाँवों मे स्थित तालाबों में भी मछली पालन कर अपनी आजीविका चलाते हैं। परन्तु कई बार पानी में घुले कीटनाशकों के चलते मछलियां मर जाती है। इससे मछली पालकों को अत्यधिक हानि होती है। मछली पकड़ने का कार्य बरसात के महीनों में बंद हो जाता है जिससे भी इन लोगों की आजीविका पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

अन्य ग्रामीण आजीविकाएँ

उपरोक्त कार्यो के अतिरिक्त कुछ व्यक्ति गांव के पास स्थित नगर या कस्बे में जाकर मजदूरी, काररखानों में श्रमिक, राजमिस्त्री, ड्राईवर, माली, चपरासी इत्यादि के कार्य करके अपनी आजीविका चलाते हैं।

इन सब कार्यों के अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में धोबी, लुहार, छोटे स्तर का दुकानदार, भवन–निर्माण के राजमिस्त्री तथा मजदूरी, मिट्टी के बर्तन बनाने का कार्य तथा हस्तकला जैसे टोकरी या डोना, पत्तल बनाना आदि भी आजीविका के साधन हैं।

इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों की आजीविका का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि अधिकांश ग्रामीण मौसमी बेरोजगारी के शिकार होते हैं। अर्थात उन्हें वर्ष के सभी दिनों में प्रर्याप्त रोजगार नहीं मिल पाता है। रोजगार मिलने के दिनों में भी मजदूरी की दर कम होती है। खेती की उपज का प्रयाप्त मूल्य भी नहीं मिलता है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन यापन कठिन होता जा रहा है। जिसके कारण ग्रामीण शहरों की और पलायन कर रहे हैं।

16.1 आओ जानें–

(क) यदि आपके माता पिता गाँव को छोड़कर शहर में आए हैं तो उनसे पूछें कि वो शहर में क्यों आए हैं?

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

क. अपनी जमीन पर खेती करने वाला व्यक्ति..... कहलाता है। (किसान/खेतीहर मजदूर)

ख. दूसरे के खेतों पर कार्य करने वाले व्यक्ति ..... कहलाते हैं। (किसान/पशुपालक/खेतीहर मजदूर)

ग. किसी भवन को बनाने का कार्य ..... व ..... करते हैं। (किसान/राजमिस्त्री/धोबी/मजदूर)

(ग) दिल्ली, भारत की राजधानी है। परंतु अधिकतर शहरी क्षेत्र होने के बावजूद भी दिल्ली में 200 से अधिक गाँव है, जो काफी समृद्ध हो चुके हैं। जिनमें पीने का स्वच्छ जल, बिजली आपूर्ति, पक्की सड़कें, डिस्पेंसरी, यातायात आदि की सुविधाएँ मौजूद है। दिल्ली शहर के गाँव तेजी से बदल रहे हैं और यहाँ आधुनिक सुविधाएँ भी तेजी से बढ़ रही हैं।

आओ करें

1. दिल्ली शहर में स्थित किन्हीं दो गाँवों के नाम लिखिए–

....., ...

2. दिल्ली शहर में स्थित गाँवों में होने वाली आजीविका कार्यों की सूची बनाइए? इसमें आप अपने परिवार के सदस्यों की भी मदद ले सकते हैं।

....., ...

(ग) ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविकाएँ–

नीचे दिये बाक्सों में ग्रामीण क्षेत्रों में किये जाने वाले कार्यों को लिखें– संभव हो तो चित्र भी चिपकाएँ।

किसान

राजमिस्त्री

बुनकर

पशुपालक

भारत में पाँच हजार से ज्यादा शहर है और सत्ताईस महानगर है जैसे चेन्नई, मुम्बई, दिल्ली, कोलकाता, बंगलौर, हैदराबाद, अहमदाबाद, कानपुर आदि कई बड़े शहर हैं। उनमें प्रत्येक में 20 लाख से भी ज्यादा लोग रहते हैं। कहते हैं "शहर कभी सोता नहीं है।" अर्थात शहर में जीवन कभी रूकता नहीं है। ग्रामीण जीवन से इतर शहरी जीवन में भागदौड़ लगी रहती है। लोग शहरों में अपनी आजीविका चलाने के लिए विभिन्न काम करते हैं। आइये इस अध्याय में हम देखेगें कि शहरी क्षेत्रों में आजीविकाओं के कौन–कौन से साधन है। अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से हम इन आजीविकाओं को कार्य शैली के आधार पर विभाजित करेंगे।

सड़क पर दुकान लगाते लोग

काम के तलाश में लोग

सड़कों पर काम करना:

शहरी जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग सड़कों पर कार्य करके अपनी आजीविका कमाता है। कुछ लोग सड़कों पर साफ–सफाई करते हैं। तो कुछ सड़कों पर परिवहन का कार्य करते हैं जैसे बस, ट्रक, टैक्सी, ऑटोरिक्शा, टैम्पों, ठेलागाड़ी, रिक्शा आदि चलाना। इनके द्वारा सामान एवं यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है। इनके साथ–साथ सड़क के किनारे पटरी पर सब्जी, फल, फूल बेचना, नाई, मोची आदि का कार्य भी किया जाता है। इन्हीं फुटपाथों पर अस्थाई दुकानें बनाकर साप्ताहिक बाजार भी लगते हैं। जहां ये दुकानदार दैनिक जरूरत का सामान बेचकर अपनी आजीविका चलाते हैं। सड़क के किनारे ही खाना या नाश्ता बेचने वाले ठेले भी आपको दिखाई देंगे। इन्हीं फुटपाथों पर अखबार, पत्रिका बेचने वाले तथा लेबर चौक पर दिहाड़ी मजदूर भी मिलते हैं। इस तरह ढेर सारे लोगों का सड़कों से रोजगार जुड़ा होने के कारण शहर की सड़कों पर भीड़ रहती है जिससे पैदल यात्रियों को आवागमन में परेशानी होती है तथा परिवहन में बाधा आती है। इस कारण कभी–कभी पुलिस वाले इन रेहड़ी–पटरी वालों को फुटपाथ से हटा देते हैं। बरसात आदि के कारण भी ये अपना काम रोज नहीं कर पाते। जिससे इनकी आजीविका में बाधा उत्पन्न होती है।

उपरोक्त कार्य को करने वाले अधिकांश लोग ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन करके यहां आते हैं। इनकी कमाई का अधिकांश भाग इनके रहने तथा खाने–पीने पर ही खर्च हो जाता है। इस कारण अपना बहुत कम पैसा गांवों में भेज पाते हैं जहाँ इनका परिवार रहता है।

शापिंग मॉल का दृश्य

सिलाई करती महिला श्रमिक

बाजारों से आजीविका:

शहरों में नियमित बाजार होते हैं। जहाँ बड़ी–बड़ी स्थाई दुकाने होती हैं जिनके द्वारा व्यापारी सामान बेचते हैं साथ ही साथ डाक्टर, इलेक्ट्रीशियन, वकील, प्रोपर्टी डीलर आदि अपनी सेवाऐं बेचते हैं। इन्हीं बाजारों में कुछ लोग दुकानों पर मजदूरी करके अपनी आजीविका चलाते हैं। परन्तु ये लोग अस्थाई मजदूर होते हैं। कुछ बाजार साप्ताहिक भी होते हैं तो कुछ दुकाने बहुत बड़ी (शौ रूम) होती है। आजकल शहरों में मॉल भी खुल गए हैं। जहाँ एक ही जगह पर विभिन्न सामान मिल जाते हैं।

कारखानों से आजीविका:

शहरी क्षेत्रों में छोटे तथा बड़े दोनों तरह के कारखानें होते हैं छोटी फैक्ट्रीयों में कम संख्या में मजदूर होते हैं तो बड़ी फैक्ट्रीयों मे मजदूरों की संख्या बहुत ज्यादा होती है। इन कारखानों से विभिन्न प्रकार के सामानों का उत्पादन होता है। इन कारखानों में एक बड़ी संख्या अस्थाई मजदूरों की होती है। जिन्हें काम अधिक होने पर बुला लिया जाता है परन्तु काम कम होते ही निकाल दिया जाता है। जिससे इनकी आजीविका पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इन अस्थाई मजदूरों को वेतन भी कम दिया जाता है साथ ही अन्य सुविधायें जैस भविष्य (बुढ़ापे) के लिए बचत, छुट्टियां, परिवार को चिकित्सा सुविधा आदि भी नहीं दी जाती है।

दफ्तरों एवं स्कूलों से आजीविका:

शहरी क्षेत्रों में बहुत सारे सरकारी एवं प्राइवेट दफ्तर (ऑफिस) तथा स्कूल होते हैं। स्कूलों में अध्यापक, चपरासी आदि पद आजीविका के साधन होते हैं ऑफिस वे स्थान है जहाँ से विभिन्न कार्यो तथा संस्थाओं का संचालन होता है। इनमें विभिन्न कार्यो जैसे चपरासी, क्लर्क, बाबू, एकाउटेंट इत्यादि पदों के लिये लोगों को वेतन पर रखा जाता है जिससे इन लोगों की आजीविका चलती है। भारत के शहरों में कॉल सेन्टर जैसी सेवाऐं देने वाला व्यापार भी तेजी से फल फूल रहा है।

एक ऑफिस का दृश्य

इस प्रकार हम देखते हैं कि शहरी क्षेत्रों में रोजगार के साधन ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षाकृत ज्यादा है। परन्तु यहां भी आजीविकाऐं कमाने में विभिन्न समस्याऐं हैं।

आओ समझें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
   - क. पटरी पर सामान बेचने वाले लोगो की दुकान ——— होती है। (स्थायी / अस्थायी)
   - ख. कारखानों के अनियमित मजदूर ———— काम पर बुलाये जाते हैं। (जरूरत पड़ने पर / वर्ष के सारे दिनों में)
   - ग. डाक्टर तथा इलेक्ट्रीशियन लोगों को ———— बेचते हैं। (अपनी सेवाऐं / अपना सामान)
2. सही / गलत बताइये –
   - क. अस्थायी मजदूरों के परिवारों को चिकित्सा सुविधा दी जाती है। (सही / गलत)
   - ख. साप्ताहिक बाजारों की दुकानें स्थायी होती है। (सही / गलत)
   - ग. स्थायी कर्मचारियों को वर्ष के सभी दिनों का पारिश्रमिक प्राप्त होता है। (सही / गलत)
   - घ. पटरी (फुटपाथ) पर दुकाने लगाने से लोगों के परिवहन में बाधा उत्पन्न होती है। (सही / गलत)
   - ङ. गांवों से आकर शहरों में बसे दिहाड़ी मजदूर अपनी कमाई का अधिकांश पैसा गांवों में अपने परिवार को भेज देते हैं। (सही / गलत)
3. ग्रामीण और शहरी आजीविकाओं में अन्तर बताइए। कोई एक आजीविका का चित्र भी बनाइए।

कार्यपत्रक:

सामूहिक क्रियाकलाप: शिक्षक कक्षा को। समूहों में विभाजित करें और निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करवाएं–

– आपके अभिभावक / पिता / माता / भाई / बहन आजीविका कमाने हेतु क्या–क्या कार्य करते हैं?

– आजीविका कमाने में आने वाली बाधाओं पर चर्चा करते समय उनके समाधानों पर चर्चा करें।

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक / शिक्षिका विगत पाठों में विद्यार्थी की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1	_____			
2	_____			
3	_____			
4	_____			
5	_____			
6	_____			
7	_____			
8	_____			
9	_____			
10	_____			

कक्षा 6 सामाजिक विज्ञान सीखने के प्रतिफल

भूगोल

बच्चे

1. सौर मण्डल की अवधारणा एवं तारे, ग्रह तथा उपग्रह में अंतर को समझते हैं।
2. जैव मंडल के विशेष संदर्भ में एक अद्वितीय खगोलीय पिंड के रूप में पृथ्वी को पहचानते हैं।
3 परिक्रमण तथा परिभ्रमण के परिणामस्वरूप दिन और रात का होना तथा ऋतुओं में परिवर्तन होने ककी अवधारणा विकसित करते हैं।
4. मानचित्र का प्रयोग, मानचित्र के विभिन्न तत्व प्रतीक चिह्न, दिशा तथा स्थानों की मानचित्र पर स्थिति को समझने की योग्यता विकसित करते हैं।
5. अक्षांश एवं देशांतर की पहचान तथा उनके आधार पर स्थान एवं समय का ज्ञान करते हैं।
6. विभिन्न प्रकार की स्थलाकृतियों जैसे पर्वत, पठार एवं मैदान के निर्माण की प्रक्रिया को समझते हैं एवं उन्हें मानचित्र में दर्शाते ह।

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन

बच्चे

1. समाज में विविधता के महत्व की समझ विकसित करते हैं। चर्चा करते है कि भेदभाव पूर्ण अनुभव हमारे समाज में कैसे पनपते हैं।
2. विविधता के बावजूद कैसे राष्ट्रीय एकता या राष्ट्र में एकता कायम है' की समझ विकसित करते हैं।
3 समानता के अवसरों की अवधारणा को समझना तथा दैनिक जीवन से सम्बन्धित उदाहरणों को बताते हैं।
4. विभिन्न प्रकार की सरकारों, उनकी कार्य–प्रणाली को अवगत कराते हैं और एक दूसरे के पूरक के रूप में कैसे काम करते हैं, समझते हैं।
5. अपने परिवार, समाज और राज्य के संदर्भ में लोकतंत्र के अर्थ को जानते हैं।।
6. अपने समाज में मौजूद विभिन्न रूपों के व्यवसायों का वर्णन व अवलोकन करते हैं। गांवों तथा शहरों में मौजूद विभिन्न व्यवसायों में अतंर करते हैं।

इतिहास

बच्चे

1. हमें अपने अतीत के बारे में अध्ययन करने की आवश्यकता को बताते हैं और वर्तमान जीवन में उनके प्रभव को भी बताते हैं।
2. अतीत को जानने के विभिन्न स्रोतों की समझ विकसित करते हैं। विभिन्नन प्रकार के स्रोतों (जैसे पुरातात्विक, साहित्यक और अन्य) को पहचानते है और किसी काल के इतिहास को समझने में इनकी उपयोगिता को भी पहचानते हैं।
3 आग की खोज, अनाज की खेती, औजार, पहिया और मिट्टी के बर्तन जैसे महत्वपूर्ण विकास का मानव जीवन पर प्रभाव को समझते हैं।
4. मानव की घुमंतु और खाद्य संग्राहक से स्थायी कृषक बनने की यात्रा की व्याख्या करते हैं।
5. हड़प्पा सभ्यता से प्रारम्भ करते हुए नगरीय सभ्यताओं की विशिष्टताओं की व्याख्या करते हैं। हड़प्पा सभ्यता व आज के नगरों की समानान्तर तुलना करते हैं।।
6. प्राचीन गणराज्यों से लेकर नए शक्तिशाली राज्यों जैसे उत्तर में मौर्य व गुप्त और दक्षिण में पल्लव और चोलो के उदय की प्रक्रिया व संदर्भ को समझते हैं
7. कस्बों और गांव में रहने वाले आम लोगों जैसे शिकारी, किसान, व्यापारी, कारीगर, तीर्थयात्री और संतों के जीवन और उनकी गतिविधियों से पचित होते हैं। सराहना करते है कि इतिहास केवल राजनीतिक घटनाओं के बारे में ही नहीं, समाज में होने वाले सभी घटनाओं से सम्बन्धित है।
8. विचारों, प्रश्नों और धर्मों के उदय के संदर्भ को समझते हैं और इनसे संबंधित विचारों और मूल्यों का विश्लेषण करते हैं।
9. भारत के रेखा मानचित्र पर हड़प्पा सभ्यता के नगरों और अन्य नगरों एवं साम्राज्यों को दर्शाते हैं।

कक्षा 7 सामाजिक विज्ञान सीखने के प्रतिफल

भूगोल

बच्चे

1. पृथ्वी की आंतरिक परतों की संरचना को पहचानते हैं। विभिन्न प्रकार की चट्टानों तथा खनिजों की संरचना एवं उनके उपयोग को जानते हैं।
2. विभिन्न जलवायु प्रदेशों के वितरण एवं विस्तार को समझते हैं और विश्व मानचित्र पर उनको दर्शाते/अंकित करते हैं।
3. विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूकम्प, बाढ़ और सूखे की परिघटनाओं के कारणों को जानते हैं।
4. पर्यावरण के विभिन्न घटकों और उनके उन्तर संबंधों को समझते हैं।
5. अपने चारों ओर प्रदूषण फैलाने वाले कारकों के प्रति जागरूकता विकसित करना एवं उनको रोकने के उपायों की चर्चा करते हैं।
6. आपदा एवं विपदा के कारकों को जानते हैं।
7. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता के लिए संवेदनशील होते हैं।
8. विभिन्न जलवायु प्रदेशों और उनमें मानव जीवन के मध्य अन्तरसंबंधों को समझते हैं।
9. विशिष्ट प्रदेशों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करते हैं।

सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन

बच्चे

1. समानता से संबंधित मुद्दों को समझते हैं और उदाहरणों के साथ असमानता के अस्तित्व की जांच करते हैं।
2. संस्थाओं और प्रक्रियाओं के बारे में प्रचलित विचारों की जाँच करती है।।
3. स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी बुनियादी सेवाएं प्रदान करने में सरकार की भूमिका को जानते हैं।
4. संसदीय और राज्यों के चुनावों की प्रक्रिया और तंत्र के बीच अन्तर को जानते हैं।
5. विधानसभा और संसदीय विचिन क्षेत्रों में अन्तर करते हैं।
6. उपयुक्त उदाहरणों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान की प्रशंसा करते हैं।
7. घरेलू कार्यों के महत्व को जानते हैं।
8. विभिन्न प्रकार के विज्ञापन और संचार के माध्यमों की पहचान और प्रभाव को जानते हैं।
9. सरकार की आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित करने की आवश्यकता को जानते हैं।
10. उत्पादन से वितरण को उदाहरणों से समझ सकते हैं।

इतिहास

बच्चे

1. किसी अवधि के इतिहास के परीक्षण में पांडुलिपियाँ, अभिलेख एवं पुरातात्विक प्रमाण के अतिरिक्त लिखित दस्तावेजों के बढ़ते हुए महत्व की सराहना करते हैं।
2. 7वीं से 12वीं और 12वीं से 16वीं सदी तक उत्तर और दक्षिण भारत में महत्वपूर्ण विकास/परिवर्तन की पहचान करते हैं एवं उनकी समानताओं और असमानताओं की व्याख्या करते है।
3. खलजी, तुगलक और मुगल शासकों के अधीन प्रशासनिक, आर्थिक और सैन्य सुधार की महत्वपूर्ण विशेषताओं और जटिलताओं की व्याख्या करते हैं।
4. अकबर की अनोखी धार्मिक नीति और भूराजस्व नीति में सामाजिक, आर्थिक सन्दर्भ की व्याख्या करते हैं।
5. नगरों के विकास की पृष्ठभूमि प्रशासनिक, धार्मिक और व्यापारिक केन्द्र के रूप में समझते हैं। नगरों में नई कला, शिल्प उत्पादन और शहरी संस्कृति को फूलने–फलने के बारे में खोज करते हैं।
6. विभिन्न जनजातियों की विविध आजीविका एवं उनके आवास सीन के बीच सम्बन्ध स्थापित करते हैं। वर्ण आधारित समाज एवं जनजाति लोगों के मध्य अन्तर्सम्बंध कैसे दोनों समाजों में समायोजन एवं परिवर्तन लाते हैं, उसे समझते हैं।
7. नए धार्मिक विचार और आंदोलन (भक्ति, सूफी) के उदय के कारकों को विश्लेषण करने में क्षमता विकसित करते हैं।
8. भक्ति और सूफी संतो के कविताओं के सन्दर्भ से वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के बारे में निष्कर्ष निकालते हैं। उन्होंने कर्मकांडों और अन्य धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था के पहलुओं को कैसे सरल, तर्कसंगत तर्कों के द्वारा चुनौती दी है, समझते हैं।
9. कविताओं, गीतों और अन्य साहित्य रचना में कैसे नए भाषा (क्षेत्रीय) उपयोग किए गए थे, उनकी खोज करते हैं।
10. 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के दौरान मुगल साम्राज्य के विभाजन और विघटन होने और जाट, मराठा, सिक्खों और राजपूत जैसे नए राजनीतिक समूहों के उत्थान के कारणों की समझ विकसति करते हैं।

ISBN 978-93-85943-34-8

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
वरूण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली–110024